



आँधै नै आँख्या



# आंध्र आख्या

अन्नाराम 'सुदामा'

धरती प्रकाशन

© १९७१, अनाराम 'सुदामा'

प्रकाशक धरती प्रकाशन उदयराममठ (बीकानेर)

मूल्य ८००

पृष्ठसंख्या १२२+१४=१३६

संस्करण १९७१

मुद्रक एजुकेशनल प्रेस, बीकानेर

---

AANDHE NE AANKHYAN—( Short Stories collection in  
Rajasthani ) by Anna Ram Sudama Price R' 80

घणै क्कोडरूँ

श्रद्धेय गुरुवर

गोवर्द्धन सिंह जो यादव नै

साहर



## थोड़ी म्हारी ही

पाँच कहाण्यां हे पोषी मे । गिणती री दिस्ती  
सूँ कम कई खाती कम है, गुणदोस री दिस्ती सूँ  
पाठक घर पारखी सोचती ।

पत्नी, ढळें डूंगर फळें चट्टान—ई म  
घाढम्बर घर भास्या री लढाई है, बा वीं लम्बी हुबें  
तो इत्ती अखरणी नहीं चाहीज । भादमी भरण भाप  
नै है जिक सूँ जादा दिखावण म लाग्योडो है—मूळ  
सूँ सिरकर, खाली स्टण्डड कायम राखण खातर ।  
घर में बूती माँ है जुगाईं टाबर सै, पण बें किया जीवै,  
वाँ री भाँता री काई माँग है—कुण सुण कुण देख  
बाँ खानी घाँघो हुयोडो भाजै वारै मोटो बणन  
खातर । बस, ई रै इद गिद गाय री सायरी ले र  
कथा री घणखरो प्रवाह है पण समस्या खाली गाय री  
को है नो—समस्या है भादमी रै विचारां री दासता  
री—बीर मानसिक भुकाव री घर है बीर प्राणा री



मत्र माँग रही। जीत है, हूँगर मैं ऊँच घाटम्बर की  
 नों—चट्टान भी घास्या रही। कोई आपर मिथ्या मह  
 म धार जे नही हूँ करै तो बीं पर फोट कारवाई  
 तो हूण सूँ रही। धा तो माँवनी माँग है ार पर भापे  
 ही भक्तिन हूँ जयामी, चाव कोई कितो ही लुबाव।

दूजी फेट मे आयोडो—एक होणहार टाबर  
 है—गुरू गुरू म बडो ईमानगार। भीवरसीयर की  
 नौकरी सागम्या। फेर किया ही चौरा की फूँ म  
 भायम्यो। बां बीर मूँद की लोली लगा र छोटीकट  
 चेलो करलियो बीन। गुप्तो ही जाव, कुण जाणै  
 कठ जाँवनी ठैरसी ? पण बीं न बिस्वास है क पइसो  
 दिया लिया स चल—ठोक वे ठीक नै कोई को देखनी  
 ब्यार—गिशा फुरणी चाहीज का समाज भर सता रो  
 हाँचो ? फेँ मे आयोडो धा बाता खानी कीं सकेत  
 कर कीं पोच खोन, पाठकीं र दाय आसी तो।

तीजी, रोग रो निदान—भादमी दिगूण सूँ  
 ले र सिझ्या ताईं दफनर आव जाव। काईं चपरासी  
 भर काईं बफमर, सिझ्या की न कीं घर मे ले र बडै।  
 तिसुखा तीन सो खरच कर पाँच सो पण घर म न  
 बाप पूछ न बीनणी क भ्रँ दोषमी और कठ सूँ भाव ?  
 ब आली चावै क दोषसी रो जाग्या भो दो हार और  
 कर तो ठोक हूँ पण जिके रो माँ भर लुगाईं जागता

घर जीवता हूँ वैं पृथ्वी के अँ रोगला दाणा सा र  
 म्हारो पेट किया पाळीजै है, को चाहीजै म्होनेँ पारो  
 ओ आहम्बर । तो जरूर कमाऊ रैं कीँ समझ आव  
 ही—घर ओ रोगी को बरौनी—इसी सी चर्चाइ कडाणी  
 म है ।

बोधो बोध—सू पीड घर पाग म बघ्याडे एन  
 परिवार री स्थिति सूँ समूचेँ राष्ट्र री वतमान स्थिति  
 रा बोध हूँ, पण ध्यान कीनेँ ? क्या री प्रमुख पात्र  
 जाणूँ भापण नारा चुणाव, भूखटडतान मिवा की  
 जाणता ही नहीं हूँ घर आँसू गस, गोळी, लाठा चाज  
 पार्टी बाजी भ्रष्टाचार अ जाणूँ अवार रैं नासनतत्र रा  
 स्थायी अग वणग्या हूँ । देग री काकू कोइ दाबै तो  
 दाबा—काश्मीर मे हूँ चाबै कच्छ मे—पचायती  
 करावो मुल्क म घर देखो बैठा बैठा । एक बिता है  
 खाली कुरसी री का आपरी प्रस्टीज री । वैं रैणा  
 चाहीजै दग नै चूलै म नाँव र ही । अ सै बाता जे  
 बोध मे आछी तरै सूँ ऊमरी हूँ तो बाध ठीक ही  
 है नहीं जद दुप्रयास ही समझो ।

अतिम आँधँ न आख्या—जिकँ पर ई पोथी  
 री नाम करण है एक प्रतीकात्मक कडाणी है । म्हारो  
 दाबा तो नही पण म्हारै खाल सूँ राजस्थानी म आ  
 आपरै जातरी एक नूँई रचना हूणी चाहीज साधारण

सूँ असाधारण खानी । आरुही अर अरुनी री बात हूँ  
को कहूँनी ।

आरुह्या ? आरुह्यै पूँजीवाद न अर बाँन जिवा  
अपण आपन हीण अर हठा समझर आरुह्या भीचे  
पड्या दिन तोँ । बभय विलास अर अटणरो ठको  
खानी एक ही बग र पाँती आया हुव, आ अठ ही का  
है नी । दूसरा ही जीणा आव पण की डग सर ।  
आवण री चेतना तोँ है बाँ भ पण है जिण्डघोडी वा  
उचित मारग दरसण माँग वाई बीन सगठिन कर तोँ  
म की हुव । खीप सो जागहक नेतृत्न, गरीब गठिय  
अर नाहै निमळ चिनीखतिय जिना न ता नूँई गनि  
मति देव है ही धोर स आंध अह न भी नूँई दिसा  
खानी उँमुख कर साचरो धीन अनुभव कराव । निम्न  
बग म जद बाँरी हीण भावना स्वतम हुव तोँ ब जाप  
बडोडा सांग वाध सूँ काँघो मिला र चाल अर गौरव  
अनुभव कर । इ र उपरांत हा जे कीन ही बीमे कठ ही  
आरुह्य री वास आव तोँ नाख्या री विकार ही समझणे  
चाहीज ।

ई र अनाना आ कहाण्या र बार्तानाप म ज  
केई आरुह्या नाटकीयता अर का अपण जायग्या हुव तोँ  
अस्वाभाविक नही । उपमा अर उत्प्रेक्षावा सूँ कठ कठ  
ही स्थळ भारी हुग्या हुव तोँ आ म्हारी अनावश्यक

आसक्ति समझे अरु बा ठीक नही है तो नही ही हूणी  
 चाहीजै । आ सगळी मे म्हार पाणी भाडो पाळ बाघो  
 है ई खातर क म्हारी चित्तन पोखरी रो छिछळापण  
 कठे ही चौडे नही आवै, पण जितो ही में बीने लुगोवण  
 री चेष्टा करी है बित्तो ही बो जादा ऊभरसी—ओ ही  
 नेम है । म्हारै कथाकार इया लिख्यो है अरु बिया  
 लिख्यो है अरु स कूडा डफाण है साच बा ही है जिकी  
 पारखी अरु अधिकारी विद्वान सोचसी समझसी ।

राजस्थानी में कहाणी साहित्य रो कमी है । है  
 जिका अमरपुरा पुराणा खुरचण खा र जीवै इसो । बीने  
 अलग अलग आदम्या 'यारा यारा गाभा पैरा'र आप  
 आपर ढग सूँ सजावण री सस्ती च्छटा करी है मूळ  
 म कोइ अतर को आयोनी । क्या सकलन अरु  
 सम्पादन भूमिका म दो शब्द अरु बी म ही दो दो  
 पानी घाल, क्या साहित्य रो खापो भलो उपकार  
 कियो है पण अरु आसार की सीमा ताई ही ठीक  
 हूय । वतमान भी ता कठ न कठ मोटो महीन चित्रित  
 हूणो चाहीज । बीरी पूति अतीन सूँ घोडी हो हूसी अरु  
 न बीरी पूति आ पायो ही अरु इना न म्हारा मतो  
 अरु न म्हारी महत्वाकांक्षा ही । आ ता हूवण री चेष्टा  
 म की हुई है ता ठीक है नही तो सच्चेष्टा म होम  
 करता हाथ ही बळघा सही—अधुम नही पाछा ही है ।

छेकड म लिसण री ममता मे जे षठ ही मै  
 भीमा रो अतिक्रमण कर दियो हव पर बीं नू कीने  
 ही जे जाण अजाण म ठेस पूनै तो क्षमा याचना रै  
 सिवा और बर्दि करु पर मा हू मान रै चारू कै  
 बा मन मिलसी । बिधा स चीज प्रभु री है वो मापरी  
 अभि यक्ति कीही सू करवावै चावै कुँजर मू पण  
 अहित कीरो ही वो चायनी ।

सुदयारामसर  
 ( बीकानेर )

—अनाराम सुदामा

## क्रम

ढळें डूगर फळें चट्टा		१
फेट मे आयोडो	—	३६
रोग रो निदान	—	५६
बोध	—	७७
आर्धं नें आर्ह्या		१००



## ढळें डूंगर • फळें चट्टान



**जाय** र वपन प्लेट में कंधो राख जगदीग पैला कमरें  
 भाग खडी साइकल न एक सील बटक स्पूँ सावळ पूँछी, ठीक इया  
 ही जिया कोई चतर नायण पीठी लागी कीं बनडी रै खोल न आपरी  
 मुलायम ह्पाळी मू मसळ मसळ बीं रो रग निखारती हुव, फेर एक  
 उदती सी निजर बी पर नाखी, ' धिक है, अबार तो महीनो खण्ड '  
 सोच र पाछी ही स्टण्ड पर खडी कर दी । अबं भाख्या मेज पर पडी  
 फयरल्यूबारे बिलवतै चर खानी गई सात में दस बाकी हा ।  
 ' ओ ' दस मिण्ट मे भटवेसा पालिंग तो करलूँ पला, ओजूँ तीन  
 पण्टा पडघा है दपनर पूगण मे ।' भट एक बोदो सो ब्रूश जिकै रा  
 घणखरा रूँ पाणीभर मूँ उठये रोगी रा सा भडग्या हा, पालिंग री  
 हवी ऊपर मूँ गोरी मांय मूँ काळी भलै घर री दुश्चरित्र लुगाई र  
 काळजै सो, कीम री भांडियो तस्कर बीपारी री वेइमानी सो, बो  
 जूनां री जोडी ले'र बठग्यो चोराव रै चमार सो । रगड रगड बांनै  
 इसा धमकाया क धाव मूँढो देखलो बां मे । दोना न बराबर राख  
 बड गौर मूँ देख्या बांन, जिया कोई मोलारो दूवान म पडी मन



पस इ री जोटी निरसतो हव । चमक म एक घोडा उगणीम लाग्गो  
 बी पर क्रीम रा च्यार टोपा घोर भाँव्या बटकी भान र कगड हाया  
 सू दो लसरका भळे दिया रावणियो पैलं खन ही पाछो, फेर देव्या  
 सावळ ही घबक रांग पर घाया चमचमाट कर, नुँवा ही भममारै  
 एकर सो घाँ आग । घात्ममत्तोप री एक लर उठी इमो जाणू  
 अपोलो घाठ बणावणिये बचानिक र मन म ही नहीं उठी हव ।  
 एक गोगव नाच्या महीन व्यक्तित्व रै माट घर पर टीक इयाँ ही जियाँ  
 सपन म किगकोग सूँ कुइती जीत्य कीँ सोकिय पलवान रै घर पर  
 नाच ।

नेव करणी बाकी है हण करतू । छोटी सी एक पटी  
 खोनी बिचली रासर ट्राजिस्टर साइज री । पोण्डम क्रीम रो एक  
 घोळा भाँडियो सेफटी रेजर, मकती सावण री डच्ची चमकतो छोटी  
 कतिया, ना ही सी नख चूँटणी एक प्रिस पात्या रो पकेट, काच  
 कागसियो अर डिटोल री एक जोटी सी शीशी बी म । की मन चली  
 सुरैया रो सिंगार पटी सी बा पेटी वही चूँप सूँ सजायोडी ही । याद  
 आयो बीन मर घरार तो गाणा घाया कर है नी — सीलोन रे  
 बीपार विभाग सूँ भट रात सूँ अमूरपोड ट्राजिस्टर रो मुँडा खोल  
 दियो—मघरो मघरो सुर कमर र आकाग म गूजण लाग्गो ।  
 जिया ही वाना म सुर पड्या पायल साग मन थिरकयो घर वण  
 सामन टय काच न एकर दया देख्यो जिया कोई गट फन हियो

हुं । साबन सागोड़ा घुग, दगैरी घाम रो मुठानी मी पनळी टोटी पर फरण सागो वा । परसै परसै पूरण सातर मूँदा बारी मूँ बारें कादपो बीनें खोती रें पगापिये पर बटी खोरी दग इग्यारें बरग रो छोरी दीमी । 'झठे क्या बँटी है गरमा रगून जावण नै मोटो बो हुमीनी ?' बण पूछपो । बा बो बोनाती । इतें म बरग पांच छर रो बीरो छोरो हरियो दीसा बापो बापू मोव (रोयें) था तो ।

'बघों रे ।'

या (टा) नी ।"

जगतीग हाथ म घुग समत ही बारें निबळपो । गन गयो, बसबमीज ही । माल भानुदा मूँ भाना घर भास्या ना हा सीपटी रें पाटा सा भरी पाणा मूँ । जिपां ही बण तिर पर हाथ राख्यो सीपट्यां वह चाली । पूछपो क्या बटी राबै क्या सातर ? थोडो पीच्या पीलो पदियो<sup>१</sup> पीम ज्यूँ पीम पडी । रोणो घोर तेज हुग्या । जिपां जिपा वा हू हू रो बोवरी बिमां जिपा जगतीग चुचकार बोवरया । 'गेली, तूँ तो पदण म बडी हुस्यार है, स्याली घेटी कन्ई इया रोया कर है ? कोई फीम फास सातर भा तो कीं को कैयानी ? मायो हिना र बण बनाया 'नही । बस बसबमीज एकाही पण बोल नही । 'पडगी कठ मूँ ही ? नत हिना'र ममभाया नही ।

१ छोटी गळना काकडियो

तो बसा तो सरी गूँगी बसायाँ बिना काँई टा लागै ?”

बसवा लेवती लवती बोली या घ घ रि यो ।

जगदीश विचाळै ही बोल्थो “काँई पारियो पूराया ?”

“हाँ”

‘जिक खातर इती रोव बळनद फूटायो, तो पूरायो किसो घी रो घडो हो ? ठीकरो हा तो हो भळ लास्या कोई दस बीस पइसा म । घारी माँ न हूँ क देस्यूँ की को नवनो तन बस पर तो ठीक है ?”

इती समभाई पण छोरी बसबसोजती को मिटी नी कीँ मोळी जरूर पडगी । बी र मनरी एही म अपमान री कोई पाँस चुम्बोडी ही ऊडी । वो कीँ शर भळ बोल्थो, ‘छा, ही पारिय म ?’

नही ।’

तो ?’

लावण गई ही ।’

‘केर ? सेडाणी को पालीनी ?’

हाँ”

नही पाली तो नही सरी कोई जोर घोडो ही है पार नही जच तो अब भळ कदेई जाए मत ।’

छोरी रो बसबसोजणो अब बाद टुग्यो खाली मिण्ट भाघ मिण्ट सूँ ाकर सुबकी ले र बी न पाछी चितार लेवती । लाग ही

फाम ओजू पुरी नीकळी को ही नी । जगतीश पाछो ही मळे पूछण लागयो जिघा ट्रेनिंग रो मास्टर टावर सूँ उत्तर बढावतो हुवै ।

‘ सरला ! ’

‘ हा

‘ सेठायी की कयो तनै ? ’

‘ हाँ ’

काँई ? ’

‘ छाती बाळन न रोज ठीकरो ले’र आ ऊभै, हुवै अठै मण दो मण, घरआळ्या न पूरसी तो ही घणी है, उत्तर दवती देवती हूँ थकगी, पण फीटी इमो को देखीनी में, ऊतड अठै सूँ । ’

‘ फेर ? ’

‘ हूँ खडी रही काँई ताळ । ’

कयो ? ’

‘ दादी कयो बेटा नारळी दो नारळी तो नाए ही काळत्रो भभका मारै । ’

‘ तनै रोजीनै सेठायी इया ही कव ? ’

‘ कद कदे ही ग्हार खनै सूँ काम करवा लेवै जद तो कम ही कवै— जा, पैलौ ग्हारे दो तीन घरां म छाछ द र आ—हूँ दे भाऊँ फेर मन ही घातद अघ सेर तीन पाव । आज बा वूँकी को ही नी, चीरै बटै री बहू ही ।

फर ?'

'सेठायी र पोत पक्की लियो मन, नीकळ म्हार घर सू, अक आई ता बूद लो रांड न—पारियो फूग्यो—दिल्ल र साग ही ।

'किताक बडो ३ बो छोरो ?'

'पांचवीं म पन् भूग्यो है घरे जाऊँ जद घणी थार कोभी कोभी गाळ काढ र दौड ज्याव का अगूठो दिता'र क मो लै ।

माँ बाप बीरा की को बोवनी ?

'नही'

जगदीश र माणस पर विपाद ही अणचाही लीका म्बोची जगी बाँ पर जिया जिया सोचतो ब मोर गरी हू काळज में बठती काच री किर किर सी ।

अब तन भेज तो भळ जाती ?' को बोलीनी बा बीरा होठ एकर दुविधा म झग्या ।

'तूँ ज्ञायो चाव का नही ?'

'न ही' क र दो सकिण बा हकी पण जाणूँ फर बी र जागत तन बीनै आयह कियो हुबै बोलण सातर बा बोनी, पण दादी र काळज मभको ऊपड है नी रोटी ही का भावनी बी न छाद्य र मुक्क बिना, जद ?'

'ओ तन थारी दापी री इती चिन्ता है । थारी आपरी माँ री नही जित्ती म्हारी माँ री है । बस बीन एकर वाया म

भरली । 'म्हारी माँ की चिन्ता तू रख अपमान का दात सैवती, मैं  
 फालतू ही भार भारी घरती नै बी की आख्या सजळ हूगी एकर बण  
 बी न जी भर दखी, इसी फूठरी का बीन पैला कदेई की लागीनी ।  
 पतळा होठ गवर रो सो तीखो नाक, हिरणकी की सी भोळी आख्या  
 चैरै पर नाचती निश्चल राग, शरीर म की मुर्दी पण जाणू सरलता  
 सदेह बीर शरीर म बासो ले राख्यो हुवै । आसगळा मूँ ऊँचो बी  
 म राग रो एक इसा अटूट तांतण बीनै लाग्यो जिकै मूँ बीरा जाणूँ  
 प्राण बेधग्या हुव । बीँ की सरळता न समझ बी की (जगदीश की)  
 चेतना म एक आवाज उठी — 'भरे, जिया तेज तीखा अर निर्दे काँटा  
 नाही भोळी भीग की रेगम सी कँवळी पाँल नै चीर दे बिया ही इ  
 सरला रो कँवळो किशोर माणस अणसहीजत अपमान सू चीरीजग्यो  
 हुसी, आज काँइ कित्ता दिन हुया हुसी इ नै विप की घूँट पीवता, इ  
 र स्वाभिमान का ऊगता रूँटा अभाव अर अणसोच्यै अपमान र  
 पाछा मूँ रोज चरीजै अर है मोऊँ भाँग गियोहो सा खेत की सी पर  
 पण इरो धीरज अर ई की घरती रो अणजाऊ पण तो देख । एकर  
 निजर भर भळ दखी बीनै गद्गद् हुग्यो बो । फर बोत्यो अच्छा  
 जा बटी अचै है छाछ र पाणी सातर धारी अणमाल आभा काळी  
 का पडन दूँनी । भळो कदेई मत जाए मँटाणी रै द्वारै छाछ साबण ।  
 दादो सातर पाव छोड़ पाव छाँटो जमा देस्मा राजीन पर ता ठीक  
 है नी ? जा ।

वा उठ र चालण लागी, जगदीश पूछयो 'स्कूल रो काम  
कर लियो आज रो ?'

'काल ही कर लियो, स्कूल सूँ आवता ही ।'

'शाबास, बन्दी हुस्यार है तूँ जा त्यार हूँ स्कूल खातर ।'

'आज तो अदीनवार है बापू ।'

'ओ हूँ ता भूल हीग्यो ।'

उठ र बो कमर म आयग्यो । ठोडी र लगायोडी सावण  
सूकगी ही जिया पोतावणी रो बटको फेरथोडो चूँहो सूकतो हुक ।  
वारी खन बठा बठो विचाराम उलभग्यो । अबोध छोरी र काळज  
मे अपमान रा दाँत किता दौरा बठा हुमी वारो जर बीरी आखी  
चेतना म एक अणभावतो दद पैदा कर बीन भक्भोर नाँखी हुसी  
जियाँ भयकर आँधी बोरियाँ सूँ लड लूम की बोरटी रो नाहीं  
डाळी न । बीर बघत भोळँ अहम्' रो बँघतो लाहू माय रो माय  
खिण्ड र बिखरग्यो हुसी जिया बिरत्वा यम पद्य घोर पर रमतै टाबराँ  
र हाथा सूँ बण्या घूड रा पीण्डिया आँगळी र थोडै सँ टिल्लै सूँ  
फीसता हुक, पण कीँ साव तिसी, भूसी अर बूढी जाळ रो जडा सूँ  
जुडयो ममता रो एक नाँहो सो निभर बीर अतराळ रो हूँगरी  
सूँ टपक बो करै बो बीनेँ रसहीण कर सूँकरण को दनी । खिण्डत लाहू  
न बीर धीरज रा ईना हाथ आए दिन नुँव विश्वास मूँ साध  
बो करै । बीँ रो ध्यान वाजत ट्राजीस्टर खानी गयो बीन ब द

कर बणु घालमारी रै खणु में राख दिया । जलदी जलदी बण साबण रो द्रुग फेरयो जिया कोई खयावलो कारीगर बिण्डी पर सिधलै रो पद्यो फेरतो हवै । दाढी कर ली, एक दो जाग्या रगडक सूँ महीन महीन लाल टीक्या उभरगी ही जिया बिरखा सूँ ईल ताल म कोई कोई मामोलिया (बीर बपूटी) दीखता हवै । बणु थोडी डिटोल लगार्ई, फेर सफेम्कक क्रीम रो पाली पाली प्रागली इया फेरी जिया पाटधोडी 'ब्याऊ' पर कोई 'मल्लम' लगावतो हवै ।

कित्ती ही क्रीम घेघडो मला ही गाला रा खाडा तो को भरीजैनी" बोल रो पैलो शब्द जिया ही बी रै काना मे पछयो बणु आख्या ऊचो करी तो सामने कुसीं खने बीं रो बहू जानकी ऊमी दीसी । वो पाडो मुळकयो पण कूडो, खाली भेक मिटावण खातर । 'तो कई करा ? बणु कयो ।

'करो कई पट मे नाखा कीं । पीण्डचा नै पैण्ट पैराया तो बाँम चुस्ती आवण सूँ रही ।'

"तो ?'

'या तो आसी माँय की साच हूषी जद, हा बारतो फुठरापो जरूर दीखसी भर घाँत वो ही चाहीजे । ओडी छोनो मला हीं रोज, घारी है हूँ क्यों पालूँ ?

बगदीश बीर चरै खानी एकर इया जोयो जिया कोई वित्त मन्त्री ससद म जावण सूँ पैला बजट रै नक्शे में लगाय टैकसा



खानी गोर स्यू जोवतो हुव पण बी रै चर र नवश रा महीन घर  
 मिल्योडा अक बीर जळी सी समझ म को भायानी । वण कयो  
 'छेक तू चाध काई है, वा सुणाव नो ?

'जिका ट्रांजिस्टर री सुणन स्यू राजी व म्हारी क  
 सुणसी ?'

'कहसी तो सरी की ?

'कसी धान किसी ठा को है नी फालतू वानां म कोवा  
 लेवो । छोरी खही खही एा घण्टा ताई रोई—एकजिसी भास्या  
 सज सूज र टोटळीजगी बीरी, धान बीबरा सुणीज्या घोडा ही  
 हमी ? लूवो लाड खम्मा घणी ऊपर सू वुचकारों-न्यारो ही  
 बाप रो काळजो है नी छेकड निघळ तो सरी ।'

जगदीश बीर चर खानी एकर भळे देख्यो गोर स्यू ठीक  
 इया ही जियां कोई जिनामु त्रहासूत्र री टीका खानी देखनो हुव । बीन  
 बीरी भास्या घर लिलाड पर इच्छा भाजींग घर ओळभै री आपस  
 म रळीमळी नीका इया लागी जिया मोपम र मानचित्र म बिरला,  
 वायु अर तप्ती री लीका रो जाळ खीचीग्यो हुवै । बीर अर की  
 की समझ मे आवण लागी क बीजळी चमकी कठ अर पडी कठ ?

सुण्या हा बीरा बसका में पण करणो काई तू ही  
 बता ? सज भावस्यू बो बोल्यो ।

करणो बो ही जिको एक खर बाप न आपर टाबरां

खातर अर एक खरें बेटै नै आपरी गत्म देवाल मा र खातर करणो चाहीज ।”

‘अर एक भल मोटघार नै आपरी लुगाई खातर’ आ और कह, कमर नयो राख ?

“आ तो थार समभण री चीज है ये जे आ समभग्या हवो तो हूँ सोचूँ, थारी समभ री निजर गीध री दिम्टी सूँ जादा तेज है पण जिन्को गुर अर पीर की री ही को सुणनी वीन काई तो कैणो अर काई सुणतो ?’

“गक्ति स्तूँ देसी तो करण स्तूँ रयो ?’

‘देसी करवावै ही कृण अर करण री किसी रीत, पण हवै जिनी म तो गळ मत घालो ।’

‘किया ?’

“दुनियाँ भर री खबर खानी तो मूँडो अर घर खानी पूठ, आ किसँ घर री रीत ?’

‘वा तो भाइया भागै हरदम घूम ही बो कर ।’

‘अर घर ? देखी थारी भाइया कठ है वै ?’

‘तो भाँघा है ?’

‘भाइयां हनी तो, यका रेडियो, ट्राजिस्टर का लावतानी, भाइया ही जे हनी तो टेबल फन हो मीनिंग फन बाळण नै लगावना कुर्याँ पनी ही काम चताऊ धाराम कुर्मी रा पइया काई जुळना हा—किसी विसी बनाऊँ ?’

“जरत मुजब कीं तो करणो ही पड ?”

जरत तो रोव है बापडी कीरी ही आस्था म घर कीरी आता म । पागल ठाठ दो घोंगूठा धारी आस्था म घर दो आंगळी धारै काना म दे र ऊमो हँस—थान बो आछो लाग ।’

‘कीं तो डग रा लोग बाग आवै जावै स्टण्डड हुणो ही चाहीज, सफा पोत उघाड घोडा ही हुवां—सरूप सारु शोभा हुवैक नी कीं ?’

ना ना पोत उघाड मत हुयानी माँ बापडी नारळी छाड नै आस्था पाड बोकरै तो पाडो छोरी घर घर जा पारियो फोडा र कूवती आव तो आओ धारो पोत नही उघडनो चाहीजै । सेड स सुगल कील अघ कीलै बनस्पति खातर घण्टा घण्टा क्यू में खडा रह आज तो भीड बजा ही, हाथ को आयोनी, कवता भूँडो उतारे, माईत भरधा सा खाली हाथ आयो तो आयो धारो पोत नहीं उघ डनो चाहीजै । जूत पड पूछ कोटवाळी कठ ? स्टण्डड रो पडकोटो आग सू इतो ऊचो करो क बार सू धारो पोत नही दीख लार सू धारै लजब त स्टण्डड रा जाळी भरौला चाव साव उघाडा दीलो—घसक तो चाहीजै वा आग चाहीजै, लारै भला ही पून लागो । पोत तो पाणी मे तिर—घर धारो पोत रेत पर खडो है तो ही पोत पोत करता गळो सूक । शोभा लार मत्ता हुसो तो हुवो’ कहपरी दो मिष्ट एकर वा चुप हुगी पण ओजू बीर आक्रोश रो आफरो पूरो को भटघोनी पण अबक बीरी समभावण मे धीरज जादा सथावळ

कम, खडको थोडो मार जादा दीस्या । वा जीवणै हाथ री भगली  
 आगळी दिस्वा'र बोली 'की तो सोचो ये ही थारै तो, जूता री  
 वळथा पर क्रीम चढती अर अठ घर म हँसतै मुळवतै फूला नै  
 घावण ही हाथ को आवैनी । छोरा स्कूल म सी एम एस दान रै  
 दळिय खातर हाथ मांड अमरीकी पाठडर री चिमटी खातर साबी  
 लैणा म खडा हुवै अर ये स्टॅण्डड ऊंचो करण खातर सोफा सेट  
 मोलावो टेरानीण अर सारज रै भूट रो सीख साजो । हँ तो कँऊं  
 क थारै स्टॅण्डड री भीता इती भीडी करो क म्हा घर मायना रो जी  
 घुट र पिण्ड छूट घर म्हे अगलो रस्तो टैमसू दो दिन पला ही  
 नापला । स्टॅण्डड जी सी—मिनख मरसी मरण लो । थारी ममता पर  
 म्हारी बळि—म्हे राजी ।' होठा ब द आख्या छुली पण आर पार  
 जावण आळी आवाज भळे भूँजी होटा म स्टॅण्डड घाने इनो टक-  
 लेसी क घानै थ ही का दीखोनी, आ मँ को जाणीनी ।

जगदीश एकर बीनै देखी इया ही नहो समक री आख्या  
 भूँ, बीरी आख्या म ऊमडतो प्यार तो वण पैला कई दफे देख्यो पण  
 बी वळा की तो आपरी आख्या में खोट हो अर की प्यार म गँदळा  
 पण—की लोह थोटो की लोहार बा ऊपरी कूत जड ही—अभार  
 सी, आक्रोश री चिणखाँ उछळती को दखीनी वण कदेई । बाँ  
 चिणखला नीचै एक सोनै सो स्वाभिमान तप अर ऊपर बाँर कीर हो  
 आडम्बर रा कसटीडिया वळे आ वण कदेई को जाणीनी । वण होळै  
 स कैयो थारो कँणो ठीक है, पण की बस्त री माँग खानी भी

तो ' जगदीश रो बोल पूरो हृण सू पला ही बा बोली, ' बस्तु रो बंग सदा अविरल एवसो दग विना दूटथा विना सलपडचाँ पण बहु सख्यारा कुसकारी जीव बस्तु र प्रवाह म आपरा विकारबद चैरा देख आपरा विकार बस्तु पर डोळै ।

' मतळव ?'

' मतळव ब बहुधधी धीगडचोडा जीव ही बस्तु री बहु सख्यक निर्दोष मानवी चेतना न बिगाड । मारर विकारा नै ब सव साधारण री घरती पर क्षणिक तृति री स्वाद दे उगाव अर बानै नागा भुवा अर कगाल कर वारी कुचुळावा न अर जगाव । ई जुग र जीवा री आ विशेषता है ।

' किया ? ' जगदीश यकी सी जगान सू कयो ।

' थे की देखीनी विकार र वशीभूत अबार र लोगा न सिनेमा री लुगाई तो लुगाई लागी सिनेमा री मा माँ । घर री रोवती रीकती माँ दिगूग सू लगा र सोव जित पाट कर नकली नहीं असनी पण सलानी बेटो को पसीजनी रती भर ही । लुगाई घर म पग घर जल् सू ले र मर जित सिक बोकरै तिल तिल पण भटकीर मोटघार र उडार मन न अघ घडी हम र बात करण न टम की साधनी । सटका पर मेक अघ कियोडी होठ रग्योडी ठगारी पूनळया खानी राफा ढीली कर बाकी फाडतो रमी नित्सो डांगरो सेळी खानी देखनो हव ज्यु । बाता करसी जद सभ्यता अर समाज वाद री पण ऐडवास्टा रा डोळिया क्रीमा र पोत सू ऊजळा को

नीकळनी । चरै पर रग ताव मायली करामात । वस्तु बापडन  
क्यों कूडो वदनाम करो ।' कर एकर वा चुप हुगी ।

'बाता त कई काना री खिडकी खुनै जिती पण अवे आ  
तो बता के तू चाव कई है ?'

'हूँ चाऊँ के भाग एक गाय लेवा आछी सी ।'

जगदीग थोडो मुळवयो ओ अब समझयो आ इती लावी  
घोडी बाड किया छापीजी कायो कूटयो यपास कर दियो त बस  
पारै म्हारै अठ घावता मळ को खावैनी । ओ शटर है अठ तू कार  
राखण री बात तो कर सक, पण गाय री नही ।'

इमी कोई बान है, च्यार सी रिविया मिल थान घणै सू  
घणा सी सवा सी गाय पर लागैला ।'

गूंगी जिका घरे, दो दो जीपा खडी कर राखी है, कोठी बगला,  
बिजळी, पखा, पाईप स है, ब ही गाय लेवण री बात जीम पर को  
जावैनी । पाँच सै सान मँ पावणियाँ अफसरा री तो ओ हाल है क  
घण सू घणो कोई रळी दाखल कदेई बारडी भलाही बाँव लो, बाही  
जी सू ऊपर कर इ खातर गाय रो तू ताम ही ना लिय ।

'पारो डिस्टीकोण ही भाघो लाग्यो मन जेद ही तो  
बापडी गाया रो ओ हाल है आँ हौला तो मन लाग के अजिते जमाने  
मे गाया रा दरसण फोटुवा म भला ही हुवो अर धी दवाइ दाखल कोई  
भागी रे अठ सीस्या म भला ही लागो । बळघा री जोडी चुनाव  
चिहा में ही रैसी मन दीख । जद ही तो हणै रे टींगरा री टांगा

सड भर मोटघारा रा मूँ बाया रा सा दीख ।’

तूँ जच जिया ही समझ पण हूँ गाय लवण रँ पल म न  
भाज भर न काल । हाँ दूध तूँ सेर लेवती डोढ़ सेर सल मला हीँ ।’

‘तो छाछ खातर करण दो मा न री रीं धूकण दो  
छोरी नै घापर हू हू चालण दो पखी भर वाजण दो रेडियो म्हार  
बाबजी रो लियो काई में कई म्हार खन रइ’ क परी बा बारी  
नीकळगी घांधी सू उडायोडी भधबरसी उदास बादळी सी ।

×

×

×

आदमी रो विवशता आ ही है क बो सोच ज्यूँ को हुवनी  
भर बो नही सोच ज्यूँ हुव । एक दिन सिझ्या छव सात बजी आदाजै,  
जगदीश म साईकल लियां घर म बडतै नै सुणीग्यो जगदीश जी रो  
मवान भो ही है काई ?’

जगदीश लारीनै देख र कयो, हाँ भो ही है, बोलो ?’  
जगदीश देख्यो, गाव रो एक आदमी है, एक हाथ म भोछी सी  
लाठी दूमरे हाथ म जेवडी जिक सू बँध्योडी एक गाय खडी है ।

हूँ लिखमीसर सूँ आयो हू वारी काकी सुसरो काल  
रामशरण हुग्यो भरती वेळा वा कयो ‘क आ गाय म्हारी छोरी रँ  
पूमाथ देया ग्रामीण बोल्यो । जगदीश एकर तो इया राजी हुयो  
जिया भणचीती लिखमी पा र कोई रक राजी हुतो हुव । वण खनै  
जा र गाय न साबळ देखी । लाबा सीग जिहै म एक खाँडो भर एक  
हाल । पाँसळ्यां भकाळग्रस्त री सी यारी यारी चिलक, हाडे गोडे

मोटाळ परिया सू पाको बळघ लागै खनै सू गाय जै या रै  
 स्यादवादमी । न गाय न बळघ गाय बळघ दोनू ही-अवाडो चिप्योडो  
 लटन कोई घूनी सठाणी रो तागडी सू बॅध्यै किरचा रै कोयळियै  
 सो-आरया म गीड अर पाणी पड, डावी आख भाग रो गयोही, टिल्लो  
 दिया पड जिसी गाय । जगदीश एकर घोळो हुग्यो, गाडी मे गाठडी  
 गम्योडै मुनाफिर सा । बण बीनै तो की को कयोनी, मन म सोच्या  
 धीसाई रा पइसा बठ ही भेज दवतो, अठ ताई कयो तो फोडा गाय  
 नै घाल्या अर कयो अण भलै आदमी दस्या ।

“सुणै हे नी ? घर म जा र आपरी लुगाई न हेलो  
 मारधो ।

कया ?”

‘कयो क्यारी ठाकुरजी सुणली थारी मरता मरता काक  
 लाड कियो है-भतीजा रा, गाय भेजी है, अब घपटवो दूध काढ़ अर  
 पी । कह, होठ पर होठ चढायी आपर कमरे मे बढग्यो ।

बा, बारै गई, आदमी सू बातचीत करी, गाय नै लारै  
 लजा र बांध दी । पाछी आई जद जगदीश कयो ‘कयो अब तो  
 राजी है, गाय आयगी ?

“आयगी हूँ किमी तेडो देवण गई ही, मरजी ठाकुरजी रो,  
 कठ काडूँ अब ? दस पांच दिन मूँ मारण रो की सखार है तो  
 मारलेसी । रैसी तो घर है, जासी तो घरमराज रो बारणो खुल्लो है-



जागी परी ।'

दर मन, पनी मया मन करावनी का लागीनी जाग सू  
जाग एक दा टा पण सवा रो मोच छोड धिगवाई रो कर ।' बी  
मुळार बी मळे वारयो बीन मुणावण तानर 'दयक राव जा  
दीही रीक सू त्रिक री धीमाई पर सू ।

थ कठ बोनी ही हूँ सा समभूँ, पात ही हूँ साऊँ ।  
क्षणिक विपाद री एक हृदयी सी सीक धीर धर र पाणी म तिच र  
पाछी ही बिनाईजगी । वा घोडा सी रुनी प्दर बोली काको एक्सो  
जीय हो, वेटा, वटा हू ही धीर आया जित आपाने रती ही बी  
सतायानी, जुडपा जिसा बी दिया ही आज बी जावतो जावता  
घावरी सालमा री सीका रो एक चित्राम रीधय्या म्हार विश्वास  
पर, वण बी म जिता मगळ घावरो साच्यो हुयी बी सू घणो  
म्हारो । हूँ बी म रग भरणो तो दूर उलटा रही री छावन्वी म  
फूँ तो मी सा वृत्तघण धीर कुण ? ज हूँ ई न वाहूँतो निरध ही,  
ईधर मे उन्ती थ कुपित सालसावां कठ न कठ म्हार हिन री हाणि  
ही करसी, ई सातर मन ता सूली लगडी जिसी भेजी है, म्हार तो  
वा कामघनु है । सोळवों सोनो है, बी रो निरस्कार हूँ को कर सगूँनी  
भूख निस कर, बी न बी बीर पट म नासस्यूँ हीं, बस, इनी ही  
जागूँ हूँ ।'

दरसण री बाता तो छमक मत, हूँ तो बात एक जागूँ  
क तूँ न ता भूख कर अर न तिस घारी घाँस म्हारें ट्राजिस्टर अर

पल्ले पर पैला स्यूँ ही हे, भावैनी बे मनै इ बाँक डौंड खातर कठै ही काबर बोरा सट्टै नही काटखा पडै, आ जे च्यार छव महीना जीयगी तो तन ठा है, च्यार रिपियाँ रो तो खाली सूको कूटळो चाहीज सी ई थारै चालतै चित्राम नै रोज । थारै जे घोवा फाडा पाँती आसी तो लप सण्ड म्हारै ही भावैला । की न की तो, हाथ तग म्हारो किसो को हूसीनी ? खोखो घर तो घोस्या रा ही बळसी पण सुरा उतरा नै ही मिलज्यासी । होठा पर फेकी जे न भावै तो मनै कदिए । तू तो जीवतै जी मळै जे गाय रो कदेई — नाँव ही लैवै तो मैं स्यूँ राम राम कर लिए ।”

‘म्हारै होठा पर फेकी आसी ता भाछो’क, थारो तो जी सोरो हूसी, हूँ ई म ही राजी हूँ ।’

तो कर काव नै राजी अर थारै खातर सग नै जान्या ठाई ।’

छूट है थान जच जिया कहो थे पण मनै ओरा नै राजी विराजी करण री इती चिन्ता को है नी जितो म्हारै साम भायै काम री अर बी म जे म्हारै स्यूँ कठै ही घोडी घणी उग्रासी बगतीज तो मनै डर लाग क भावनी म्हारो विराट मैं स्यूँ कठ ही मूँ न माडन चालती चालती बा सुणा चर पर भास्या री स्वाभाविक मुद्रा लिया भट बारै निबळगी । पला गुड री दो डळी गाय न दी डील पर घोडो हाथ फेग्यो जाणूँ कोई खूनी जाण हूवै । खूनी पर दळिया चढाया, टावरो अर जगतीग नै जीमा कूटा करवाया उपर

सापर म रात री दस बजगा । दळिया टार वूणो गाय घाग घरपो-  
बा दस कास मूँ घायाही ही वूनी अर बोसी यारी, एकर मूँठो  
मारती फेर जानकी खानी दसती सताप घर सगे मूँ । सतोप  
जानकी री सेवा रो समभो सस इ बात रो वं मँ स्तूँ बीरी घास्या  
री रक्ष्या वियां हूसी, ई सातर सायत बा मूँ मारनी जानकी खानी  
दसती । भाँस री बात समभ ता भाँस माँड वाळत्रो पण चिंता  
हुव मनन । जानकी र मनम भवार घास्या मूँ ऊँची चिंता सडी  
हेना कर हाँ व घा जो सी वियां ? सूती जित इग्यार मूँ ऊपर  
हुगी ।

तीनेक बजी एकर घोर उठी सँभाळन न गई नस जमीन  
र चिपायां समाधिस्थ साधुसी सुखमग्न ही । दसर पाछी आवगी ।  
पाँचपूणी पाँच बजी उठणा ही हो धव नभींती नील ययाँरी  
घावती ? गाय घर घर री उपेड चुन म घण्टा ढोढ़ घण्टा पसवाङ्क  
फोरतां फोरतां वाळदिया । टम हुग्यो उठ सडी हुई । रोग घाही  
गोरख घाँघो महीन सूँ ऊपर हुग्यो इया करत । गाय पर नूँई पसम  
घावण लागगी जिया लाँबी बीमारी भोग्य बीमार री हूँ उडघोडी  
भाडी पर अनुबूल भोखद अर घाछी रोटी सूँ नुँवा बस नीकळता  
हुव । डूकणा दीखणा की कम हुग्या अर नुव भाँस सूँ पट रा साडा  
ऊचा आवण लागग्या जिया टोपा भरती दू टी नीच माँडय बरतण  
म पाणी रा तळ भास्तँ भास्त ऊचो घावतो हुव ।

एक दिन जगदीश बोल्यो, 'अजकाले गाय तो खासी ठीक दीसै पण बीरी मालकण रा भूँढो नीकळन लागग्यो । लक्षण देखता डर लाग के गाय तो काँई ठा मर नही मर पण मालकण आवैनी कठं ही बीसूँ पंला ही घोडियो नही कूग बठे ।'

म्हारो घाडिया कूग्घा किसी प्रलै हुवै छोरयाँ तो घोर घणी है मुलक म ।' बा बोली ।

'इ बोदै दाड खातर, आ तो मत तेवडना, टीगर तो रुळसी जिक्का रुळसी साग म्हार जी न और आफत करमी ।'

'ज आ ही लिखी है तो कुण टाळसी काचो भाण्डो है कुण गारण्टी दै ई री ? रोज ही फूटै इसा भाण्डा ?'

'हूँ थारी भावना री कदर करूँ पण ई खोपे खातर म्हाँ सगळा नै तो खतरै रै खाड में मत नाख ।

'तो ये आ समझो हो के ठूँ—याँ मूँ नाराज मर ई मूँ राजी ?

खैर आ बात तो को हुवलीनी पण

पण क्यारी था सगळा न सावळ राखण खातर ही ता हूँ ई न सावळ राखणी चाळें ।'

"पण, म्हारो कणो ओ है के म्हा सगळा खातर तूँ थारी आधी ममता न छोड । कदेई तूँ कुतर गळकावै बीरा जूँठा चुग कदेई बीं नीच रेत दिळावै, हाय फेरै इती खेवट तो सामत कोई बीमार पर ही का करतो हुसानी छेकड है तो थारो हा ?"

‘तो डागर री सेवा डागरा तो करण सूँ रया करसी तो कोई लुगाई रो जायोडो ही—धोर बीरी सायकता ही काँई है ?’

‘पला आपरी सेवा, पछ धोरा री ।

“जिका आपरी पला सोचसी व धोरा री माडी ही करसी ।’

धोरा री करण खातर, खुन रो शरीर तो नीरोग चाहीज पला आ तो तूँ ही मानतो हुमी ?

काम करघा नीरोग तो बो रसी ही शरीर न तो जिक घड घालस्यो बो बी घड ही बठ ज्यासी घर थ जे आ साचता हुबो क आदमी जितो कम काम करसी वा बितो ही वसी जी सी तो आ स्याणप म्हार माथ म कम बठ ।’

जगतीश न एकर तो इसी भू भळ आइ क दो च्यार इमी सुणाऊँ कै आ यात राख केइ दिन मन न की मार र बण खाली इतो ही प्रकास्यो क ‘तन समभाव बो जिकै रै दा माथा हुब—कर तनै आधी लाग ज्यूँ’ लिलाड में खीज रा सळ घात्या—हाथ म अखबार लिया बो आपरै कमर म बडग्या ।

एक डोल महीनो और नीकळायो—कदेई जिको अवाडो किरवा र कोयळिय मो लागतो—अर बोया वादी खारका सा दीसता बो अवाडो अवार साइकल र हैण्डल सूँ टिरत थांबा र धल सो भारी अर भरयो लाग हो अर बोवा छाटी काचो केळ री फळ्या सा करडा । शरीर म वा ताजी ब्यावतर गाय सी लागती—स्यादवाद

री सकीए अर सशयात्मक सामा मू नीष्ट दान नग्न र  
 एकोइ सी खन अर परिमा मू — नग्न न नग्न ही । ए नो  
 हा जिसो हो ही—की र मा ?

एक दिन जगदीग मिथ्या मन द्रग्न दृमी एर वेदा  
 अथवार फिरोले हो । वीरी नित्रर गे नग्न दान री धरना एर  
 कानसा रा छोटा मोटा टेसन छात्रा नग्न 'दादु ? रिन्द एर  
 जकगन पर दकगी । जानकी कमा एर एर मन्त्री एर मूनी पनी  
 हा हलको सो गानो मोठे राख्या हा । एर ही नगी अर विर दूम  
 हो । छोरी तुठ्यी री चाय नग्न दान, 'माँ मा चाय न  
 दादी दी है ।' वा बठी दृई—एक दान, एर दान, 'री गवार  
 ठार दियो ?

'नही मा ।'

'जा ठार देखा, हू गटे नग्न नग्न ।' एर, वा ही  
 जिया ही पाछी पडगी । जानू बीर नग्न नग्न मो भारी लागतो  
 हुव ।

मा वेटी री वार्ता रा नग्न दान री वाना में पडो  
 वण एकर छापो राय निया एर नग्न नग्न नग्न दा मिष्ट एकटक  
 देख्यो । पाँच च्यार महीना पैला नग्न नग्न नग्न एर जिकी चमक  
 अर नारी सुलभ सैज आकणु हा, अवार वो पीक अर निस्नेत्र  
 पीटापण मू वाति विमन पत्र री प्रशिक्षण र भोर री वीर सो  
 उदास अर अणुभोगता लाग्यो वान । री र एर पर तिरती चमक न

नग्न दान कल वदुन

कोई चिन्ता री रेत चूमगी लागी बीन । बीरै एकर जच्ची क बतळार  
 ई नै सुणाऊँ 'कयो आव है स्वाद अब तो, गो माता री सवा री ?  
 पण बी र मू पर छाई पीड अर घवावटसूँ—बो खुद एकर करणा म  
 हूबग्या । भोळी अर जिद्दण जात है—पकडलियो गधे री पूँछ—अबै  
 छोड किया लाता री लाग तो लागी' ई ऊहापोह म हूबगो अर  
 तिरगो सुरू कियो ही हो क बण आपरी मा री हजो सुण्यो क  
 बीनणी गाय तो ब्यायगी दीस—देख देखा ।'

ओ हेलो जगदीग न कुण जाएँ किसो क लाम्यो पण  
 जानकी न तो ओ अडीकत बामण न यूँत सो दाय आयो । बा भट  
 चढी हुई लार जगदीग ही टुरग्यो—की अचम्भ म की अपत्यागा  
 म । टोघडियो लाई पण मरचोडो हो । जगदीग कयो चूक हो कैयो  
 'ओ ल सेवा री फल इता दिन खुवायो जिको घूड म गयो, अबै  
 भळ खुवा साल भर—खलो काढण आळी बळा किसी क दी है फीप्या  
 म पण ठीक ह्यो । आ व्यावा रा नेक इसा ही हूणा चाहोज ।  
 कह र बो गयो परो उतास अर आक्रोश सूँ भमूज्योडा ।

जानकी गाय न गुड री दो डळी दी । गाय बीन देखण  
 लागगा जाणूँ की समभावती हूव ।

क्यों कार्द कसर रही माता, किया देख म्हार खानी ?"  
 जानकी हाळ अर उतास मुद्रा मे कयो ।

गाय भळे एकर मरय टोघडिये खानी इया देख्यो जिया  
 उदरसिंह री घाय पत्रा आपर मरय बट खानी अर फेर जानकी

खानी । जाणूँ बा समभावती हुवै केँ “भोळी, मनै म्हारै टोघडिय री इती चिन्ता को है नी जिती थार अतराळ में सोय थारै विश्वास र बेट री कुदरत आपे ही करदी म्हारी मनसा पूरी’, पण आ बात जानकी को समझीनी— नयनु विन बानी’ लाचारी ही । बा जर पडी जितै एक टक एक जिती ऊभी रही बठै ही ।

सुधारी न बुलाई । बा घावती चौका बरतण करण खानर । गाय आई जिकै दिन सूँ कवती बा, ‘गाय थारी दोनूँ टम हूँ दू देस्युँ अर नीरो चारो कसी जिया, पण दिनूग सिझ्या पाव पाव दूध देणो पडसी मनै । दोहीतो है एक आठ दस महीना रो बाप वायरो । छोरी रोगली कूचो हो—पाव डोढ पाव जे धार दीख बोकर तो कदास लट पळज्यावै ।” जानकी थोडी हँसी, फेर बोली, ‘माजी, ये तो बा करी क राँड थार जूती रो दूँला, पण जूती ही हुव कठै ही, ये रोवो दूध नै, अर गाय आज मरूँ अबार मरूँ इसी है ।’

तो इसी क्या ली ?”

‘ली कण है, आई है कठ स्यूँ ही ।

‘तो म्हार भाग री बात—नही सही ।’

‘पण चोखो थारी जबान फळै बा दूध देवै मनै अर हूँ देऊँ धान अन्देर री जाग्या तीन पाव—अबार स्यूँ ही सौदो पक्को है घापणो ।

सुधारी आयगी दौडी दौडी । जानकी बोली लो माजी



घारी जवान तो फलगी, साँभो ई न पण ?”

‘पण काई ?’

‘टोषडियो को है नी—मोछ है ।’

‘आपणो काई सारो ?’

टोषडिय बिना दूध ?’

‘देखी जावै, जिता दिन देसी बिता दिन ही भाद्यो—धीएँ  
ही दीसै पला सू ब्यावणज्यू बिचार तो को लाग होनी ।’

“ही ज” ही ब्याई है ।

सुघारी लार गई । गाय रो खीस निवाळयो । गाय पण  
ही को हिलायोनी भीत सी घिर खडो रही । टोषडिये खातर न  
घणी ढीकी अर न घणो हेज ही कियो जाणूँ बरसाँ सू वण भम्बास  
कर राख्यो हुव—आज री स्थिति री सामनो करण खातर । सुघारी  
बोली बीनणी कुण जाण गाय कितीक दूभसी पण दूध इ र टक  
रो पाच कीला सू कम नही हुणो चाहीज बूढी भला ही हुवो बाकी  
गाय ह खरण री ।

‘पला ही काई ठा माजी ‘वहू बछेरा डिकरो नीवडियाँ  
परमाण कुण जाण किसी घड घठ ? दूध दम पाच दिन तो काम म  
को लेवानी, पछ दोहीतै खातर एक बडी गिलास भर र बिना पूछना  
ही ले लिया करो करा जिक दिन घर बरताऊ छाछ मोकळी ले  
जाया करो ।’

“दान करगो म्हाँन तो, एह देसी नै बग्ग बीउग्या रळी या ही बाहरें एग बिगो चारो बगं बटे ही ? इहाँ परां में जाळें हाँती पाटो म माहू पूरमें ती बागग ता बन्द मनां ही हुग्यावी, एगु मखान है बटे ही मोळी एह हपाटो म टीकी देवन नै ही साथे ?”

‘मोठ री हाट तो माजी मोठो ही बरता हुनी ?’

बीं नै मोठा नहीं जेर बँधला चाहीरें बीनणी ! धात्र-बाने गरीब अर भागवान सगळा रें बो एह ही गूगलियो धो बरतीरें बो री दो टळी ज्ञान सस कोर्द तो मर तो छापस बो नहीं ऊमर हुव ता, एग जा म बाकी मळ की का रवनी ? बारन घागुं मोटरां ऊभी, भर भयथा दही ग्यातर मूँडा बजार छानी जिवां बन्दोयां री गळा सानी कुन रा । विलोवणा ता तमास्त बार्द, प्रभु रो प्यारी ही करसी ।”

‘इयां ता सगळी प्रभु री हा माया है माजी एग धवार रें मानसै न नकना नूँ मोह जादा अर भगसी सूँ बम है जह पूजा रो जुग है नी प्रभाव तो आपगे दिखसी ही, प्रभु री हुयें मर घर मनि हुवै धाद्यी तो भला ही बचो, नहीं तो मुदिकल है बचणा ।

सरलना री एकसी घरती पर हुण सूँ जानका घर माजी म बडा हेत हुग्यो । रोज द टग री बातां हुनी । गाय दूध देवन लागयी । सींग एक पडतै सिंगल सो हालतो जिक्को हालतो

ही हो, कानी ही जिकी ही ही पण दूध साडी छव सात कीना टक रो देवनी । रोज बिलोवणो, छाद्य मट्टो माखण मळाई सै मगळवार न थेळ हडमानजी रो—ममावस पू-यू कदेई खीर कदेई कीटी रा लाडू तो कनेई गाजर पाक अर पेडा । खीर घका, बासी वगण, गळी टीडसी काणा अर कुचमायला काकडिया अळसायोन आलू अर मरो बुलावै जित्तै मूळा सू कुण माथो लगावतो ? बास म कई घरा म दही कनेई कटोरी कटोनी खीर बाटती जानकी । बास सू कोइ न कोई टावर कोई सुगाई पनाई छोरी छीपरी खटा ही दीखता रसोई सनै । बडिया आज म्हारी माँ रो माथो दूख चाय करती थोडो दून घालनी आज म्हारा बनोईजी आया है, म्हारी माँ भाधी गिलास दूध मगाव' इया माँग सगळा रो एक ही कवण रो ढग अर स्थिति यारी यारी ही । जानकी हाथ रो उत्तर दवती, मूँड रो नही । बा तिन भर गाय अर चुल्हे बिचाळ फिरती व्याड र घर म धीनरी माँ सी पण बिना उथपी बिना उदास ।

जगदीश देसतो न्वावतो पीवतो चाय छोडदी घान कम हुग्या शरीर म ठीक हुग्यो पण मन बीरा ओजू ठीक को हुयोनी । वो थोड दिन पैसा रोज जानकी रो विरोध करतो ठग अर विरोधी नेता कुर्मी रो करतो हुव जिया । गाय न गाळ काडना भूखो समाज वाणी घोपका न काढतो हुव ज्यूँ । गुमाग री गध अर बहम री मली रज बीर माणम म बठगी पण जानकी र अतराळ म इसी कोई विकार डूँढ्या ही को लाघतोनी । जगदीश सकता आपरी कमजोरी

सूँ जानकी मुळवती सगळा रै मगळ सूँ ।

एक दिन बी रै दफतर रै रिटायरमण्ट री नदी किनारे  
खड सुपरिटेण्डट कैया, जगदीश जी में सुणो हे भापरै रोज बिलो-  
वणो हवै ?'

'हां सा ब ।'

'एक भज हे पार घालो ता ?'

'परमावो ।'

मनै महीना बीस दिन दवाई चाटणी हे चूँटियै म । मोल  
रै पर मनै विदवास महीं, लोग दूष म बनस्पति घाल र बिलोलेवै ।  
दो पइसा भर चूँटियो मनै पर भघ सेर तीन पाव छाछ म्हारी मां  
नै पीळियो हुयो इ खातर चाहिजती । हूँ रोज आदमी भेज देस्युँ  
भाप रै घरे ।'

'ठीक हे सा'ब' जगदीश रै मूँठ सूँ सैज भाव सूँ  
नीकळधा ।

बी मिश्या घरे घा र कमरै म बैठयो । खरखे पर ताग  
काग भर दूट ज्यावै—फेर सांध फेर बिया हीं । भापा हीं तो भरली  
पण जानकी नै कैवा किया ? या नटयो तो ? छाछ री तो खैर  
कोई बात नी पण चूँटियो छटाक भाधी छटाक रोज महीनै भर—  
एक दो दिन हवै ही तो भी कोई बात नी ज बण कै दियो क लोगां  
रै घरां पर चूँटिया खाटता में ता कौन ही देख्या नी इयो चूँटिया  
खाटणो हे ता घर में गाय धारो—पारै इवै मुकियै सायबा मूँ दफतर

भरघो है हूँ कीन कीने चू टिया चटास्यूँ—थाने ही कए ही घाज ताई चटायो हुसी ? अठ कोई चू टियै रो सदाव्रत थोडो ही चल ? तो फेर ? थापा तो बीरै भर बीरो गाय रँ इत्ता विगोध में हा जिता कोई मावोवानी पूँजीपत्या र पण थापा बीं आदमी नै नटता किया ? नौकरी में जिक थापणी पूरो मदद करो ।” दूसर ही धए बण नाच्यो इन महीन रा साडी छवम सातम रिपिया मिलै, टैरालीण पर रँड एण्ड हाष्ट भर कैवैण्डर पीय, कोफाकोळा सूँ हाजमो ठीक कर अर एक गाय को राख सकनी—छोरा तिन म दो दो दो देख—अर कपडा कत्यक रा सा परधाँ बजार म बिकाळ बीन सा फिर—जानकी ठीक ही तो कवती ही मन कदे कदे ही । आपा गळनी करी, कणो चाहीजतो हो आपान, ‘सा, हूँ थाने पूछैर कस्यूँ । व्यवहार म डफोळ आत्मी रो हाल माडो ही हुव भर जिक म बिलोवण खातर खुगाई रो जा इत्तो नाहों हुव क बा विलावण र भज सूँ डरती दूध परली मळाई पूता न तो काई परमेसर न ही दणी को चावनी ।

अचानक जानकी कमर मे बडी । जगदीन रो नूकडियो सगळो खिण्णयो । दूध री गिलास बण मेज पर धरदो । ऊपर थक्कण आयोडी ही रोटी सी जाडी । जगन्नीश र जी म आई ‘दखा कहूँ तो सरी एकर पण विचार कागोलिय ताई ला’र पाछो ही गिटग्यो बीमार बाळक भीठी कपमूल गिट ज्यूँ । गिलास पडी रही बा पाणी रो गिलास ले आई कुरळ खातर । बोली, पिबो कनी घणो ठडो काई कामरो ।

जगदीश तावली जीम सू होळें सँ वँयो, 'पीलस्यू इती काई उँतावळ हे ?'

कीं दून पाच हे काई ? इत्ता होळें किया बोल्या—गवन कियोडो वावू बाल ज्यू—का दूध हजम को हुवैनी ?'

'नहीं, इया ही ।'

'तो हो ?'

हूँ कँणो ता का चाव हो नी, पणु,"

पणु काई ?'

'कणो पडसी ।'

'तो फेर भरीको कौन हो ?'

जगदीश साच्या "बदमा भवार हुणो तो समुख ही चाहीज । बोन्यो "मैं तो धार विस्वास पर एक हैवारी भर लिया ।'

'छोरी री सगाइ रो ?'

'नहीं ए,सगाई भवार ही किसी ?'

'ता ?'

'म्हारे दपतर रो सुपरिटिट है, मलो आदमी है—आपरी खाल । म्हारी बणु खासी मन्द करी एक दो बार । वो महीनो बीम दिन दवाई चाणसी चूँटिय म बाल्या आघ छर्कक रोज चाहीजमी पर आप सर तीन पाव मोळो छाछ वा म्हारी माँ नै, पीठिया है बीं न—हिस्साब मर पर्दसा देस्यू उवकार मानस्यू वो भलग, इ स्यू बसी तो हूँ काई क सक्ू ?'

“टीक है साँव पण पइमां वइसा रो विचार पावानी ही

मत लाया ।’ मै क नियो ।

सुणती ही जानकी रो चरो एकर नो जिकेँ सूँ घणों सगन्त

हुग्यो भर घाँसियां रा पाट हा जिकेँ सूँ ज्यादा विकासमान जाणूँ बा

ई भ्रवसर रो घडीक म ही घणा दिनां सूँ । बा सैज समुद बाणा म

बोली कँ दियो तो क दियो—इम मौके कणो दया ही चाहीज

मुलायजो मान तो बीरी मौजे नहीं तो बीरो कज है बाँ पर पुराणो

इ मौके उतारघो ही सही भापार दोना हाप खाहूँ बसन बीतसी

बात रसी बात न पाढी ही गमास्यो । हुय मारु घोरा न ही तो

घाला हा टम ब टम । राजी सुसो निया भला ही, दूध पीयो प ’

कहपरी बा बिना नाक म सळ घाल्या सज मुद्रा में वारै नीकळगी ।

जानकी रो ‘हाँ रो इजकसन लागतां ही जगनीन रो काळजो पाछो

सागण जाग्यां बैठग्यो भर बीर मानस पर तिरतो महीनां रो मँल एक

किनारे लागग्यो बो नितर र गगाजळ सो निर्मळ हुग्यो । बीरी

चितन रो मछली एकर बीर छुद्र अह रँ छीलर सूँ नीकळ, जानकी

र सज शांत सरवर म डूबगी । ‘भा इत्तो मर पच जस तो कुघँ

मे पडघो उळटो है चोभकां मूँ बाळूँ, गाय ई न किसी एकली न ही

चाहीज—कित्तो, है भपस्वार्थो क टीडी सो खाली खाणो भर

खिण्टाणा ही जाणूँ, भर सकीण इत्तो, क बोली रो सहानुभूति देवतो

ही दारो भर भा गहार सांकड स्वामिमान न विकासमान करण म दिन

रात एकसी लाग्योडी । ई रो जाग्या जे कोई विशुद्ध प्राधुनिक

सुगाईं म्हारै हुनी, तो आज सूँ किता ही बरस पैला का तो बा मन तिलाक दे ज्यावती भर का हूँ अघ उमर में घुल घुल मरतो ।” ई डगर चितन सूँ जगदीश अब सागी को रैयोनी । वो गाय र नीरै धारै रो खासो ध्यान राखतो । छुट्टी छपाटी आळ दिन बी पर की हथफेरी करसो—खोलतो बाँधतो—खासी सार सभाळ राखतो ।

गाय नै सत्तर अठार महीना हुग्या दूध देवती नै—ओजूँ टक रो दो ढाई कीला दूध देवै ही । एक दिन जगदीश बोल्यो, ‘भर भावो है लीलो तो खर भापा घरे नाखा ही हा, पण रोही री होड घोडी हो हुयै । बा मस्ती भर मोज ठाण पर कठै ? एक श्वाळियो दस वारै गाया ले र गहर सूँ कोम पूग कोस ले जावै तूँ क तो भापा ही गाय नै पालदी, खर आसी महीन म पाच च्यार रिपिया सागसी ।’

‘पालदी धारै जचगी तो हूँ क्यों पालूँ’ जानकी बोली ।

पाट्टे बीस दिन हुग्या जावती न । दूध अघ सेर तीन पाव घघयो टकरो । जगदीश सिझ्या दपनर सूँ भायो ही हो फाइला रो मायो फिरोळनो फिरोळनो, नाटा की चावै ही पण समभत्तार जानकी दूध री गिलास मेज पर पैना ही राख राखी ही—दूध री काया लीला री चक्कण सूँ दत्रपाडी दया लाग ही जिया बवेत गिबलिमी रो सिर कण ही जाडी कसर भर चैण री पीठी सूँ डक दियो हुयै । जगदीश पैला धमच सूँ मळार्द्र रो भोग लगा’र, ठपर नूँ दूध पी गिलास छेड धरयो । बोल्यो, जानकी धरती रा धसती जीवण तो



श्री है, पण मिलै की भागी न ही है — दाह री बोलला भर  
जिनावरा र मुर्दे हाडा म जिजा जीवन सोध बँ मळ्याई री ममा काई  
समझ ?

‘पण मळ्याई जड आडम्बर री छाया नीच को पळैनी,’ वा  
बोली । जगदीश की बोलू ही हो, का, बाँ न सुणीज्यो बाबूजी घर  
मे ही हा काई ? जानकी उठ’र गई परी ।

‘बुण हुसी ? जगदीश पूछयो ।

श्री तो हू पीरियो ।

‘क्यों पीरू खाँ गाय आयनी काई ?’

काई बताऊ आपन ? कह’र बो ढीलो मूँ किया कसूर-  
वार सा सामो खडो हुया ।

‘क्यों इसी काई बात है पीरू ! कह तो सरी ?

‘‘गाय न का तो कण ही दूसरी गाय मारो दीस का बा  
पण डिग’र आपे ही पडगी हुव । मैं आवती बळा ई न बीन दम्बी तो,  
रस्त सार एक म्ब घन् म पडी ही उठावण री चेष्टा घणी ही करी  
पण न बण पण ही साम्या भर न नम ही ।’’

‘जिय है क मरगी ?’

‘‘ओजू तो सास है सा ।’

‘तो चाला ?

आपरी मरजी है चालो ता भला ही, पण पाछी खडी  
हुती मर्न की लागीनी दो च्यार घडी भागो भला ही ।

'खैर दखी जासी लावण ज्यू' हुमी तो कोई उपाव करस्या नहीं तो हुमा, चूकी लूकी, कह'र जगदीश बी साग जिया ही दुरु हो जानकी ही आयगी। बण ही मत्तो क'लियो। दिन ओझू दे सवा दो घटा पडयो हो। पूग्या जाग्या सर। नस नाख्या गाय खुल्लै ख'धेडै मे इया दुख पावै ही, जिया की महाकाय दत रै फाहयोड मूँ म सदे सिद्धि तडफती हुव। सूरज अस्ताचळ र सारै चुकण री त्यारी म हा भर लोहिया राग घ'स्ती पर लिण्डै हो।

पगा री चाल जिया ही बीरै कागा मे पडी बण नस उठाणी चाही। उठण खातर लारला खुरिया घणा ही खोतरया पण फालतू। काई कर? पण शरीर जद साथ नहीं देबै, तो आख ही आडी आव, घर आख भाग री एक। बण जानकी खानी एकर इया देख्यो जाणूँ बा इत्ती ताळ बार दरसणा न ही घडीकै ही, फर जगदीश खानी एक पळ जोयो जाणूँ बी न खाली इत्ती ही पूछती हुव क 'कयो राजी जो है नी तूँ? भर बीसीजतै सूरज सागै वण ही आपरी जीवन किरण समेट ली।

थ केवता हा नी कदेइ, कै धीसाई घर सूँ लागसी? जानकी श्ले स कियो।

जगदीश हारघै जुझारी सो टकर जानकी खानी रह्यो—  
अर फर बै, घर खानी चाल पडया।

## फेट में आयोडो



ढोपार री घटी बाजी खासा छोरा दोडपरा स्कूल र बार एक गाड र चारु मेर इया भेळा हृग्या जिया चोराव पर पडी गुड री भेनी वारकर बा दरा । पाळै रा दिन हा घणखरा मूंगपळ्या पर इया ऊतरयोडा हा जिया टीडी मोठा री साव सूकी नधरी पर । केई चरक भरकै रा चटोवडा बासी कचोळी वूस्योडा समोसा बोदा हूंगर साई घर डकोळी भुजिया बडो स्वाद ले ले इया खावता हा जाण घरे इमो चीजा कदेई वारतवार ही बापरती नही हुवै ।

एक मली सी चाडकी म घाडी सी चाट पडी ही जिया घण दिना र हळक लाल मन मजिय र गछ पूछघ पाणी म मोकळा मसोता निचोयोडा हुव । बी पाणी री मैमा छोडा गाढे आळो कचोळी म श्रंगूठ खनली भागळी सू भाळा रा मूंगिया माव जिता जिता दो कोचरा कर बीरा च्यार टोपा इसा दोरा नाखतो जिया कोई लोभी कम्पोडर की गरीब री दूखती आख्या म दवाई घालतो हाथ काठा करतो हुव । पण छोरा स्वाद रा इसा रसिया क कचोळी खाया पछ ही वागद न एकर इया चाटता जिया कोई कूकरिया आमरस री

ऐ ठी कटोरी नै । बेई कीडा रा कूचा पेमजी गाघडा ऊँघा हू हू बाकै म ऊर हा जिया कोई आँधी पिसारी घट्टी मे गाळा ऊरती हुव । लटटा टाळ टाळ खाव इत्ती टैम बठै बाँनै ? चटोकडा मे स्वास्थ्य धर समय कठ, खावण खातर ही जल्म बापडा ।

गाडै मे एकै पास एक मलै सँ ठाठियै में, अदाजै पद्वै बीस डळी पिण्ड खिजूर री पडी ही, बाँ पर माख्या धिगाण ही कजो कर राख्यो हो जिया जनतत्र म एकर सत्ता में आया पछ गुण्डा कुस्थाँ पर, पण गाडै आळो इत्यो समभदार कै बीज बोरिया र बीपार म तो खूब रत अर खतूर खानी इत्तो बेपरवा जिती भारत सरकार अकसाई चीन अर पाक अघट्टत नासमीर खानी सूँ हा कदे कदेई बीर हाथ री स्वाभाविक हरकत सूँ, माख्या एकर थोडी उडती पण पाछी बठै ही बैठ ज्यादनी जिया सयुक्तराष्ट्र री रोळै सूँ इजरायली अरब री सी पर । ई भीड में कोई काई भाग र भरोस जीवणियो इसो ही दीसतो जिको दोब्यार डळी माख्या रै मू सूँ कढवा आपर मुखारबि द पर मेल एकर अमरन रो अनुभव करतो । धन है बी री समझ अर धन है बी रो खिजूर सूँ हेत । धारा रो बठै ही खारो अर बठ ही मू गफळ्या रा छोडा वेळा रा छूँतका, खिजूर अर गाघडा रो गुठल्या चाट रा ऐ ठा पत्ता पगा माँखर इया काढता हा जिया गुवाड मे माँखी कुत्तर न टोपटिया गाय अर गघा खूरा मात्तर ।

बेई मरतोड खावत छोरा र मूँढ्यानी इया देख हा जिया कामला पीजरै म पडी परसाद री थाली खानी, पण बेई बेताज

बादस्या 'मारदडी' म इत्ता बेपरवा हा क हेलो मारभा ही चणोवडा रा चरा को चितारतानी जिया कोई भीतराग पक्कड लिछमी अर लुगाई न का चितारैनी ।

बूढाप री थळी पर पग राखता एक गुरुजी चौकीदार री कोटडी री गारी म बटा छारां री चाल ढाल इती तणमयता सूँ निरखै हा जिया कोई गाव रा नु बादू जपुर र गणगौर मगरिय न । एक छोर खानी बाँरो घ्यान गयो । छोरो गाड खन आयो बोत्यो मानीजी दस पइसा रा चिणा देख्यो ?

'देस्युँ नही तो देखण न मल्या है ?' पड उत्तर मिल्यो ।

'पण, पइसा अबार को है नी काल पक्कायत दे देस्युँ ।

'ता पर काल ही पक्कायत निय अबार एड लगा ।'

भरोसो राखो पइसा आपरा का राखुँनी । खासी नरमाई सूँ छोर कया ।

गाहक नही मिलसो जद तन हेलो मास् हू मँढो धो र त्यार राख गाड आळो की चिडपरो बोल्थो ।

बाथ रै लाटै म दुबो र काढ्यै करचा सी कोभी बीरी बत्तीसी टाटिय खाये अँगूठ सा जाडा बीरा होठ हवेजी र दाण जिता जिता मू० पर माता रा दाग नाकरो पुळ काई दूर में दुआब री घरती सी बराबर अर आग सँ ऊँठ र मीगण सो ऊँचो उठयोडा—मदान म अणभोपती बीरान हूंगरी सो नख बध्योडा अर मल सूँ भरथा जिया फूड रो मायो छोर मूँ—मायो बोदो बील

सो साव मफाचट—चाँद री घरती सो कोरो भल सूँ करडी कालर रो चीकट कोट, दाडी भूख हडताळी री सी बच्योडी अर तिल चावळिया मूँछा छीदी पण उल्लझ्योडी इसी न बात करता कदे कदेई मूँ म आव इसी सो आदमीडो गाड आळो पण अवार आपरें गाड पर बैठो तोल जोख करतो अण आप न के द्र रं खाद्यमत्री सूँ वसी अर गिल्ल मे पइसा घालतो वित्तमत्री सूँ कम को समझै होनी ।

घणो घस्या चँदण मे ही गरमी आव छोरो आप कीं आव बळर बोल्यो पारी चीत्र है, पोसाव तो द नही पोसावै टाळ सही ई मे चिडन री काँई बात है ?'

अच्छा बाबा हाथ जोहूँ तन, म्हारी गल छोड को पोसावनी मनं वन, दो पइसा बहूँ जिक सूँ तो मत राख ' कह परो बो आपरी ताल जोख म लागग्यो अर छोरां आपरें रस्त, पण बी र चर र पाणी म एकर परचो खाग्ज ह्योड विधान सभाई उम्मेद वार री सी एक उदास मछनी ऊपर आई पण पाणी मे पूटत बुलबुल सी बी बळा ही पायी बठगा ।

मोटी दोवटी रो एर चोळा लोगड रो पजामो सेळ री सूळा सा लडा लूखा केस माथ उधाडो पगा मे टायर री सस्ती चापल, कोई उठतो मसूर नता सो लागनी बो, बेस अर बणावट दोनां सूँ चर पर न गरीबी न गुण्डाई । गीहूँ बरणो रग बी म एक उजाम अर उजास मे एक इसी सादगी जिजी बी री पोसाक मे कम चँरे

खन ही एक बाणिया रो छोरो खडो हो, माख म बोल्यो,  
लडाई क्यों कर लै दो ब्यार मूंगपळी लेव ता हूँ देऊँ ?'

'रगुद इती दातारी न कागला र ही ज काछडा हुता तो  
उडता र को दीखता नी ? पाँच पइसा रा तो गाठिया लिया है,  
पारी जाडा रै लाग ज्यासी तो ही घणा है, म्हारी चिंता करण री  
भैरवानी राख ।'

जबाब इसो जुगत मूँ दियो के भगलो दूसर भळै चुसबयो  
ही नही । परिया केई छोरा बीरी क्वास रा खडा हा बो बठीने  
क्या मुडचो जिया कोई मसद् सदस्य चुणाव र दिना मे भापरै  
चुनाव छेव खानी । दो छोरा र खन मूँ पइसा मान्या बण उधारा,  
एक तो हा तो ही साव जीबती माम्बी गिटग्यो, जिया कोई तस्करियो  
इनकम टक्स री रकम पण 'अनाणा मूँ ओळग्वीजै ऊँठ री माँ साँड'  
बो बी नै माँपग्यो बोल्यो, भूठ बोल, दिख्ता मूँभो ।'

छोर रो मूँ उतरग्यो जिया की नागै नक्सलवादी भाग  
वजा ब्याज उपजावणिय की बाणिय रो । छोरो बोल्यो 'रिपियो  
तो है एक, पण हूँ भेंगा को सकूँनी ।'

क्या ?"

दादो सा लडे

"अर तूँ अबार अणभावतो ही गिटै हो ले ले र जिको ?  
पण खर पारो दादोसा लड इसो काम मत करे, पण हूँ धरम रा  
थोडा ही माँगतो—उधार ही तो लेव हो । बिच म ही एक छोरो

बोले 'जाणा थारै दादे सा न पइसे लारै कुअँ मे कूदे जिसो, गठ  
 गाळा रो कुत्तर पालो जीम, गाया सूँ ही को टळघोनी तो श्रीरां नै  
 बो समझँ ही काँई ।' वाक्य पूरो हुयो ही हो, एक दूजो छोरो  
 बोले, कुत्तर पाल न मारो गोळी गोघा रो गवार कठ गयो ?"  
 कुँडे मासू एक आवाज ऊँची आई, 'बीरा सियाळँ मे लाहू करा  
 लिया ।' पइत्तर गूँजयो पाछो 'अस्सी साल री ऊमर म, जद ही  
 बापडे रा गोडा ओजूँ हालँ स छोरा एक हळकी सी खळखळी  
 दी । हँसी रुक्ता ही एक समझार आवाज बात नै थोडी श्रीर  
 टोरी बी दातार दादे सा र तो ई जिसा भाभाशा ही जल्मसी  
 फालतू कोई रीस कर कयो दोरो हुवँ अर कयों बात बधावँ ?'  
 बो छोरो जिकँ रँ हँसत कँवळ पर अँ छाँटा पडचा एकर साव  
 सूकग्यो अर अपमान री आधी म गयो कठ ही भीड मे ।

दूसरै एक छोर खनँ सूँ बण माँग्या बो विश्वजित् यन म  
 सवस्व लुटायँ राजा रघु सा बोले, 'उस्ताद पाँच मिण्ट पला  
 आवतो तो जरूर देवतो की खायग्यो की खवा दिया, अब तो साव  
 खाली हाथ हूँ, सँभाळ ल भला ही गूँभा अँ पडचा ।'

सँभाळघोडो ही है, तूँ किसो भूठ बोलँ ? कहपरो बो  
 आगेन नीकळग्यो । भळे को माँग्यानी की खन सूँ ही बण, राजनीति  
 सूँ सँवास लिय नेता से उदास बो स्कूल री बाउडरी सूँ बारी—  
 परियाँ सिनियाँ खानी गयो परो ।



बठा बठा गुरुजी सोच्यो ओ छोरो कदेइ भूँगपळी भर  
 कचोळी जावतो आपणी निजर म को आयोनी । चिणा मौलावै जठ  
 पेट री माँग है, जीभ री नहीं । आज ही बापड केस कतराया भर  
 आज ही भाग रा गडा पडग्या देजा है । जादा नहीं तो हत्ती मदद  
 तो आपा ही कर सका हा । पइसा तो पाछा दे ही सी आज नहीं  
 तो काल गर इया करता हो जे नहीं दिया तो आपणो किसो भाग  
 लूव ? दस पइसा म तळ थोडा ही बठा ?'

बाँर काळज री कोर पर मज ममता री एक ना ही सी  
 बादळी उठी बरसण खातर पण अणहूँत री भाँधी म ही  
 दिळाईजगी —आपर छुद्र घटाकाग म, टोरो पढ किसी पोल पडी  
 है । बाँ जळदी सी आपरी जेव म हाथ घाल्यो बीन रो काको  
 कोषळी म घालतो हुव जिया ।

जेव म च्यार पाच पुराणा पास्टकाड, केई भरजीपानडा,  
 दो एक परचूण रा पाना, एक परवार नियोजन रो विनापन दो  
 तीन बस रा बोदा टिकट केई भीत्य व्यावा री कूकूपत्री एक रफ  
 टाईम टबल, भर तीन च्यार जाग्या री तारीख नीकळथोडी लानरी  
 री केई टिगटा ही । जेव बढ डाकघर र लटर वाकम सी हलाहला र  
 भरी ही । कागदा न भक्का भडका जेव एकर भळे सँभाळी वृत्तो  
 बिसायती वुगचियो सँभाळतो हुव जिया पण भोभोती न जे चाद री  
 कोर दीम तो वाद टा सूँ भरघँ जेव र भाँभ म रेजगी री कोई  
 कोर चमक लोट रँ चाद रा ता सपना ही बठै ?

दूसरी जव सँभाली तीन च्यार चाव रा टुकडा दा अनामीन  
 रो गोळी अर एक चरम रा घर, मित्या । तीमरी जव दिवाळियँ रो  
 तिहूरी सी खाली पटी ही । घणी ही जूँ भळ आई, पण अणहूँत भाठे  
 सूँ काठी हूँवै ।

हिडदे छिनिज पर उठी ई भोळी बादळी नै प्रत्यक्ष साच  
 रो एक धीमो बायरो इ या ले उडसी वा कदई को जाणीनी । पीरै  
 काळ तो सासर जमाना वाळन नै ? बाँ चिलम पीवत चोकीदार नै  
 पूछपो—‘ देवा ! दस पइसा है तो दवनी एकर ।’

‘आज तारोख सत्ताईम हूगी गुरुजी हूँ ता आप हाळी  
 भात न अडोकेँ ज्यूँ अडोकेँ हूँ पैली नै । वा पटी हवडी आळीं में  
 पूना पडवाडी आख सी उघाटी’, बो नास्या म सूँ धुँबो निकालतो  
 बोन्यो पण बाँ भट एक दूसरो उपाय सोच लियो । अभाव रो  
 हळकी पून म उडनी बी बाण्ळी न उधार रो सजीवणी पर बा पाछी  
 खडी करणी चाही पण बाँक घरती रे बीज सी बा मन रो मन म  
 ही रही । घण्टी पाछी बाजगी ।

छोरा उपरबळी आप आपरी कलासा खानी भाग्वा जिया  
 हवाई हमलेँ रो वेळा साइरन मुख लोग घरा आग खुटा खाया खानी  
 दीडता हूव ।

बाँरो छठो घटा खाली हो । दम पाँव मिण्ट ठर वँ हेड  
 मास्टर रे कमर म बढ्या तो बो ही छारो हेडमास्टर रो भेज आगे  
 सहो दोस्या । बाँ एक कुर्सी ली अर एकेँ खानी बठग्या । अवेँ बाँ

बीन घोर गराई सू देख्यो जिंयां निमधी निजर री काई बूढ़ी  
 लुगाई पाडोसण रै जवान जवाई न चाव सू चितरती हुवै । छोर रा  
 दांत तांत म पाय दूधिय मोत्या सा फूठरा बी न लाग्या । बीर चर  
 रै पकतै विवेक साग ऊभी घभंता नै देल, बी साना बी घान्या घोर  
 चीडी करदी । हैमास्टर री मज पर एव दम रिपिया रो मैना सा  
 एक लोट पड्यो हो । बी पूछ्या बी न कठ लाघ्यो घा तन ?

बीन सिणियां म ।

काई कर हो सू बठ ?

‘पसाव करण गयो हो ।

पढै किसी म ?

‘दसवीं सी म ।

नाम ?

जीवण ।

जात ?

‘भाली ।

बाप काई कर ?

गुजरग्या ।

मां हुवली ?’

‘नही, बा बीं सू ही पला गई परी ।’

‘तो ?

‘दादी है खाली एक छोटी भाई घर बीं सू छोटी एव

बहन ।'

'घर रो काम पछ ?'

बाड़ी कर लेवा, की खेतीपाती ।'

"घर कठै ?"

अठ सूँ अघकोसेक पर ढाणी है, बठ ही ।'

हैडमास्टर एक मिण्ट ताई बीं रै चरै खानी जो बाकरघो जिया कोई विन्गी कळाकार अजतारी कारणो खानी । बीं रै मीयलै व्यक्तित्व रै त्रिकाण रा तीनूँ सूणा रस मूँ सरोबार हुम्या एकर । बीं रो विनो हँसी म, ममक विचार म अर मन अवम्भे म । तीनूँ हुया सागै ही सक्रिय पण दीन्यो खानी पैलो हो होठा पर—दूसरा दोनूँ ही, जीवण कैमरै मूँ वारै ही को भाक्यानी ।

'गावाश' हैडमास्टर उठ र थापी दी बीं रै, काल प्रायना रो टम पूछ र देखा पटो करस्युँ लाट की रो है फेर सगळ छोरा भागै तन एनाम देस्युँ अवार तो तूँ जा ।

छोरो सैज मुद्रा म चुपचाप नीकळयो जियां काई डप्टी रो पक्को टाकियो बीं री जरूरी डाक दर जावतो हुबै ।

गुफ्री रै उदाम अर अमूर्ज्ये चर रै पाणी पर अवार खुसी री एक तर इसी खायो फेनी जिया शीतळ मन् पून म सेंट री गुणघ । घाँस्यां रा हाठ बन् कर एकर दो मिण्ट व अज्ञानद म दूबग्या अगाध पाणी री माछनी सा । बींरी घाँस्यां घाँगे दा घण्टा पसां रो एक हृदय नाच्यो जीवन मोपटपा तू दो मोनी नीकळया अरनाक

र बराबर आ, बघ्योडो दाडी र भाडभखाडा म गमग्या ।

अवार दूमर घट मे सुगनो कुँभार बाँर सनकर नीकळयो ।  
कमठाणो चाल हो स्कूल में दो रिपिया रोज म मजूरी करै हो अठ ।  
मजूर तो आधी दजण नडा और ही हुनला अठ, स अणपड पण स  
चालती गाडी रो चक्को काड इसा, इ सो सुधो अर डरपोक ता ओ  
ही हो ।

गोडा ताई री घोती, घरे सियोडो कुडनो अर सिर  
पर दोवटी रो अगोछो पोपाक बम इत्तीसी । जूती फाई ठा हुन हा  
ली पण घणसरो धीम उबाणो हीं पगयळी टण र दुकड सी पक्की  
अर हाथ भळ मू नीकळच ठूँठिय सा । जाव पूरो, पाँच छोरी तीन  
छोरा अर ओजूँ किसो कपयू लागम्यो । बूडा बाप यागो । पाव  
पाव खाव तो ही दोनूँ टैमा म छव सान कीलो दाणा सूजा चाहीज  
लगावण हुव तो दो कीलो जादा । रिपिया मिल साठ बही धित  
वघ्या कठ ? सुगाई बिचारी जरूरत मू जादा तप तो ही जीवण  
निर्वाह' रो पाळो को रक्ती । बडो पापड पाणी पीसणो चोका  
बरतण मिल ज्यू ही करल कदास किया ही गाडो गुडक पण मू घाई  
रा धोरा इत्ता ऊचा अर घणा क पाँवड पाँवड पसीनो आव ।

ओ गुरुजी र पाडोस म बस ई खातर खनकर जावत न  
देख, सैज भाव म बाँ हेल्पो कर लियो बीन सुगना, बवतो ही,  
थोडो करवो पकडाए तो ?

'लाऊँ सा करवो भेज पर राख वो सामो खडो हुम्यो

आँध न आँख्या

मून पए उदास ।

गुहजी पूछ्या "आज तो कीं उदास दीसै सुगना ?"

इया ही' मन बायरो सो बो बोल्यो ।

उदास ही कोई इया ही हुया करै ? बात तो की न की  
हुणी चाहीजै, बता पारी मौज पडै तो ?'

'बाइ बताऊ सा, रोया किसो मिट उदास पएो ?'

'कुण जाएँ जे ई ढाळ ही मिटणो हुवै तो ?'

'टावरां री मा दस रिपिया रो एक लोट दियो मन, एक  
मठाणी खन सूँ लाई पाँच सात दिना रै बण पर बडो दोरो केई  
वगार बाढ र बीरो । बोली 'भाँवता बाजरी लाया दसेक नीलो,  
पण लाऊँ किया जद करमा मे काकरा ही लिह्या हुव ।'

'बयो ?'

लोट तो कठ ही टेर दियो ।"

भवे ?"

"भय किमो कुघो खाड करूँ, बात चूल्हे री है देखा सिइया  
किया जग बो ? टावर दा ताव म पडघा है, उवाळी कीं 'यारी  
लजाणी ही बाब नँ भाँव लाग, घोडो ईसबगुळ लेजावतो, छोरी  
एक दाए च्यारे सोवण भाळी है, विघ मिल जद स साग ही , कह र  
घो चुप हुग्यो ।

ई नँ बीन सूँ कठै ही उठपो बैठ्यो तो हुवैला, दखतो  
बठ ?

देख लियो सगळ ।”

कीन ही पूछताछ करतो ?”

ना ओ गुरुजी कीन हीं पूछ र तो उल्टो भरम गमाणो हे । ई टम म जेव म पड्य पइसे नै ही पार करल लोग ता साध्या पछ तो देव ही कुण ? लाप्योड साट नै ता ससपति ही सुगन समभ तो थोडूमोडू री तो बात ही छोडो । अठ पाँच पाँच स छोर की रो नाम लेऊँ, अर कीन वूझूँ भाखा देखाया ही कोई वो हाँकरनी, पालतू कोई गळ और पडे जोग री बात । कह परो वो मूँ लट-काया नीकल्या अर जाँवतो गुरुजी री नाडी म एक सूफान छोडयो ।

अदार ओ लोट हैडमास्टर री मेज पर देख घनं छूँ मधी जनी बाँरी नाडी न बनी थिरता अनुभव हुई । बान आपरै पुण्डरीक री हर पालडी पर, लिरुयोडो दीस्यो, वाह भगवान मून्त्या भ—कठ कठ ही तो किसीक लाला नीपज जिंका रो मान धरती री स बका मिल र ही को कर सकनी । हण जिको दस पइसा उघारा माँगतो हो जण जण खन मूँ चिणा खातर । वो चाँवतो तो आँ पइसा मूँ सी तिन चिणा खा सकतो हो ई जमान म आ निष्ठा न साधुवा म न मसद भवनां म अर न कायकारिणी री कुस्यां म ।

हैडमास्टर आगे दाँ आपरी जीभ खोली म्हार मनेग्याने ओ लोट एक गरीब मजूर रो हूणो चाहीज ।

किया ठा लागो आपन ? हैडमास्टर बोल्दो ।

दो पट्टा लिया है नहीं हूव तो ये आप ही पूछ लेया धारं चेलै नै ”  
पनवाडी जार दर कैयो ।

तो फेर हूवै ही ला ' कहर वै टुग्या बोभल  
धर शकाकुळ मन सूँ पण वारी चेतना री धरती में ऊँडी बँठी  
विश्वास रै साटै (पुननवा) री जड सूकी को ही नी बळकि ऊपर  
भाँवण री ऊँताबळ म ही ।

×

×

×

पट्टे बीस दिन री बात है, जीवण एक दिन उदास भर हूवा  
उटघोडो सो ग्यायो खायो जावै हा जिया कोई खाता पकडीज्योडो  
वाँणियो कचेटी री तारीव भुगतावण जाँवतो हूवै भापरा सामन  
गुरुजी टकरग्या ।

“भो हो, जीवण ? गुरुजी बोया ।

‘हाँ गुरुजी ।’

‘मैं सुणी ही तूँ मसपेण्ट हूग्यो हो सारसै दिना ।’

‘हाँ हू तो गयो हो गुरुजी, पण भान ही हूग्यो समभा  
पायो हूवम घात्र हूवण भाळा है । रिविया तो खर, हजार घाठ  
धमक बळहीग्या गुरुजी पण बाँ री मन हमी चिन्ता ही का है नी  
मस रो मत है, भळे हूग्यासी बँ ता पण नासा दाठ म परेसानी  
मोकळो उटणी पही—घा जरूर सूँघो पही ।

गुरुजी बो सानी एकर दया रह्यो जिया बानि घा बँम हूवै  
\* घा बा सागी जीवण सापन ही हूव जिक् न बँ जाणता हूव ।



बाई देखी गुरजी ?'

' देखूँ कदेई धारै जिस्यो ही एक जीवण म्हारै काळजें रै प्राणन वेल्पा करता बीं न न भूख लागती न तिस, न मिफारिण चाहीजती बीं न धर न कागदा रै कूटळी रो मोठ ही हो घीं म । बीं तो वात्स्या हा, वेताज अर वदाग । दूमरो जीवण घर मर है तो बिभ्यो ही पग बीर भूख तिस घर कोठ रो अंत न पार । इया मालूम पड बो म्हारला जीवण तो कठ ही मर ही ग्या साचूँ बीं रो तिसाई लास (भूत) सडका पर अपट्टडेठ बणी दीडती हुवली, ई र उपरांत नी जे बो सागी ही है तो जरूर बींरा पग चोरा रै चक्रकर, म घायडा है ।

मुणी अणमुणी कर, बीं खायो खायो चाल पडयो अर देखता देखता भीड न कठ ही ओभळ हुम्यो गरुजी बाको फाडता ही रह्या ।



## रोग रो निदान



“है ए सुण है नी ?” माँच पर सूतें सूतें सुरज घापरी बहू  
स्वमण न हेलो कियो न तो इत्तो जार स्यूँ हीं कै बी सूँ आखें  
घर री शाति ही दूटै अर न इत्तो घीमो ही क बो कमरें रै  
किवाडा सूँ बारें ही न नीकळें । वा चूल्है खनें बँठी भुक  
भुक'र एकाही फूँकां देव ही - लुहार री घूँकणी सी बण्योडी ।  
फोगा री अघ सीली लकड्या की बियागण री अघभोगी लालसावां  
सी पढी पढी धुख ही । रमोईघर अर भाट्या दोनूँ भरजा हा,  
एक घम सूँ अर दूमरी अँमुवा सूँ । एक इया जिवा कुटिल रो  
काळजो कुरापात स्यूँ दूमरी ओसरती छाँटा म पढी कोड्या रै  
पाळज सी ।

स्वमण बरस पच्चीसेक री हुवली, गोरी गुट । आँख्या  
मिरगी री सी, पण भाळी नहीँ समभत्तार । चर पर पाणी पण न  
परिस्थित्या री पून सूँ हालणभाळो अर न छिलरें सो इत्तो छिछळो  
हा कै लू रो पग पडता ही सूँकणो घुट्ट हज्यावै । पाणी री निरम  
ळना इत्ती आँधी क बीरो नीरोग चरो बी म आँधी तरें सूँ दीखें ।

आख्या म स तोप, पग बी म न आत्म न प्रकभण्यता अर न बा  
 भाग भरोस री भीता सू घिरघोडो इया अमूज ही जिया कोयला  
 खाण री आधी कोटडी भेंवतो कोई वूडा प्रमार मजूर । पक्की रल  
 री पटडी सी । हँडलम री हळकी नीली साडी जिकी मल र वारण  
 अबार खख चढथाड आभ सी गूगळी दीस ही, बी म निपटचाडी वा  
 इया लाग ही जिया दिन म नील आभ न छोड चादणी सँदे धरती  
 पर उतर अठ बासो जियो हूव । तरळ ही तो सरो बा पण हा  
 फियाड री झाडा सी परवार र पोत १ जुगरी आधी सू अभ करण  
 री लालसा म ।

सुरज रँ पैल हेल री कू पळ जाणूँ रसोइधर म छायो  
 घुँघ रो बकरो चरग्या हूव ऊगती न हो — बो रुक्मण रँ काना ताई  
 को पूगयोनी । की रुक र बो भळ बोयो — की जोर स्यूँ अरे बोळी  
 है काई ? सृणता ही बा घुँघ मू नरी रमोई स त्वाधी सी बार  
 नीकळी जिया पाखण्ड र जाळ न चीरती सजीव सेवा । पगाव खापी  
 आ र ऊभगी बोलो ' कयो काई चाहीज ? हूवम करा ।

काई करती ही ?

पूर मला पडचा हा किता ही दिना स्यूँ मसोता सा ।  
 माडो उकाळू ही ।

तो सावण सफाही नीवडगी ?

'दस पन्सा रो सोडो ही जद निठ पार पडघो है तो  
 सावण रा सिस्तर पइसा षठं सू आवना ?'

इन्ने म वरम दसक री बी री छोरी खनं घा र ऊभगी । मैलो सो जांधिया घर गूगळी सी घपरी पॅरण नै । वाली “बापू सन-लाईट रा तो पूरा पिचहत्तर पडसा लागै ।”

खलमण बोली ‘जा जा धारो काम कर रैण देपचायत न ।’ छारी मूडो उतार र गई तो परी पण जावती सुरजै रै माणम म उठी पीड न हिनायगी आपरी उगसो रै घोचै तू ।

मुरजै एक नाबी माम ले र आपरी आख्या एक छ्वात खानी करती कोई उपाय दीसै तो । उपाय ता को दीस्योनी, बी रै मिस जाणू अभाव री पीडा आख्या रै ग्स्ते बी री आखी चेतना में ऊतरगी हुवै घर जावती निगणा रा आना निगण बीरी आख्या री शिडक्या पर छोडगी हुवै । बण पीड नै भूलण एकर आख्या भीचली ।

हां ना का क्वता हा ? खलमण घोरै मै बोली ।

“बावडी रो चामो हुनो तो गुटको ले र पाठा खुलावण जावतो अस्पताळ बुलायो हो डाकघर दम सवा दस बजी । दो महीना हुम्या घापग्यो पन्नो पडयो अर्बे ही कदास लागे छूटै तो ।’

अवार वणाऊं पण ?

‘पण काई ?’

‘चाय है पर चीणी चिमटी ही को है नी ।’

अवार जायो तो हुव ही ली !’

‘हुती ता मनै किमी जक मे बेचणी है कठ ही का धारै

सू भाछी ही बा ?”

कीलो भाघ कीलो पाडोस्या सू ले भावती ।’

‘कीलो भाघ कीलो कर कर दो कीला पैला सू ही भाघ कर राखी है । इया धीरे किसी खाए है, घर घर भाटी रा चूल्हा एक सा है सू ७ मिन्हा ही रणो पड जिक सू तो पैला रणा भाछो ।

पाडोसण तो एक ओर ही है ?

‘है जिकी रा किसा कण्ठ मोमीज असल है है जिसी सुख सू बसा बापडी ।

‘जांचती तो सरी बीन ही एकर ?

जांच र बठी हू तो यान काई ठा ?’

उत्तर दे दियो ?’

‘मोर बी खन है ही काई ?

‘बोली चाली सू ता ठीक ही हुणी चाड़ीजती ही ।

भापर घर खातर ती बाम सो भाछी ही हुबैली घर हुणी ही चानाज पण मेळ मुलाकात घर सामाजिकता भी की तो हुता ही है ला ? देखलेण म गाघड रो गुठनी सू गर्द बीती—मेळ जोळ रो पाटी पर द लिखणो तो दूर बरतो ही हाथ म का भालैनी । बस पडता हाथ रो मल ही कोई बयान लेलेव । गरज हुबै जन् तो गध नै बाप इसी भीठी क मिसरी ही भख मार कोई की उधार पुधार मागस जद इसो चू ठियो बोड अगल र क खायो वियो बाळद बरसा रो ।’

‘तू कद गई ही ?’

दिन दमक पैला गई है ई खाड रें तुळी लगावण खातर ही । बोली “रिपिये आठाना रा खाडि रा दाण घा सू को बपराई जनी घर घर घार राखी है—मोटर साइकल फीटाई थारो ही घासरो वसी मोटर साइकल बिना किसो नाक भरै हो ? लोग न पराय घरा पर मनीदा करता न विचार ही को आवनी ? बी पछे में तो मळे वीने मूँढो ही को कियोनी घर न जीवत जी भळे कहुँ ही । मूँढो हारण सूँ मरणो आछो ।’

आपा किसा चोरी करर लावता हा उघार ही तो मागता न, इ मे मरण जीखे रो काँ. सवाल ? फूँफो नाराज तो भुआ नै काठी राखो तने ही सुणा देणो ही साफ साफ ।”

“एकर तो जी म घाई की सुणाऊँ पण जाचक री जीम घर उघार मागणिय रें पना म घणो सन को हुवनी । वा कह देवती, ‘कयो घाई ही अठे कण पीळा चाबळ दिया तन तो ? उघार मागणो बिय ही मेळ री कतरणी है घर पर घर खानी पग धरता ही ये समझे शरीर रें थर्मामीटर म माण रो पारो चण्णन कठ पडघो , ऊतर ही है की न की ।’

‘थारी समझ पर मने थडा है घर थारी भरदानगी सूँ म्हारो ठिगणो मन हरि रें पना सा ऊँचो पण तो ही हूँ तग हूँ म्हारे हाथा खीच र लायोडी गरीबी सूँ । थार माण स्वाभिमाण रें मम पर चोट लागे बी पीड रो मूळ भी हू ही हूँ, आ सोचूँ ज

म्हारे माणस म एव इसी टीम उठ कदे कदे ही, क रात भर नींद को ले सकूँगी ।

‘ ठीक है परण रामजी देवै बा सिर पर रों री किया कद राज मिल्यो? हाँ, आजरून सोचूँ कै घ मूळ में कठ ही गोटाळो किया है नही तो घापण इसी भणची ती दुखदार् रो लण्णैण ही काँई ? खुखी सुखी म घापा घाण्णै सोरा सुखी । महोन री पली तारीस न साँवळ्या री मर मूँ घापणी हूँडी सिक्करती घाय गयै रो भाग सारु की न की सत्कार हुतो ही, भोज ही तो पर सावळ चालती गाढो चीसा उतरी ही किया थ ही साधा ।

सुरज एकर बीर चर खानी इया दख्या जिया कोई गभीर पढेयरी पोधी र पान म घाय कूट पद न विचारतो व्यस्त हुवै । बीं न धी र गौर कपाळा पर घुध स्यू नीकळ्घँ माँसुवा रा रीगा इया लाभ्या जिया चदण र ना है गोळ गट्टे पर कोई बाळक ईनी घाँगळ्या मूँ लीका स्त्रीचदे अर सूक्या पध्द बारा हळका सैनाण पदघ्या हुव, बा रीगार रस्त मिठास बीर कपोला म बड और घणो हुण्यो हुव तथा घासुवा रै मिस नणा रो मैल बार निक्कळ जाँवतो भाँस्या न और उजास देयग्या हुव । अभिभूत हुयोडा सो सुरजो एक टक देख वोकरधो बी खानी ।

धीर धीर बीरा होठ एकर और हास्या । देखा देख घणी चौकणी खावण र कोड गांठ रो और गमा बटा ।’ सुरज आपरी दिम्टी बी र सरन सु डर चरै पर इया थिर करदी ही जिया कोई

“आपणी स्कून में ही है वो अवार, हुकम करो तो बुलाऊँ ?  
पूछ'र बंम काढलो ।’

‘जरूर ।’

चपरासी गयो । ई बीच म हैडमास्टर वो लोट आपरी  
जेव म घाल, एक नुँवो लोट बीं जाग्यां मेल दियो । मजूर आ र  
ळमग्यो चुपचाप । हाथ पग माथो सँ माटी सूँ भरधा । भूत सो  
लागै हो । हैडमास्टर पूछधो—

‘जवान, कीं गम्यो है धारो ?

“हाँ सा, दस रिपियाँ रो एक लाट हो, ’ उत्तर मिल्यो ।

धरे पडधो’क अठ ?

“पडधो तो अठै ही हा सा ।

आ ल लोट धारा, कीं छोर नै लाध्यो है अठै खरो कमाई  
रो हो धारो जद ही आयग्यो घर बैठे । पताशा चाढ ठाकुरजी रँ,  
आज ।

लोट वण ले नियो ई नै बीन फोरचा जिया कोई हिन्ती  
पढारो मोडियै आखरा रँ पोस्ट काड नै ओळखण खातर फोरतो  
हुवै । एकर हैडमास्टर रँ मूँड खानी देख्यो फेर अट स्थित प्रच सँ  
अध मिण्ट में ही लोट मेज पर राख दियो वण बोल्यो “ओ लोट  
म्हारो तो नही है सा और ही कीरो हुब नो’, कह'र टुरण लाग्यो ।

मुण हैडमास्टर कह्यो ।

ठरग्यो वो ।



‘लोट तो पारो गम्यो ही है दम रिपियाँ रो ?

‘हाँ सा ।’

‘तो फर लेव क्या नी ?

‘म्हारो हुया बिना पराय न हूँ हाथ किया घालूँ सा ?  
कह'र पाँच सात पल्ल एकर चुप होग्यो । फेर बोल्यो होळ होळ  
साचारी सी दिखातो पराया रा भागं कदेई लिया सा, जिवा भोजूँ  
को चुक्यानी भुँव सिर मूँ भळे किसा ?’

हैडमास्टर बी रं काळ माटी भरपं मूँ खानी देत बो—  
करधा जिया कोई सञ्चरित्र शासक सजीव सदनीति नै दस्यतो हुव ।  
ठीक, पाँच सात मिष्ट पला बण उठनी ऊमर रा एक पाना देख्यो  
जिक पर परिस्थियाँ री चित्रशाळ म काळरं हाया खीचीजती  
लकीरा घर वी मूँ ऊगत सूरज री कोर सो ऊचो घाँवतो एक स  
मोहक विलकतो चित्राम, रघुफालीन कौत्स री पुनरावृत्ति करतो मो ।  
अबार भळे एक बिस्यो ही पानों जिक पर भास्था र सागं उळझपोडो  
चिंता गरीबी अभाव अर उदासी री अणगिण लीका पण बा  
सूँ साव अछूतो, ऊमरतो पकतो विवेक ठीक इयाँ ही जिया पाणी म  
रतो पाणी सूँ विलग पुण्डरीक ।

हैडमास्टर अखान खोची पाछी “लोट भोळख पारो तूँ ?

‘भोळखूँ तो हूँ बी, भापनै सायत साबळ को समभा सकूँनी  
पण देख्याँ हूँ पिछाण मकूँ —एक कोर घोडी फाटघोडी है, तीन  
मिहा री छाप पर कीँ छाँटा है स्याही रा, अठ लहो साँवटभोडो

खासो मलो एक पासो की चिकणो है ।”

इसो मप्यो तुल्यो उत्तर तो सायत कोई उम्मेन्वार पी० एम० सी० म ही को देवतो हूसीनी । हैडमास्टर एकर बी खानी दह्यो बह राजी मन सूँ फेर सागी लीट काढ र नियो बीनै । बण बीरा घड खोल्या, सजग आह्या सूँ देख्यो बी न बोल्यो हा सा ओ ही है । जाणूँ गयोडो सास पाद्यो बाबडग्यो हुव बी रो ।

‘तो तेजा हैडमास्टर कह्यो । बीर चरै री चिन्ता रा माकळा सळ इयां निकळग्या जिण उस्तरी करता की कचलीडियै वपटै रा । आह्या म सरसता की ऊँची भावती लागी । बोल्यो, ‘जाऊँ सा ?’

हां । वो टुरग्यो आपरी सैज चाल म राजी राजी, खुण-खुणियो लाघ्योड टाबर सा ।

×

×

×

आ बात बीत्या एक अथ कुम्भी हुगी हुसी । गरमी रा दिन हा गरीबी न लागै हा दळबळू शासन म गुडागदी सा अचरा अणुभावणा वै ही पद्मआळानै लागता गधै न सावण सा सुरगा सुहावणा । बळनी—वासक रै सास सो चालै ही खाबी—टोरो दियोडी दडी सी । रह रह रेत रा कुरळिया ठठना जाणूँ निदाध मझूर आधी म, ससार रै खचेडै म ऊभो मोटी चाळपर कूँडे कूँडे मुरड घाणतो हुवै । टैम हुसी दो रै आत्रे पासै ।

गुहरी अर्ध रिटार हू एक शहर म जा बस्या । अबार वै

सिर पर गमछा नाहियां 'भान'द होटल' प्राग सोहन जी पनवाडी री बच पर बठा, नवभारत' म हू-योडा हा । पान सिगरेट घर बोका कोळा र गाहका री भीष्ट इमी जिसी सैत र छत्तै बारबर मणमास्था री । प्रचारणचकी एक जीप बठ आ र रुकी बी म आ चौधरी जवान ऊपर रा खानी रा चोळा हायां म घडर्चा गोळवा साफा बगल सा सफ्ट भव । दो घादमी और हा अपट्टेडेट । तीन तो बां म स्मू होटल रँ पगोषियां री नाळ चढग्या दवादब चौथो पनवाडी खन आ र ऊभग्यो ।

‘पधारो ओवग्सीयर मा व काई सेवा है म्हार लायक ? पनवाडी जिंया ही बोल्यो गुरुजी ही आपरी नस ऊँची करदा । बां दरयो जवान सो छोरो माथ भें बीचो बाच टाळ काटघाडी, स दूरें में खच्योडी तांत सी पतली अर सीधी प्राहिया पर काळा गोगत्म माया री मट्टुर्चा सा मोठक कॉरिंग टैगनीण री काठी प-ट बिमो ही बढिया बुगट घर बटार भांत फ-नेखां जूता प्राधुनिक घर अपट्टेडेट व्ह जिम्यो । बोल्यो, ‘ च्यार पान च्यार काकाकोळा घर दो पैकेट सिगरेट, ऊपर भिजवा देया है चालू ।

हुबभ अबार ला थे पनवाडी बोल्यो ।

गुरुजी बीं खानी देख हा दख ही ओकरघा जिंया बसकें पडचोडी घर तिहसी गाय तळाव खानी । जिंया ही बो टुरघो, बीं बोल्या, जीवण है काई ?

वस, गुरुजी खानी नम फोरण री ही देरी ही, धी र मूँ सूँ  
नीकळ्यो ओ गुरुजी ।" पगा र हाथ लगा र 'आज तो बडी कृपा  
करी, आप अवार ?'

"कई महीना हुआ है तो अठ ही, एक प्राइवट स्कूल  
म है ?

'पे सन हुगी हुसी ?"

'हा ।

मकान ?"

अठे खनै ही गोळ कटळै म एक कमरिया ले राह्यो  
है ।

तो आपरी काई सवा करू ? बोलो काई चलसी कोका  
कोळा, लस्सी का मँगोशेक ?

की नहीं ।

आ तो सपन मे ही की हू सकैनी गुरुदेव ।

'आजकाले काम काज बठ काइ ?

फैमित मे हू गुरुजी ओवर सीयर लाग्याडो ।'

दादी है ?

'दादी गुरुजी, ठण्ड दिना ही गई छव माडी छव साल  
हुया हुसी । ओर कोई सेवा फरमावो म्हारे लायक ?

'वस भोज है ।'

'तो है जाऊँ ऊपर अडीकता हुसी मन ?" , ,

हाँ, हाँ भल मिलस्या कणा हीं ।”

‘एक फुल मैंगोनेक दिए भई गुरुजी न ’ जावतो जावनो कह’र वो पगोघियाँ री नाळ ऊँचा चढग्यो । गुरुजी रो चिंतन चकोर दो मिष्ट एकर भावाकाग म गमगयो । एक छोरो बाँ आगँ मैंगोनेक री गिलास धर आपर काम म लागग्यो । दो मिष्ट ताई बाँन दरसणा मूड म बठा दस पनवाडी बोल्यो ‘काई साधा हो गुरुदेव ! गिलास ता लवो पछ तो मजो ही किरकिरो हू ज्यासी ई रो ।’

‘सोचण न काई रे ई छार नै आज देख्यो है छव बरसा सू बडो जी सोरो हुयो । गरीब पण गौरव गाळी, आपरी खाळ कर ईमानदार इतो कँ मोया ही वो लाघेनी ।’

‘काई लाग आपर ?

म्हारे पढायोणे है माळ्याँ रो छोरो है रे ।

एक जणो पून म पनामा रो घु ओं छोडतो बोल्यो ‘घागी की न कीं पाँनी है तीस गुरुजी, ई साथ ?

‘जद ही जन् ही कह र पनवाडी हँस्यो अर बी साथ ही पाँच सात जणा और हरया जिवा बच पर जन् र दया जम्योडा हा जाणू बाँ कोई कुकावमाळ र घरे भायोटा हुव ।

पननाडो की रुक र भळ बोल्यो, ‘गुरुजी, कवण न थे ठीक ही कवता हुस्यो पण म बा दिना री बाता हुबली जद धो सूली रोटी खा र लोटो पागो पी, तनमन सूँ तृप्त हुतो हुसी आज तो

आपन ठा रणी चाहीज के ओ पाणी रो जाम्या कोकाकोळा, फटा  
 अर बाके रे हरदम 'बायर लगायोडी राखे । शरीर रो खुराक पैला  
 सूँ मोळी पडगी हुवेली पण मन री भूल दिन दिन बघी ही जाव ।  
 मृग तृष्णा रो मिरगलो हुयोडो भाग । सान आठ महोना तो मनै  
 देखत न हुया हुसी हजारूँ रिपिया ओ हर महीनै जीमै अर डिकार  
 ही को लवैनी । अँ घोळ फूलिया जाट अबार देखया आप, सरपच हे  
 दो तीन गौवा रा हजार हजार आठ आठ स रिपिया तो अँ जीमल,  
 भस ही अर राती बास हिलगी, मीठो अर मैगो लोक अँ र इस्या  
 सूँड लाग्या है क, छाछ राबडी तो सूँध्या ही आनै छीक आव ।'

‘किया ?’

‘आँरा गाडा साईड पर मजूरा खातर पाणी नाखण  
 लागयोडा है दो घडा पाणी लाग, दस दस गाडा टूँकीज राज ।  
 आँरा टावर टीकर पेट म हुव चावै बार बारी मजूरी रोज मण्ड ।’  
 एक जणो बिचाळ ही बोल्यो जीवता री छोडा माँय माँय अरधोडा  
 रा पइसा उठे । घर मे एक टोवडी अर पाडी है बाछी बाई अर  
 पाडी बाई नाम लिखार पइसा लेलिया लोग । बाणियो है गाँव म  
 एक घर म एक नीम अर कीकर है छोटी तो नैमचंद अर कीकर  
 मल रे नाम सूँ हपना चूकलिया नमचन्द रा खुद खानी अर कीकर  
 मल रा ओवर सीयर सा ब री जेव खानी, अत्ला अत्ला खैर सत्ला  
 दोनूँ ही राजी । दो दा तीन तीन परजी मस्टरोळा बण अर अँ  
 अँगूठा छाप मरपच मही करै के पइसा म्हे बेटाया म्हारै सामने ।

पोठो पडसी बो इया ही पोडो ही पडसी, कीं न की घुड ल र ही उठसी ।'

धोकाकोळं रो गुटको लेवतो लेवतो त्त नं एक दूसरो बोल्हो, हा ठाक है पण बापडां घां एकला नं ही नयो दोस देवो एडी मू लगर चोटी ताई सगळ एव ही हाल है । हवा ही इसी है भवार । भोवरसीयर, इजीनीयर एक्सियन घर चीफ ताई घर साची सुणो तो मिनिस्टरा ताई सगळा री पांत्या है माजन सारू । घूस घर भिस्टा चार पनपावणियां जिय जिंदावादमू, घर कूडरो विरोध करणियां बठा है मणरी माख्या हुयोडा निश्चष्ट । घण ईमानदारा में तो न द आळी हुव । शासन री बाळटी में पडघं मिनिस्टी र दूध म स्यू ईमानदारी री माखी न सता इगी बगो फकै चारै क भळ बा बाळटी खानी मूढो ही का करी । मकडूं मिनिस्टर राजा म्हाराजावा न छेड बैठव इसा हुग्या आ म जाण भबं धिगाण ही कोई अलि मोच र अंधारो करै बीरो तां ताई उपाव? वस्त उलांगो दियो, घांधा रा हाथ बुजाग्या टिकग्या हा व टिकग्या घर इया, स वमडी कहै ज्यू काई कोई नही हुव इसी काई बात है ?

खर थे लोग कहो चा ठीक ही हुसी घणखरी पण जठ ताई ई छोर रा सवान ओ इसो नटी हुणो चाहीज, पछ स भई जळ मे मूत बा जाणै, म द पून मे धूजती लीं सा गुरुजी बोल्ह्या ।

'अच्छा बाबा म्हे कहो म्हार खन रहा पण भवार ही अग छव हजार म एक मोटर साइकल घर पाच पाच हजार मे

साधक नाटक री टीकी पर । सुरज री सुख सोधती कळपना बपोती  
 री पाँख्या बीर बठोर प्रत्यक्ष, तोडणी । बीनें आपरा विचारघोडा  
 सुख तावडै रै गड्डे सा गळता लाग्या । बो सनेह पदचाताप सो पडयो  
 हो माँच पर विचार मग्न खाली टुकर टुकर देख हो बीं खानी ।

‘काई दखो हो म्हारै खानी काई जिकी को जचीनी थारै ?’

जची ही नही, ह रू म बठगी वा, बळत बूँदिया म  
 चासणी वठती हुवै ज्यु ।

‘मतळव ?’

‘मतळव, हूँ देखूँ थार मूँढे खानी खाली ई यातर ही कै  
 बदास थाग होठ एकर और हाल तो ।

‘फेर ?’

बदास म्हारी आधी चेतना नै की उजास मिल । सुरज  
 एकर पमवाडो फोरघो फेर तकिर्यै रो सहारो ले’र बठग्यो बोल्यो—  
 “मैं सोने री खोळी सूँ ढक्य जिकै जर नै कँजूस रै धन सो  
 मन री तिजूरी म लुका र राख्यो बी न त बिना चेष्टा ही खोडँ कर  
 दियो । मन आज ठा लाग्यो कै थारो माणस योगी री दिस्टी सो  
 कितो पारगामी है घर थारी चेतना कितो निश्चय—बाँ पर हूँ म्हारो  
 कादो फेंक फेंक बाँ न काळा अर कोभा करण पर हाथ धार लारै  
 लाग्योडा हूँ म्हारो भला किया हुमी बता ?’

“कमी काई धान है ?

बात, मूळ में गोटाळो कियो है मैं ।”



“किया ?”

लिखा महीन री महीन माँ न देवतो ही हो ?

ही ।’

“बीं रो दाळ दळियो, गाभो भीरडो जिको चाहीजतो  
घावतो ही हो ।’

‘ही

तो फेर ओ फटफटियो (मोटर साइकल) घायो कठ सुँ  
ओ मूळ म गोटाओ नही तो काई ?’

‘तो पछ घारो इसी जागती समझ री तिहणी, लाभ री  
लौकी र पजा मे आई किया ?’ हलमण री भाख्या म उरसुक्ता  
ही जिन सुँ घोर तेज हुगी ।

भगवान जाणु ।’

भगवान र जाणन म ता गाल ही काई ? गोगळो तो हे  
थापणु खानी । जाण र जीवती माखा गिट बीं रो काई ? घार  
मायलो भगवान् तो बतावण न तयार है थ बीं र मूँड पर हाथ  
जरु घर राहयो है, बो जाणु है पणु बोल किया ? विवेक री जीभ  
न तो थ कुत्रस र डर सुँ दम्भ र दाँता नीचे दाव राखी है—ओळमो  
भगवान पर । छेकड किया ही ता घार मन री धरती पर फटफटियो  
सावण रो बीज ऊयो ही हुवला ?’

सुरजो काई ताळ बनपटी खन वेसिंग र तार सी उठी  
नता घर तिलाह पर आणळ्या फर बोकरघो जियां कोई टाँटियो



वी नै सू ।’

‘गोळी बा ही ता हराम री हो नो ?’

‘किया ही समझ ल ।’

अर बीं दाएँ र गारँ सू थारी सूख्म चेतना री भीता  
चिणीजी ?

समझग्यो धिरियागी अन सू मन रा सम्बन्ध । बण  
मन कयो पाँच साठी पाँच हजार म एक माटर साइकल तू ही  
कयो खरीदल नी, साइकलडी रो तसिया मिट खाल री सवारी ही  
कोई सवारी हुती है ला । मै कयो, भाईडा, तिणसा म ता दाजा  
पार पड नहीं अर ऊपरलो पइसो न म्हारी माँ ही चाव अर न म्हारी  
लुगाई ही । साची स धा है कै मन लेणा ही को आवैनी ।’

हृदयमण खडी खडी एव मन सू इयाँ सुएँ ही त्रिया  
परीक्षित री समझ चुकदवजी सू भागवत री कथा ।

‘बो बोल्या थारी माँ अर थारी लुगाई युधिष्ठिर रँ वस्त  
रा कोई जीव आयग्या हुसी अदार बाँरी समझ री जरूरत नहीं,  
सोरी रोनी छाया अर भजन करो बस इतो घणा बाँ न अर इया  
समझ जन् स मौका आया, नरो वा कुञ्जरो युधिष्ठिर ही को  
चूकयोनी तो आपा जिसी पबोडी तो है ही किसी चकारी म ? तूँ  
सोच दुनिया म जिता विरोडपति अर अरबपति है, ब मै खरी  
कमाई स्थूँ ही बिसा बध्या है । स सरकार री चोरी करै बईमानी

घूस, घोखाघड़ी जिसी ताई आवै करे । बडा बडा मन्त्री जिका काल ताई टायर री गाधी चपला घीसे, खल उडावता साथे खाया फिरता, आज बाँरी काठघा आगे कारा ऊभी है । आयकर (Income Tax) जिसी चौड़े री चीजा जीमग्या बिना दात हिलाया थर वारो कस ही खाँगे को ह्योनी, तो आपणा पद काई हुसी ? हा सूदण पर बीन मूतण नै जाग्या तो राखणी ही पड । अबार तो जुग ही पराई जीमण रो है, जठ मिले थर जिया ताव आवै । तूँ सरकार री बात कर, बी म है तो जुगाया रा जायाडा ही का और ? सरकार री तो पानी है चोरा सागे थर बे चोर है चौड़े रा साहूकार रामनमी धाडघोडा, दुनिया हाथ जोड़े बाँन थर बा सूँ मिले र आपनै धन मान । साची पूछ तो घणखरी जाग्या चोरा रो समूह ही सरकार है अबार तो—काँइ देग थर काँइ पर देग । धारो माँ थर लुगाई जिसी आज जे घणखरी धरती हुती तो आज न चन्द्रमा ताई लोग पूगता थर न धरती पर अबार रो आ बभव ही दीखतो । म्हारै बीरी घाता रा गाभा घगोघग किट बँठग्या, स्याणै दरजी री नाप र भीडघोडी पोसाक सा ।

‘ बठणा ही हा बे तो मनरी स्थिति तो बीरो कवा लणो मुरु कियो जिके दिन ही बणन लागी ही । घिराव मुरु ह्या पछ गाँठ री घक्क एकर गूँगी ह्योडी तक वोकर बाँघ्योनी बिल्की सी—  
ही कर ?’

घाय मिष्ट अन्नाज सृजै एकर आपरी घाँसिया बन्द करली

पण आगळ्यांची वीरी, बीर लूच घर अळूश्याड बेसा पण चान बोक्ती  
 देसाळी र ताता सी—जाणू व मनरी बाखळ म गिण्डघोड बचर नै  
 एक परवाडे कर वादण रो प्रयाम कर ही । बाखळ रा विकार  
 नीसरधा खाली बाखळ ही घाडी को लागता—घर रो रूप भी  
 बध । बण घाट्या पाछी खोलदी, बी नै मार की हळको हुनो  
 लाग्यो ।

बा बोल्यो आत्म समर्पित अपराधी सो “पर बयारी  
 स्वमण मै ही घूस घास म आल छान पटकटिय रा जुगा” क्रिया न  
 क्रिया कर ही नियो । घान कड दिधो लोन लियो है सरकार स्यू ।  
 मोच्यो मस्ती स्यू आस्यू जास्यू कवतो कवतो सुरजो एक मिण्ट  
 रुक्यो आख्या घोटी भपगी मांच म पड्ये आत्मसरूप रो  
 अणुचीनी स्थिति स्यू । स्वमण की पूछ बी स्यू पैना ही बो बोल्यो  
 मस्ती मिली तो मी मिली क मांचो पकडीज तो गयो पण  
 धूटसी क्रिया ई किता मे पीजरो मूक र खलरा हुग्यो ।

सरकारी लोन लियोडा तो लाग क्रिया ही चुकावे ही पण  
 थे जिक द ग स्यू लान भेळो क्रियो है, बी स्यू सायत जलम जलमा  
 तर म ही विण्ड छुटणो आखो है कुण जाग किता कमरा अर मांचा  
 बळना पडमी नीराग हुवण खातर ।

मुरजा टुकर टुकर सामो देख बाकरधो कसूरवार सो । बा  
 भळ बोना ता अब आग खातर की तो सोच्यो ही है लो ?

तू ही बता ?

‘ है जिस न जिता बट बेच बाळ दो ।’

‘ फेर ? ’

‘ फेर, पइसा री ही तो बात है ? थाने की घण गरीब गुरब खन सू सता र लिया चेत आव घर बीरी दुखस्या री छाया धार माणस पर ओजू छायोडी हुव बी नै की मिस बँ पइसा पूगता करी, नही जद सगळा रो गाया न घास कचरो नाँख मनरै प्राँगण म भेळो ह्योडो ओ अळमीडो मेटो । साइकल आळी आपण तो, घर जे बा ही नहीं हुव तो उपाळा ही आछा पग निरोग चाहीजँ वाया म पाप नही पनपणो चाहीज ।

ठीक है, भा ही करस्यूँ अब घोडो चावडी रो पाणी दिखावँ तो ठीक है ।’

अवार लाऊँ, लिघाऊँ फीकी ही ?’

पियोडी ती कदेही को है नी, पण जोर काँई गुटको लणो ही पडसी जद आधीन हुम्या बी रै ।

‘ तो जीभ री गुलामी छोडण री जी म ओजूँ कम है ? जिजा चुळू चाय पर दाहू र एक गुटके पर अर सिगरेट री घाँधी छूँट माथ मर ब न धरती रो भलो कर सक न आपरो ही । परायो घास ही क्यों राखे बाँ स्यूँ ?

ठीक है भई भूख म किवाड ही पापड अवार तो लाव एकर है जिसी ही पछै कोई और इलाज करस्या ई रो ताब आसी तो । इतै में माँ रै आवण रा पग सुणीज्या बाँन । इलमण रसोई

खानी नीकळणी । मांच खन एक पीढो पडचो हो । डांगडी टेकती मां वी पर आ र इयां वटी जिया रगमच रो पडणे पडता ही पैल पात्र रै गया दूनरै री बारी भाई हुव । एक हाय बीरो थोडो थोडो घूजतो हो चालती मोटर म स्पीडोमीटर रो सुइयो घूजतो हुव जिया ।

‘पग किया है रे ? बा हाळ स बाली ।

“सावळ ही हुवलो मां पुरी ठा तो पाटो खोल्या ही लागसी ।

डाकरी लिलाड ऊचो कियो खैर पर सगळ भोद्या लांबा सळ ही सळ हा अनुकान्त कविता री लणा सा पण हर सळ म ही आस्था री एक एक कथा । बाली बेटा ‘समभ जन् तो ठा चोखी तरै सूर् लागणी ओजू समझ्यो नही हुव बा बात पारी है ।’

सुरजो मां खानी इया देखण लाग्यो जियां अणचीत्यै भोळभ सूर् डरतो दून त्योरी चाडघ ताजीमत्तार खानी दखतो हुव । बोली, सूर गधा कुत्ता भर कागला जिका मळ खाखा आपरो पेट भर तूर् वान घाखा समभ का मिनख न ?

मिनख न ।

‘अर जे मिनख ही मळ खाखा आपरो पेट भरै तो ?

तो वी जिसो हीणो घरती पर सायत ही कोई हुव मां ।’

अर जे म्हारो ही घेटो ई चेष्टा म लाम्योडो जूण पुरी करतो हुव तो ?

सुरजै री आख्या फाटघोडी तेडां सी खुनी री खुली ही

/ आंध न आंध्या

रहगी, अर होठ गूँद सूँ चिप्योड लिफाफे सा जाग्या सूँ ही को हान्यानी गरीर री गत इसी के काटे तो खून कठ ?

डोकरी री जीम पर भळे सरस्वती बोलण लागी— म्हारै उतर में लिट, मळ खावण सूँ तूँ इत्तो राजी ?

सुरज रो मूँ, पोचीजतें काकडिये सो पीळो अर दोपारै रै चीन सा साव उदास । आख्या, तिसाई सीपट्या सी करदी मा रै सागर सूँ उठी बाणी री बरमती बादळी खानी ।

‘ धारो छोट थके रो बाप पूरो हुम्पो ? ’ माँ बोली ।

‘ हाँ । ’

‘ मैं तने चरखो कात कात दाळदळियो चोका बरतण कर कर पाळघो पण कीं भागै ही न हीणी भाखी न हीणो दाणो ही घर म बडन दियो म्हारै बस एक ही लोभ हो, काई ?

सुरजा, मूँ बडसूँ जटकत बडय रै भाळ सो किया, सामो दख बोकरघो । काई कहै कीं को समझ्योनी । इसी तो नोकरी खातर गयो जण इण्टरव्यू म ही को हुईनी की न कीं तो जवाब नियो ही । माँ सामो दख बोकरघो गलो काच खानी देखतो हुवै जिया ।

डोकरी बोली, “म्हारै एक ही लोभ हो बटा, क लोग कठे ही भा खर्चा न करै के रांड इसी ही, बी रो पूत भाद्यो हुवण रो रस्तो हो किमो ? अर त ? ” एकर भाधी मिण्ट बा चुप हुगी पण एक पात्रोण रो भूखम्य बी रै होठा री घरती नीचे दियोडो हा बीं रा कीं



आसार होटा पर इया अनुभव हूवे हा जिया सीममोयाफ मे भावण  
 आळ भूचाळ रा लघु कम्पन । मुरज रो मू रारदी लाम्योडे बीमार  
 रो मो डीलो पडग्यो जी म भाई गामो ओल् ।

वा बोली पूर विश्वास सू ' देख म्हारी जवानी ढळगी घर धारी  
 शुरू हुई है, है तो साव पीळो पान है कुण जाणै क् थिर पडू ऊमर  
 री ढाळी स्यू-न जीवण रो ह्ख भर न मरण रो चिंता तू ई डग  
 सू पसो लेव बो मळ है भर मळ खावै बो सूकर बूकर सै की। मळ मू  
 तू धारा सपना भजोगा चाव धारी भा समझ-मै जिमै खिर त  
 पान र आस्तिक प्राणा पर मळ री गघ राख बाँ न दूपित करणो ठीक  
 ममझ भा धार जचता हूसी पण जिक बोझ न म्हारो बूढो प्राण पगु  
 ढोणो को चावैनी बी पर त अणचाया भाठा लाद असतोप सू मार,  
 एस बदळ री आशा मनै बो ही नी । म्हारो चायो ही हूव ओ  
 कोई नम का है नी पण कम सू कम काळ खानी मूढो कियोडो  
 ओ पलेरू उड इत्ती ताळ ता धीरज राखतो । चढता ही ढाण पडग्यो  
 खर कोई बातनी सफर लाबी भर रस्तो साव साँवडो है, पण इया  
 मल सङलो नही ।

मरज री जीभ सूकगी रू रू म इसो घाघात लाम्यो जिक  
 री पीड मन प्राण म दया पूगभी,जिया पाणी पर तेल रो तिग्वाळो ।  
 खाली बी र मू सू इत्तो ही निकळयो क ' अक्क माफ कर माँ  
 भाइ द नचो राख धारो नियोडी चनना न बस पडता साव सस्ती को  
 मरण हूनी ।

“नहीं मरण दसी तो जी सी, पळमी पूनसी घर मरती नै  
मन ही उबार लसी ।”

डागरी उठ लही हुई, बासी “न भई जायदा, वंटा काई  
हृदा घाना प्रपना ठर रा पूँसा कत ता कातूँ अर हाळ होळें घाल  
पही घामो पून री पाँस्या पर वंठी घण बरसो बादळी सी ।

‘माह ! कमल री बाँपती बँवळी हाँदी म बिस्ती घगूट  
मखसूनी घर सषदा ठररठ समान मवान म बिस्ती नीराग निष्ठा”  
मुरख भाँस्या वद करमी । बीरी अगाध नीर री प्रेमण माछनी  
पिनन र इग मागर म एरर दा नीन मिळ सातर दूवगी । मोच  
हा बा क जीवण री म्हागी अणमोन घाँस्यावाँ न कायनाँ मट्टे को  
दषुनी घर न म्हार घाँगल मे ठगी नाहीं अर अयोध मानवी पोष  
नै मट्ट री गाद मूँ बाँपनाँ घर मरती हीँ करूँ ।

‘तबो घाँ घाय,’ बीँ न सुगोउलो । घाँस्याँ रोधी तो माँमनै  
रगमल लहाँ दीगी । बीरसाँ मूँ दूटगायँ रोमल गाँ म म क  
उदगाँ एररट्ट रँ निरनँ पलाँ ताँ घर नगाँ म मुँवोँ मून गाँबरता  
गाँपो बीँ म । रगमल बर गाँदी कर निँयो—बाँगी साँरसाँ रो  
वाँपो रो हाँ बीँ म । हाँटाँ रँ मगाँपो बाँटाँ बर हाँटाँ एरर  
गाँबीबाँसाँ दल बाँबरगाँद बराँब हाँ बाँ बाँन गाँबी गाँबी ० ल्यो ।

‘दिडीँ मारोँ ” भाँई तोँ बनीँगे हृगाँ न म टाँ घर न दूष  
रीँ”, रगमल मुँलधाँ ।

“दहीँ इबाँर” मुरख उल्लर दिधाँ । एरर निरमट्ट मगाँन

घी र चैर पर खेलण लाग्यो । खाली कप नै नीच राखतो राखतो बो  
 भळे बोल्यो, जे आ ही न मिल तो कोई बात नी अब भीठ र मल  
 पर मरण आळी मारया उडगी तू समझ । वा खडो हुयो कना पर  
 बागसियो फेरघो अर फेर लकडी र आसर लगडावतो अस्पताळ खानी  
 दुरग्यो—अळसाय कमल सी ऊभी दो आख्या अपलक बीन देख  
 बोकरी ।



## बोध



शहर र उतराघ आचळ म जठे अबार पुराणो शहर आपरे बुनापे री सांम लेवतो इलाज करावतै टीबी र मरीज सो जिय, बठ एक गळी है इसी सांकडी जिके म आधुनिक जुगरो जोडो घराबर घराबर को चाल सकैनी घाग लार हूर भला ही नीकळो । वाही भागरी भळे हरदम ईली अर कादें सू भगे । ऐंठा कागद, केळा रा छूंतका आम्व री गुठ्या अर टावरां रा पूछ्या पूर ई नै बीनै पगा म आ बोकर । दिन मं ही खल लाग्ये काचमो घूँघळो, घूँघळो दीख ई म जद रात रो तो घठे साव आघळ घोटो ही समभा, ई रो सही अदाजो ता घठे आवण जावण आळो कोई भुक्त भागी ही सावळ लगा सकै । घां हाता घठे सोरेंसाम रेंण सू कुण राजी पण उपाव नहीं हुवे जद अणसरती मे रण ही पटै । खर, इ री ई अवस्था सू कीने ही असातोप हू सकै पण नाम सू सायन ही । शहर म माही गळी, अबार आजाद स्ट्रीट रै नाम सू आळखीज ।

भारती बाबू रा मवान ई गळी म ही शोभा एव । घर घाग भस माव जितो एक कमरियो है । माय एक रसोई समानघर

सोवण उटण न एक कोटही शबर घर, बी सू चिपतो हो निबरण घर भर मुदो मावै जितो सो भागणो । घाठ रिपिया मरणो गुरु कियो हो कदई ई म, अवार महीन रा पद्र रिपिया देणा पड । ओही मकान जे कोइ अवार नुव सिर सू लेवै तो चाळोस म ही हाथ आणो ओखो, ठोडा र हाथ लगा र सो दो सो पागडी रा और देणा पड । भारती बाबू पच्चीस साल सू ई सागी मकान म ही बिराज ।

पांच छव टाबर बूढी माँ घर सुगाई । सियाळ म तो भजे ही इत्ती दोराई की हुवनी । भूमख म जची कळ री पळ्याँ सा बराबर बराबर दावै जिया ही पडघा रव पण ऊनाळै अर चौमास, केई दफ जद अमूचो हुव साँस तो का नीकळैनी, घाल्योडा जादा है ई खातर, पण बाकी की वचनी । बी बेळा कदे कदे ही तो इत्ती मनम आव क ई रोज र राणी रोग सू तो रोही मरणो लाख गुणो आद्यो पण शहरी छत्त रा मीठा टोपा जद कद ही बाँरी जाभ पर पड तो वै दो च्यार घडा री सगळी बेचनी बीसर आही सोच क जीवण री सज सम्पूणता शर म ही ऊपजै । आवण न तो खर, मिनखा शरीर है कदई रीस ही आवती हुमी अर बराग ही उठतो हुसी पण जाव कठ ? अथ रो धुरो भागरा इत्ता पोचो अर पतळो क बो गिस्त र गाड न सोरो सोरो गुडका र घणी दूर का सत्रासकनी । रिपिया बाँन तीन सो मात्नी तान सो मिल बी म इत्ती ही ताव आव जितो अवार है ।

/ प्राँध न प्राँस्या

पढ्याडा बी० ए० घर दास्त्री है । ऊमर पचास रँ अडे गड । मार्य मे रू षोई सो, टाट चौकणै घड री ठीकरी सी, घोती घोळो घर चश्मो । सूकपोडे खेलरँ सा हाड यारा यारा चिनक । महारमा गांधी मरचा पछ राष्ट्रपिता हूणै जोग कोई हो तो अ ही, परण उम्मीदवारा री लाबी लैणा म लोगा धान वाड मेम्बर ही का हूण दियाती । घ घा घाँरो छव महोना कोइ अर बार महीना कोइ बिचाळे कदेही दो महीना नागा ही ।

मोर म घाठ बजी आज एक समाजवादी नेता आयो हो । अँ अघ घटा पैला ही ठेसण गया परा । सी सवा सी आन्मी और हा बठ । अगुवा बाँ म भारती वावू ही हा । खुनी जीप म जुतूम निकाळधा । अँ गारा लगावना 'पटवद्धन ?' भीड सूँ एकँ गाय भेळो आवाज उठनी 'जिन्नावाद अ फेर फणा तरणा हूर कैवना "को चाहीज नी आकास गुँजतो आ घूसखोर सरकार घर अँ भळे मोप रो मो छिन चढना कोई न कोई नारै री सुष्टि कर बीं न इवा में फकता । नारा लगावनी देळा और निलाड कठ अर वनपटी री नादा एकर तण र ऊपर उठ ज्यावनी जिया माँच री खचीजती रेखावण तण र ऊपर आवनी ह्य । छेकड औरँ गळे री आवाज इसी गायो पडगी जिया नगोनग कई दिन रानीजोगे म मायोडी की अगुवा गीतारण री । आघेव गहर में चक्कर काटपा हूसी आँ, फेर अमिक पुस्तकालय री उदघाटण फेर कई रकम री थापो अर उरवा रिक् घूमरा पछे आंगो बरमां सूँ रटघारटायो सारगमिष्ठ भाषण

घसीज्याड टप रिनाड सो । प्रोग्राम पूरो हुया पछै बान खाणों पीणों  
करा कह बारै वजण लागी है ऊपर सू जद आप कमरिय मे  
पधारचा है ।

आवता ही एक बमार कुर्मी पर बठ 'माया' म उलझ्या ।  
एक पसवाड 'नवभारत पढ्यो है अर बी खन हों सरिता । माया रै  
पथ मे पैर रो पादडो ही पूरो को चाल्या हुसी ती तीद इसी आडी  
फिरी क माया हाथ सू छूट'र नीच पडगी अर अँ भाग र खाली  
जेवा सपन लोक म जा पूग्या । पूगणा ही हा अँ अवार हो आध  
सू घणु गहर रो चक्कर काट्यो है, ई खातर पीण्ड्याँ पिण्डहारी  
गाव ही नारा पैला तोपजा तगा हू हू र लगाया ही गया, ई खानर  
माथे री नाडा अब पधियो कुळ ज्यूँ कुळ ही । शरीर अर माथो  
शेनू यक्याडा हुव जद मनन तो कठ न कठ नी द र लोक म लुकणो  
ही पड ।

आख लागी न दस मिण्ट ही का हुया हुसीनी । खट खट  
री आवाज हुई अर फट बारी आख खुली जिया टी टी री बतरणी  
रै खडक सूँ की सत मूसाफिर री खुलती हुव । उठ र वारणो खोत्यो  
तो एक साग ही सत रज तम र मानवी आकार सो जीवती जागती  
तीन मूर्त्या दीसी । बोल्या, आमा पधारो ।

ब तीनू एक दगी पर बठग्या । दो ता धर री मुर्गी आळें  
दाई बार सघा ही हा । तीसर खातर बै पूछू ही हा, बी सूँ पैला  
ही वण आपणे परिच पुराण खान नियो ।

/ आंध न हाँल्या

हूँ साप्ताहिक 'जवान' रो मपादक हूँ सा ।'

'ओ हो । मनोज शर्मा आपरो ही नाम है ?' बाँ बह्यो ।

'हाँ सा ब,' थोडो रुक'र बो भळ्ळे बोल्यो, 'हूँ तो मिलण

र मिस आपन बघाई दवण आयो हूँ ।'

'बघाई कमारी सा, हूँ ही सुणूँ तो सरी ?

'सामन बघाई करणी ता बेजा है पण साच सूँ मूँडा ही

तो वो माडीजनी कणो ही पडै बोतो । आपरो भापण आज बडा

जार रो रह्यो । भापा पर कमाण्ड अर कठा म लोच कह जिस्त्या ।

हूँ आज ज नही आवतो, तो बडो निरभागी हुना । मै बीर खासा

धम नोट करघा है 'जवान' मे देस्यूँ । आपरो एक फोटू अर थोडो

सा जीवण परिच चाहीज मनै । हाँ क्यो मा आजादी पछ आप

कन्ट्रै जेल जात्रा भी करी हुवैली ?

'एकर दो बार नहीं, आठ बार, जिक म तीन बार तो

दो दो महीना रो ।'

भूख हडताल पर ?

"दाळ रोटी सी, आ तो आए दिन रो बात है, दो च्यार

बार तो साल म समझे ही, बिया केई बार इक्कीस इक्कीस दिन रो

गिडकी चढथोडो है कह र पछ बाँ आपरै डाव हाथ रो मरडू

बघ्याडी भजूणी निखाई बोल्या 'आ लारलै साल लाठी आज म

दूती । पर आम्ह्र निपाई गोहूँ रै फलकै मो लूगो माघो देला र

कह्यो दस्तो अठ एकर आठ टाका घाया अर ई पग र तीन महीना



पक्की पाटी बँधयो घोर किता किमा बनाऊँ घापन, ऊँवळी में तिर  
ही दे नियो जद घमीडा रा किता बलाण है ?'

'कमाल कमाल काँई भालमी हो घाप 'राणा सागा घाळ'  
काँई शरीर रो कोई किस्मो गायत को है नी । लगन भर छँए री तो  
गदे मूर्ति हो घाप । इमै निस्वाथ जननेता पर तो समाज नै गव हूणो  
चाहीज ।'

पण सरकारी पग घाळा तो, मन खाया हीं को घापनी ।'  
घाप किया बाँ न तो टुकडो चाहीज भर मिल कुरस्या  
खानी सू ई खानर ब ना भुप हो सा, घाप घायाय मूँ बाँन काँई  
टुकड रा हक तो बजावै क नी ?'

'दखा ओ कदारो कः ताँई धिः ? अबार तो छोंका घाँ  
गोधागिःणी मिःया रै माग रा ही दूःधी समझी ।' इत्तो कह र  
बाँ घर म स्तूँ तीन घाय, भर छोर न भेज र बिस्ता ही पान भँगाया ।  
द दिरा, बिदा कर बठ र सावळ सुँभा हीं को हुयानी का खट खट  
भळे सुणीजी । माघ म एकर तो डाँग री सी लागी पण करै काँई ?  
घाप कमाया कामडा कीन दीज दास वारणो खोलता ही एक जनानी  
अर एक मर्दानी तस्वीर पुरुष अर प्रकृति भाळै जियाँ दूत म दरसण  
निया । भायो अबार तावड म किया पधारणो हुयो ?'

भारती बाबू बाँ सूँ साव अजाण ही को हानी, पण आँगळी  
अर अँगूठ मा इत्ता नटा ही को हानी । आदमी बोल्यो 'अगलै

महान चुनाव है नगर पालिका रो, आपर बाड सू आप ( लुगाई खानी इसारो कर र ) सुनीला शर्मा खडी हुसी । ' तै म बा खुद ही हाय जोड'र बोली, ' आपरो संयोग हुमी तो क्यों नहीं ?

जरूर जरूर पडथै संयोग रो किसो अचार हुसी ?

बा की मुळक'र बोली, "नही, नहीं पूरो भरोसो है आपरो तो आपरो भाखीवाँ हुसी तो मनै काम करण नै छेत्र अर आपरो अनुभव, दो लाभ एक साथ मिलसो ।

' देखो बोसोस तो आ ही करस्या कै जीत रो माळा आपरै गळ म ही पडै, पछ'स कुण जाण ऊँठ कीनै बैठतो कीन वड ? '

' कृपा है आपरी बा नारी सुलभ सैज भाव सू पर थोडो मुळकती हाय जोड'र बोली पण ई अणचीती धणिक टॉमिक सू भयभूय ठ ठ म भारती बाबू, अण आप मे एक नूँई स्फूर्ति अनुभव करी । बाँ बड गव सू एक पल बी खानी देख र माथो ऊँचो कियो जाणूँ बाँ आपरी अस्थियाँ में सूत मोन अह सू बीन आ स्वीकृति दी हुवै क घर रो थोडो घणा की उजाड'र ही यारो प्रचार तो करसूँ ही ।

अर्थ घा'मी बोस्यो 'भारती बाबू इया तो एसक भाषाँ आ बोसोस करस्या ही कै धरौँ सू घणा सरै मर राष्ट्रवाणी विचारा रा भादमी ही सीटा रुध, पण इया करता ही ज पार नती पडी ता कम सू कम इतो तो जरूर करणो है क जिवा पाँव थ्या' मोटा मर सूका धीघड बोस बोस साता नू कूस्याँ रै विप्योटा बाँ रा सून चूस

चूस, ई गरीब देश म अणचाही टोबी अर क तर री सृष्टि करदी अर करे ही जाव, बाँ न किया ही कर जाग्या छुनावो जन्मजो भाव, भाई मरघ रो घोखो नहीं भाभी रो नखरो भागणो चाहीज । इतो वरसा म लाखूँ रिपिया सूँ तो गळा भर लियो अर बज गिलारी, पण ऊपरवाडी म उस्ताद इमा क लगाया नुव सिरै सूँ जामण सूँ रहगी । जाग्या जाग्या गाघी अर नरु री मर्त्या खडी करवा करवा अगली पाँत म जा बठा । जयन्ती पर चर्खो अर रामधुन, उद्घाटण भला ही कसार्देवाड रो ही करवा लवा, जीन हवा रो रुख बीन आँरो मुख एवर ग्रीन सा मर न माँचा छोड खायग्या अ सव सक र बिना बास्ते ।”

भारती बाबू बोल्या, बात तो ठीक है पण आ खन पन् पइसा अर साग सरकार रो सयोग । डाळ सारु दस पाँच गुण्डा पाळघोडा नहीं हुव र्सी काँई बात ? पण अबार रो मतदाता आपा समझा जिनो भोळो को रयोनी या आ भाखी तर सू जाण क अ उम्मीदवार न तो समाज सेवी अर त्यागी बिरागी ही । जीत्या पञ्च गुन रा न पीर रा दाळियो ही को चखावनी ई खानर आपा ही धान सूका कयो छोडो टाँचीज जिता टाचो अर उम्मीदवार आ समझ क आपा न तो एकर पटा पट्टर किया ही आँगळी टिकाव जाग्या करणी है, फेर ता दो च्यार साल आँरा कुणकयोडा ही सागा, बिना मुतळव बाडी आँगळी पर ही नहीं मूता । रोग तो मोटो आ है काम अवे पार किया पड ?

आँधे न आँख्या

‘फेर ही आपा नै जनमाणस नै जागतो तो राखणो हो जाहीज। ज हाथ आणो ताबै नहीं आवै तो बुळवावा तो सरी किया ही ?’

खर कोसीत तो सा ही करस्या ‘यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽन दाप ?’

‘तो आज मिझ्या फेर घाठेक बजी गाधी घाउण्ड म मीटिंग है। समा रो सचालण आपनै ही करणो पडसी। शहर मे प्रचार अर पम्पलेट बाजी रो व्यवस्था महे पैला सू ही करदी है। पांच मिण्ट पला पधारो इसो काम करधा।’

जरूर इसी काँई बात है पण अबक बै ही जाणसी कँ काकी रा जायोवा सागे खस्या इमा हुवै।’ घा, बाँ इसै निष्पिकरै डग सू कही जाणू देग म राजनीति रँ ऊँठ रो, नकेल घाँ रँ हाथ मे हुव। चाँद पर हाथ फेर’र बै भळे बाल्या ‘टेम काँई हुगी हुसी बार ?’

‘सवा पाँच बजी है लुगाई आपरी घडी खानी मुँढा कर र बानी।’

ठरा दा मिण्ट चाप मँगार्ड ?

नहीं, नही, म्हान दो घ्यार जाग्या घौर जाणों है घोजू’ घानमी बोल्थो।

‘आपरी मँरबानी हुमी तो चाप घाग पीवता ही रम्या” बहर लुगाई घोडी मुळकी भारती जी सामीं। दोनु खडा हाया

सुगार्ई जावती जावती भारती बाबू पर मुस्वान रो बडियो एकर  
 भळे फेर दियो, जिक सूँ बरि मन रो मिनस बकरो हूँ बै ब वरतो  
 अवार सूँ कवण लाग्यो कै व व बोट सुनीला जी न भर मा गूँग  
 काई ताळ माघै रो गळ्याँ म धूम बकरो ।

फर मा दण मम्बी दण मोठी प्रगगिण योजनावा रै  
 जाळ मे जा अट्टूभी मिरगी सी । अवाणचको ही कण ही हेलो  
 मारघो, भारतीजी अर बै उठ र बार नीबळग्या ।

×

×

×

मोटिंग दो घटा नडी चाली हुसी । घादमी दार्ई नीन  
 हजार सूँ ऊचा ही हुगा चाहीज । घटा पूण घटा तो भारती बाबू  
 ही बोल लिया पण बारी भाषण लोगार गळ बासा भोजन मो दोरो  
 ही उतरघो कारण आज दिनुगै ही वाँ मा माळनी बाँची ही,  
 सामीडी लूण मिरचा लगा लगार भर अब बा ही भळ तयार  
 भीड म इतो धीरज कठ ? बठो मन्गरी बावा बिराजो नीच '  
 भीड म सूँ पाँच सात भावाज घाई पण भारती बाबू रो 'जनता  
 एकमप्रस बिया ही चान वोकरी । अबक भावाज भळे घाई पण  
 एकली नही, बोडी गाड सा दो काँकरा साग ल र । एक री भारती  
 जी रो टोच मे टिकी, लोही तो को घायोनी पण बोरिय री गुठली  
 जिनी एक भूमडी जरूण हुगी । दूर सूँ हा दोस ही सरबूज पर राखी  
 खिरणी री गुठली सी । हुल्लडबाजी मे घणखग लोग खिडग्या,  
 छत्त पर बाकरो पडघाँ टाँटिया खिडता हुव जिवाँ, पण भारती जी

ठठारा री मिनती हा इम खडका सू कम ही डर हा । लोग वाग ही नहीं रहघा, ई रो तो बं काई करै ?

दिन भर रा थक्या मादा धरै आया जित्तै इग्यारै सू ऊँची हूयी । कमरियो खोल'र खटोलडी री शरण लेऊ ही हा, इत्तै म बाँरी सुगाई आ'र बालो "दिन दो हुग्या है, माँ नै जा'र सभाळो ही को हो नी ?"

काइ हूयो मा रै ?'

'बमार दीध ।'

त पैना ता को कह्योनी ?"

कद कहूँ, थान तो साँस लेवण नै ही पुरसन को लाघैनी, थाऊँ जिनो वार कोई न कोई हाजर लाघै, अर छुट्टी घाळ दिन तो मगगियो महप्यो ही दीसै ।'

'तो तूँ कहै तो को भावण दूँनी कीनै ही ?

हूँ क्या बरहूँ मोकळा भाप्रो भला ही पण बा जलम रो दवाळ माँ है धोरा नाम सू बीं रा दर्जो की ऊँचा है, बिना कह्यो ही बी री सुध तो लणी ही चाहीज म्हारी तो खैर छाड़ा, गाँव छोडप्यो जद-सूँ लगा र घाज तौई कादे र सागर सूँ घिरी घा खुदकी भली घर हूँ भली ।'

ब उदाम घर कुँभळाय सा उठ र माँ खानी टुरग्या ।

माँ कोटरी म सूनी ही, बत्तो निमधी निमधी जग ही ।

टाट री एक गिही बिद्याघोडी बीं पर पडी गाडा छाती म दे राख्या  
हा ।

“माँ ? बाँ होळ स कयो ।

बा को बानीनी । भळ कह्यो “माँ ?”

आ कर र बण पमवाडा फोरघो, बाँ खानी देख र बोली  
'कुण भारती ?

हाँ माँ ।

'कीनै बम र आजकाले ?

'हो तो भठ ही ।'

'हुव ही लो ।' मनबायरो सो कह र बा न पाछी बोली  
भर न भाँव हो खोली । बो गूगो सो गुमसुम बठो देख बोकरघो । बण  
देख्यो मारि एक पसवाड नाग पशपर दो छोरी सूनी ही -डीला थोडघोडा  
धरीर स स साँस लवती । दोवटी रा जाँधिया बाकी उघाडी मुर्दी  
इसी कै पासळ्या 'यारी 'मारी गिणलो भला हीं । हुज खानी दो  
छारा जिक म एक साव नागो दूसरें रँ एक चडडी । पगाण खानी  
बडाडी छारी ही पडनी पडती न नीद फिरगी बठ ही, खन एक  
पोथी पडी दीस ही । लुगाई भर एक छोरो भाँगण म खुल्लै भाकाग  
नीच भेळा हुयोडा पड्या है । बीं री भाँख्या इन बीं फिर र पाछी  
माँ खानी क्विद्रत हुगी । काळज एक पहाड न ठवयोडी, आग्नेय  
चट्टान र दूटथ पिंड सी निश्चल सूती ही । बण सकत सकत स भळ  
बतळाई 'माँ ?'

जागूँ हूँ रे सूती थोड़ी ही हूँ । कह र बण पाछी ही आँख  
 बंद करली जागूँ वीरी मेधा कोई माँयली खिण्डघोड़ी चीज नै  
 भेळी करण मलाय्योडी हूँ । अघ भिण्ट ठेर र बा बोली बात करती  
 धार सूँ पण तूँ मन किसी ओळख है रे ?'

‘आ किया माँ ?’

‘किया काँइ साध है रे ।’

‘माँ तन ही नहीं ओळखूँ तो और भळ कीन ओळखसूँ ?’

‘नै हूँ जागूँ रे, तूँ ओळख है मन, पण मूट्टी भर हाडक्याँ  
 म बघ्यै ई आकार नै ही ई सूँ बसी नहीं ।

बो सामो देख बोकरथा ।

हाँ हाँ रे हूँ ठीक कहूँ, ई सूँ प्रेमी त समभण री चेष्टा  
 हो को करीनी बदेई ।’

किया माँ हूँ को समझयोनी ?

‘तूँ जड नै ओळखै रे, पण हूँ इत्ती थोनी हूँ, अत मे  
 अगत हूँ रे । अणगिण चितराम, मै म बखी धर बिलरै, तू एण नै  
 ही तो ओळखनो हूमो ? देख म्हारै तिगणै पगाण डावँ जीवण, माँय  
 बारै उणाम उधाडा धर अमतुष्ट प्राण दुबकपोडा पडपा है—हूँ बाँसूँ  
 पिरघोड़ी हूँ । य म सूता है—हूँ जागूँ । बै सगळा मुक्त माँम  
 धार्यँ, धर चाव धापरी मे मुळबणो । बै गम्प्याँ म मुनै आवाग नीचे,  
 बिरगा मरदी म भीनी सारै भेळा हूँ हूँ र रात बाढ बना—किसी कुर्मी  
 धर बिस बिरौइपति रो बाळजो पसीज बाँ खानर ? धो म्पारो



निरस्कार है का नहीं ? पण ई रो परिणाम ही कदेई सोच्यो हुसी ?'  
इसो कह'र वण भळ आँस ब'द करली ।

वो टुकर टुकर मां खानी देव बोवरयो समभग री  
चेष्टा म ।

बीने बीरा घोळा केस—की लारै की लिलाड पर पहाड  
पर जम्बोडै पाळ सा लाग्या । तिलाड भर कपोळा पर सळ ही सळ  
पुराणी खारवा पर हुवै इसा पण बीरो हर मळ पीड री एक पोधी  
अर सगळा सळ पीड रो एक पुम्नकाल जच्यदा बीन । आख्या ईली  
रेत म रोप्योडी राखिया कोठर्चा सा—दद र काद मू काळी । योवा  
मूकपोडी किसमिस्या सा छाती र चिप्योडा । छाती भर पेट एक  
सीध म सळ, सेव र काढघोडी ठण्ठी सकरक'द पर हुवै जिसा ।  
सिलाजीतिया एक लानर लपेट राखी, जाणू बा बीर भीतरी पहाड र  
विघळय पसेव मे डूब डूब बिमी हुगी हुव । राखिया रगो हळको मो  
लघो जाणू बीर ज्वालामुखी री भीली राख बी में घणीभूत हू धीर  
धीर रग छोड र रणू विलीण हुगी हुव । इया लाग हो जाणू आख्या  
म बीरै आख भारत री गरीबी बासो निया बठी हुवै । बीर कपडा  
म मोन हिनाचल री आखी चिंता भर दक्षिण री लावा निर्मित  
माटी री गरम चेतना रा रग धिर हुग्या हुव । मोटी बात बीन लागी  
क बीरी जीभ पर अदार जाणू साचेनी सारदा बठी है । करुणा री  
प्रति मूर्ति भी बा ई सुनसान आघा रात म कोठडी म सूती विसाल  
भारत माता र महाप्राणा री ना ही गोषळी सी भेट्टी हुयोडी पढी हो ।

अचाणचनी बा बोली, पच्चास साल नैडा हुसी आपानै,  
ई घर म घाया। गाँव मूँ तो धोर ही पैला घायग्या हा घापा ।”  
हाँ ।”

“बठ घापारी जमीन है घर री, धारो जलम बठै हुयो घर  
म्हारो विकाम घर निकाम दोनूँ बठ मूँ । बीन संभाळी कदेही ?  
तीन हत्तार गज है बा ?”

‘हाँ ही तो मरो पण बठै गाँव रँ घोरा म काँई घाणी  
घाणी है माँ ? काँई तो हुवँ बठै घर काँई मात्र है बीरो ? एकर  
दसो ता ही पण भूल भाग्या घब, कुप्रेँ म पडन दनी ।

धीरो भकुटी रा सळ और गहरा हुग्या घर छोटा पर बीं  
घाश्रोउ काँयो बोयी धारँ मन ग्यान की बो हुवँनी बठ ई मात्र  
बीन दूगरा दाबा घर म्हारँ च्यारी गानी पोपण माँता घसतुष्ट  
प्राण पग्या है ब ऊबरो । धारो म्हारा काया म जिवी जेतना घर  
मागे है बीरो उदगम बा जाग्या ही है । सहरी ममता म बात न  
दकार मानँ घर ई किराय री पलाई जमीन पर जीणु म तू गीर्य  
गमन । घय पर तू जान मरँ, प्राण पर कम पण इमो नपु मर  
छहूरदरमी ई निष्क मूँ भीबट र कपेई पनगो घा मँ मने म ही  
बा गाबीनी ।

गाम्भ र पच्चास साला म तूँ इता हा नीक्या है ।

बा माँ मारी देग हो मयो उदरदोरो तो उगत घर

हारघोडो सो । धीर धीर बास्या 'माँ आजाती र माँ पच्चीस बरसा  
 म हूँ की सीस्यो का नहीं, आ तो कुण जाण पण इत्तो जरूर है के  
 म्हारो दिस्तीकाण पना मू की न की जादा विसाल घर व्यापक ही  
 ह्यो है ।

'कुण काई जाण, हूँ जाणू तूँ सीरया है जिको तूँ  
 बतावतो काठो हूव तो ल, हूँ बताऊ—तूँ सीरयो है भाषण देणा,  
 नारा लगाणा हडताळ अर अनगन प्रचार अर प्रदशण अर अर  
 बदळ तने मिल्या है जेळ लाठी चाज, आसू गम अर गाळी । प्रस्ताव  
 पास करधा है त अर हीजडी ताळी बजाई है । एक ऊछळयो है  
 दळिय रा गुठला सो अर दूमर दबामो है बीन एक घर म दो घाटा-  
 वळ विखरयो है बध्यो नही । कुस्या री छीणा भपटी मे समद अर  
 विधान समावा म हुई है कुत्तापजीती जूतमफाग जाड तोड सांठ  
 गांठ अर नही हूणा हा जिका काम । चि ता कान है रे जमीन री—  
 उदास प्राणा री ? दिस्तीकोण धारो देग अर धरती मूँ हट र कुसी  
 रें आ लाग्यो, ई मूँ बसी यापक भळ कितोक हूसी ? चोखो  
 कह र बण एकर आ कियो अर पसवाहो फोर लियो ।

डो अभिभूत सो सुख बोकरघो फेर की र्व र बोल्यो, 'माँ  
 काई दूख धारो ?

“कठ बताऊँ आखी चेतना ही दूर्ख म्हारी पूरब पच्छिम  
 उत्तर दक्खिण सगळा पामा ।

‘ला दाबदू की ?’

‘हां दाबसी तो सरी तू मोडी बैगी मन कदेइ पण धिके  
जिते धिकण द तो प्राछी ही बात है ।’

‘तो हूँ काल गांव खानी जाऊँ फेर ?’ असमजस मे  
उलझ्योडो सो बोल्यो ।

‘जा धारे जचे है तो ? पण आवनी धारे वूत सूँ थोडी  
बार री बात तो नही टूगी हूँ वठ ?’

‘नहीं माँ इसी काई बात है ?’

‘तूँ सोचे है वो रूप ही सदा साचो हूँ, ओ कोई नेम को  
है नी ? सर जावे तो है तूँ पण प्राह्या की लाल राखे’, कहीं  
पछ धीरे धीरे बीरी आह्या लागी जाखूँ बीरे माणम मे चालता  
चरा एकर की मोझा पडग्या हूँ पट्टे वो ही नीकळर आपरी  
सगेलडी खानी टुरग्यो ।

×

×

×

कोस चाळीसेक माथे गाव है ‘अमरपुरो । पच्चीस बरसा  
मू देख्यो । बीरी तो काया ही पळटगी । मडक हुगी बस लागी । दो  
घ्यार दूकाना प्राइमरी स्कूल डाक डिस्प सरी कुओ कळचक्की  
स ।

गांव प्राया भारती बाबू न तीन दिन हुग्या पण पार पडती

की लागीनी । बाता तो घणी ही स डोलजळरी कर, पण पार एक ही को घालनी । कच्चो घर हो फूस घर माटी रो । फूम की उडग्या हुसी जुझारी शे घन उड ज्यूँ कीं गळग्यो हुसी खळ रो अभिमान गळें ज्यूँ खोस खोस'र कीं लोगा बाळ जियो हुमी तमाखू रो पान बाळें ज्यूँ घर माटी माटी म मिलगी नेख चिल्ली र मनभूवा सी मन री मन म । काळ कोट जिला न ही को छोडनी तो कच्च घरा री किती गिरणी ? सब मिलि एक वरण भयो सुरसगि नाम परि जमीन पडी ही पाघरी, न कोई सीध न संताण । बाखळ म दो खेजडी हुती, गाति घर भक्ति सी । बाँन कए ही ठण्ट दिना काटली कुण छोड हो बाँन ई टम म ?

अब बी जमीन पर घुमपठिया सा दो तली घर एक खिस्टान बस हा । एक खूण म एक हूमड घोरिया मांड र पडी मे पलार ली । काश्मीर म एक नुँब काश्मीरी री यारी सुष्टि करली—सून देख र पण कीरी खिमता घाँसू टकर ?

भारती बाबू गाँव रा दस पाच बूटा बडेरा भेळा कर र पूछयो । बाँ बतायो हाँ भाइ, अठै प्रभुत्याल रो घर हुया करतो बीरी घर म्हारी एक दाँत रोटी टूटती । बीरै खून्घाँ बीरी लुगाई घापर छोर न ले र शहर खानी गई परी । एक बार तो बा घाई अठीनै, पण अवार वा दो जुगा सूँ ई न को वापरी नी । ई सूँ जादा जीवत अर साबत सतूत घोर काँई पेस करता व पण कोई मान जन् ?

पचायत म अरजी पानडो दियो, तेली, ढोली, खिस्टान सै  
 आया, आपस म सरच परा र । वी बह्यो 'म्हाने घट्टे बसता नै जुग  
 बीनग्या ई जमी में कोई मांग ही काई ? म्हारी, म्हारे बाप दादा  
 री । न भाई वीरै मूँ दवा, न लडजाँ माया रगीजै तो रगीजो भला  
 हीं । भारती बाबू लकडती री कदेई खाई तो भला हीं हुवैला परा  
 चलार् कदे ही सपने म ही का ही नी । उमर भाषण दिया नारै  
 बाजी करी, का घोषा प्रस्ताव पास कर र ताळघा बजाई । माया  
 रगीजण रो सुण्यो जण घूजग्या—बाँधी म घट्टवो घूजतो हुवै ज्यूँ ।  
 दग्व हा लोगा रै मूँ मामो तिस्तो पधी पो खानी तकतो हुवै जिया ।

पच नै आप आपर ल डब रा हा । याव बिया ही हो जिया  
 सयुक्त राष्ट्र-सभ म प्राय पाक्षरिया करै । मूँढो देखता जिसो ही टीको  
 काढ देवता । भारती बाबू मूँ बान काई सणों हो । बा तीन घरा  
 रा तीस बत्तीस बोट हा मौको आया ऐम० पी० अर ऐम एन ए  
 ही बाँरी ठाडी र हाथ लगावता, तो गाँव रा पच सरपच सार फिरै  
 ई म इचरज ही काई ? पाँच सात चलता पुर्जा रा मूँढा पला मूँ  
 ही बाद कियोडा हा अर दो च्यार नागा बठ कदे बणा ही गुटकियो  
 ले ही बोकरता । दो च्यार स्याणें आदम्या भारती बाबू नै छेडै न र  
 समझायो, "भाई अबार बस्त जमानो श्रीर है, घट्ट कोई दाद है न  
 पुकार अर न घे पारी पेस पडन नै आग कठ ही । म्हाने पूर्ये जण ता  
 ई बिचाळतै सीरै पर बाहती रा काँटा रोप र, मूँ हीं कम्त्रा करन  
 पारो, जे घन दीमै जाँवनी, तो आपो लीजै बाँ । नहीं तो पाँच

करते वो ही सटाई म पट्ट्यामी । मुकदमा में बी. है धारो ही  
 गिर घर धारी ही जूनी । बादमोर गागर भारत त्रिम माट दग न  
 ही मू० ऐन० घो० री कचनी घाग कूकनां पुग बीगम्या बाई ह्या,  
 त्रिघाटु सा घोजू नटक घघर म ।

आ यात भारती धारू री स्मृति म इगा पाईत्री त्रियां  
 माळा रो मिलिमीं डोर म । बीं तोषरो, नहीं नही करतां घो सारा  
 पांच से छवम गज तो ह्य ह। सो । घापां यता त्रियो क्वाटर तो सी  
 सया सी गज पर ही लडो है बीं मू क्यार पांच गुणों यगी । गुण  
 करसी तो इत्ता ही घणा घापां न ता । जमीं दाबनी, पुन ह। त्रियो  
 सही नय गमगी नगा न ही दी गही जा घवावग रा सी तरीका  
 है ह्या ही बीं घागरो जो घपा तिया घणमरती रो । ऊंरो त्रियो  
 दो दाणां मूँ मुट्टी भर र घर बोई कू त्रियो साट पाणी मूँ भरीज र  
 राजी ह्य वियां भारती जो ई सीर नै तर ह्य्या ।

पांच सात भाठां रा दुकटा रोता र बीं घांरी बीरो  
 मकूरछो पर आपरो हक कायम कर दाहर न टुरम्या । पूगम्या मी सन  
 सिध्या । सूनी ही वियां हीं उगत घर घळगाईग्योही दलता ही हरी  
 हुगी एकर । बीरो घांख्यां म जाणूँ जागती उरमुक्ता भारती न  
 मडीकती ह्य ।

‘घाययो रे ? मां पूछपो ।

‘हां मां उत्तर बीं बढनी जवान मूँ मिल्या । डोवरी रो

मया तो बौं बळ्ळा ही ठणक्यो पण बा इत्ती लेंडी को गर्दीची जिवी  
भारती खादी ही ।

बा मळे वाली घोरें सै "काम पेम पड्यो वेटा ?"

'पड्यो है मां कीं तो ?'

कीं तो किया र ?'

मां आपणें घर रो बठ कोई पुस्ता सैनाण को रह्योनी  
इत दग्मा में । वीनै पचायत री जमीन समझ दो च्यार जणा  
आगरा घर मांड लिया बठ । वमता नै अबै वीनै बरस हुग्या ।  
बिवाळ आपणों एक नारो वच्यो हो खाली, बो आपणें पल्लें पड्या  
है—वटी मुक्कित मूं ।

'भीगे ? मां री भृकुटी म त्रिगूळ सी तणगी भर आख्यां  
म आक्रोम री लाग लीकी । बोली पचायत वीं नै पट्टा दिया है ?'

'पट्टा तो को दियानी ।'

तो पचायत री कियां हूँ ?'

बो मुण बोकरयो त्रित मो निरुत्तर ।

'किनोक हुवरो योगे ?'

मत्र "अमेक आगजै ।'

रिचिये में तीन घाना हीं ? वीन म लीरो ही खानी ?'

घोडो टकर घर म मळे बोनी, "जावता तूं घोडी मिरवां बा



लेगयो होनी ?'

'मिरचां, मां ?'

"हां रे, आस्था लाल करण खातर बीं बांपती भर भेळी  
हनी जमी तन एकर घूर'र को देख्योनी जरूर देख्यो है पण बा तन  
इमी साफ को दीसोनी जमी कोई मोटिंग दीसै ।" कह र बग पनकां  
एकर बाद करली । बींरा वूकिया एकर बटीज्या घर हाय थोडा  
बांप्या जाणू बीं रे शरीर रूपी दिवोवण म बींरी गगळी चेतना  
वप्या मू एक साग मधीजती हुव घर बीं र प्राणा रो भेळो हुयोडा  
चू टियो ई अणचीन्ती ऊप्या मू मांय रो मांय गळनो गुरू हुग्यो हुव,  
बर, काळग री पीड धूणो हुगी हुव । दो मिण्ट बाद वण डोळा उपर  
उठाय, दिस्टी बीं पर थिर करदी बींन एकर इया देख्यो जिया  
पोस्टमाटम करण मू पला कोई सजन बीं लाग रानी देखतो हुवं ।

बा बोनी होळो होळ है मरी तो को हीनी रे कम मू  
कम पूछणों तो मन हीं हो पूछण जोगी तो है हीं ही । त म्हार  
च्याहूँ दिस मे विसग्धोड अविध घर भागावित प्राणा र हंसत  
भविष्य, जीवत वतमान घर गौरवमय अतीत न कोभीतर मू  
किचरथा है, घर किचरथा है म्हार सजोपोड सपना न है बीं ऊगत  
वूटा न अविधिया समझाळें रे ? कवती कवती बा निढाल हूर  
मौन हुगी जाणू ई म अबै बीं को बच्यो हुवनी ।

भारती बावू कच्छ मे जमीन गमाई भारत सरकार र सपे

गिड सा मूँढो टेरया खडा सोच हा कं 'वाई करू', पाटो जे जाऊं  
ही तो तिस्रें मूँढे प्रॅग्टीज रो सवाल है अबै तो, लोग वाइ कवै  
मन हुग्यां जिको ठीक है', फेर वा एकर मा खानी देख्या वा बिया  
हीं पढी ही बचेत अर वं गग्घू सा नाड नीची कियां फेर पाछा बिया  
हीं—सागी सासै म ।



## आँध नै आँख्या



जाँव सूँ अगूण पास जठे मवार एक छोटो मो जगळ हे पना बठ एक धोरो हुया करतो—फारम र बाप्या कारूँ री अगूण लालसा सो । दुरू गुरू म न वीरा वा रूप ही हो अर न उपनिवेशवाती गारी सरकार रो सो बित्तो बडो बिस्नार ही । बध्यो बित्तो सूँ को घाप्योनी बघतो ही गयो सुरसा रै मूढ सा । बीरो पू नो दिन दूणी रात चौगुणी बधी—भ्रष्टाचारी मिनिस्टरा सूँ मिल्य की वेर्मान अर लकिय बोपारी री सी । पूँजी अर प्रसार री लालसा म बण पला तो आपरा आव अर कान दोनूँ गमा दिया जिया पद अर प्रभुता म आसक्त काई अयायी अफसर गमा बठ, पछ धीर धीर ऊमर सूँ खासा पला ही बो एक तिन प्राणा सूँ ही हाथ घो बठो काळज क सर लाम्य रोगी सो ।

ई री निवाण सूँ दो पावडा परिया लोक कल्याण मे लीण एक खीप खडी ही शिव री आराधना में ठभी अपर्णा उमा सी एकली । धाज वा ब्रह्म मुहूर्त म हा घो बाळ बाळ मोती पो हरी पीसाक

धागण जिया, समग रै रग म भीजी चंदण रै चूण स कँवळै रेतिया  
 गिह पर ठभी बडी घोवै ही । बीरै अग प्रत्यग पर अणगिण सोनळिया  
 पून दीप हा अर हाथा म कुण जाणै जित्ती मरक्त वरणी फळयाँ—  
 आगिक अभिन करती की सागर क या री कँवळी आगळ्या मी ।  
 रेगिस्तान री राजकुमारी सी बा चैत री शीतल म इ सुगंधन पून  
 साग लुळ लुळ लास्य रो रिहमल करती इत्ती मस्त ही जित्ती अत  
 राळ म उठी, श्याम मुंदर री रूप छबि पर चतय महा प्रभु गी वृति ।  
 बीरी मीठी अर मादळ भक दिगदिग त म इया फलै ही जिया की  
 सच्चरित्र सत रो सुजस । बीर अगा र सज मोड अर आव भाव  
 खानी, इद्र री अप्सरावा अधघडी हक ईसक सूँ देख्या करती,  
 पण बीर माणस मे न नाच री गध न रूप रो गुमान ही । न की  
 साग अढी—न बीरो ईसको ही । न वा राग म आंधी अर न विराग  
 म उदास ही—सै सुख बस अर विद्या ही मन बमण दै वम  
 भो छोटी सो मूळमत्र ही वा सीख्योडी ही—आपरी मा घरती गनै  
 सूँ ।

एक दिन अचाणचकी जार री बधनी वासना सा घोर री  
 गरम रेत जद बीर पगा न परसती आग बघण लागी तो  
 वा एकर चमकी जिया छट्टी री छाया मूँ कोई साधरी । भट वण  
 रोस रा ताल डारा सींचोज्योटी पूछती दिस्टी मूँ बी खानी देख्यो ।  
 वो बदनीत अर विस्तारवादा सो की का बोल्यानी राली एक खळ

मुस्कान बीर होठा पर खचाड रवड सी बघर पाछी ही भेळी हुगी—भा दरसावण क हू वट्ट जिनी साव समभर ही करूँ, तू की खागा करै तो—करलिए भग ही ।

घोर री नीयत बीन दीखगी—बाच म दीख ज्यूँ । बीरी हमी लार ऊभरना आसार बीन इया लाग्या जिया कीं विपन्या र भूबिलास लार बीरी घातक कुटलाई री दुरग घ ।

‘ई खन ही बसणो घर ई सूँ ही बर बिरोध भा सोच र एकर बा दुविधा म पडगी, फर सोच्या जद अस्तित्व ही राखणा है आपान तो शस्त्रपाती नहिवा जिया पार पडसी, पण पला ज गुट दिया ही काम नीकळ तो जैर देवण रो जतन ही कयो करा ? बा बढ मिठान सूँ बोली ‘भाई घोरा ?

पला ता दो मिण्ट वण आँख ही की खोलीनी, जिया कोई भेट पूजा लर नीकरी देवणिया अफसर कीं गरीब री पळोयण रीण प्राथना पर निजर नाखतो ही दोरो हुवै । फर की गरमास स्यूँ बोल्यो, रोग गई है कयो कतरणी सी कच कच करै फानतू ?’ खीप न चन्त सूरज साग भी रो पारो खासो ऊपर चढतो लाग्यो । वण सोच्यो चालता ही जिको अलाड ऊठ सो तापडा काढ घर बोलता ही जिक र वासत बरम बो समभाया सारो सो कः मानसी / तो ही बा भळ बोली बा सागी सुरा म तन याः हमी क ?

काई याद हुसी तू थारै भुतळव रा बाखर सुणावनी पला ? वो बात न विचाळ ही बोः र बोल्यो ।

सीप तो मठे ही ऊँची को आईनी, बोली "भाज सूँ  
 पाँच मान वरम पैला आपणी आख्या बाग मठे एक समतले ताल  
 हुआ कर्तो— परमहंस री चित्तवृत्ति मो भर हुनी डाबै हाय न एव  
 छोटी मो नाही च्यान् मर वीं रै च्यार पाँच गैरगम्भीर सेजडा सज्जन  
 री कृपा सा, वा सूँ चिप्योही वा लागती सन्तरघाँ रै पोरै मे आयोही  
 गज लिदमी मो । बोमामै म जद भरी हुनी तो कुन्तर रै मिगार  
 दान म वा जचारै राण्योही धारमी मो लागनी वा नही ?'

लागनी न लागनी तै छोड तनै एक ही कहती क तूँ पारै  
 मृतद्वय री पटोळियो कर फानतू नट्टर पट्टर मन कम पमद है'  
 पारो की चिहणगे बोन्पो ।

'पतोठिया म्हाारा ही करस्सूँ बीरा पण की सुण तो  
 मरी पला ?'

पच्छा क' कहिं क' त' ?

सीप जाणगी एवट पारो ही तो ठरपो, पूँजी नेळा  
 करणिया र नेत्री ही हुय गाली न्हिदो कठे ? वै रमायन पाम्नी घर  
 बलिण रै रोबदिये गा मूरा ही हुर्व । मर, आपान पासा गाला  
 का मज्जा गिलना पान परमा त्रिको ता पटोठिया । मोति कनाबै  
 के मठ ताई वण पला बाग सूँ ही निवेदो करणो की सूँ पार  
 न प' ता, पाण मुखरी ता धनरत दीर्घ ही है ।

बन मठ आपणी क न ग एव आदया, बी धारमा में निव  
 म ता न्त पाम् जीव त्रिनाथ घर मन ठमा गेत्रङ्ग बावरा उगिपारा

देख राजी हुना, अर रात न भिन्नमिल ताग सूँ भरघो आभो, बी म आपरो रूप निरख कोड सूँ ऊपर नीचै हुतो घमनो ही को होनी । टोषडिया ताल म चरना कूना घाप ज्यावना अद, हमरत म पाणी नूँ धक गाछा नीच बठ उगाळी मागता इ या लागता जाणूँ बै मू नो हुना हुना र नाडी रो गुणगान गौता हुव अर का तुगियावस्था र अवधुत सा सूता सुख री लरा लवता पनक ही को खोलतानी ।

नाही ताज रै विमान शरीर रो णिठै ही नीरमळ पाणी बी हिन्द रा प्रम रस हो हबोडा बी रो भाव समष्टि परपोखण बीगी श्रद्धा अर पा र पाण आयोडा न देखण री उठती घनबरत लरा बी हिन्द रा अख आणद, जळ री थिरता ही बीरी गान्ति । भाई घोरा बठ खुतो प्रम, बघता बूँटा ऊँचो आवनो ताल, राजी हू हू नाचना वाधना अर गावता खाळ बाळ । तूँ ही बता अबै मायकता इम हिन्द री ही है का नही कोरो पट बघाया तो धरती राजी को हुवनी की सूँ ही ?

दूजारी बडाई सुण्या बी र टाँटिया सा चठता । वो बोल्पो, हूँ समझूँ, तूँ कठ बोल, पण थार घाँ टोपा रा घसर म्हारै पर की पडनी ? हूँ मणूँ अर तूँ दळै दळबोकर म्गारो काँई स ?

धीप साच्च्यो चीकखो भाँगे है ओ टोपा काँई जे मूमळा धार बरस तो ही जैत किसी फूल फळ पण अबार ही हिम्मत बघो हारूँ, कदाम कोई टोपो नठ ही ठर ही ज्याव तो । बण भळै मूळ सूँ मिना र बात न चानू करी देख बाँ साग आयोडा नाहा नाहा

गुवाळिया नर्चीता हू ताल मे लूणाघाटी इया खेलता जिया निष्काम  
 कमयोगी समार री लूणाघाटी म हँसता मुळकता खँलै । बै गाढा पर  
 बाई बाई भर उक्कड घुक्कड धलता, फदेई लुकमीचणी भर आँधन  
 पोटी थक ज्यावता जद धाव नाडी रँ गरणँ भर बा इमी उदार  
 क लेवनी एक देवती तीन । देवती खुसी, ताजगी भर इमरत री घूँग  
 लेवनी थाली थकेली ही । फर लायोडा दुपारा खुलता आरा—रोटी  
 काँदा गुड री डळो का मोदक न मात करै इसा चूरमँ रा पीडिया ।  
 'म भूँपड्याँ रा जाया मेल मेल म अठै कमर कसणी सीख, भर अँ  
 ही भाग जा'र घरती री हरियाळी राग्वण खानर मोरचा लेव,' भा  
 सोच'र नाडी री कोड किनारा सूँ ऊँचो प्राँवतो । हूँ ओ विलसतो बोपार  
 देख बिना पाणी ही बघनी ' कर बा एकर कुम्भक कियोडँ साधक  
 सी चुप हूगी । फेर बोली तनँ ठा है बीरा, बीँ वेळा मो ही ताल,  
 कुवेर नँ मात करतो—बूँपळ मो काचो मुरट, रंगम री लच्छी सी  
 फँबळी धामण, पून साग लटारा लेवती सेवण, सेत भर गुलाबी हँमी  
 हँसनी धव पुष्पी मैकता गोष शरीर नँ सजीवाणी मा साटो भर  
 मिनावडी, कुरण्ड भर वागा रोटी, तिणिर्माँ भर बूई, कुण जाणँ  
 जिस्ती जिस्ती जडी वूट्याँ सूँ भरघो ओ ताल म'दण बन सूँ दो हाथ  
 ऊपर उछटतो दीमतो । बीँ वेळा तूँ छोटी ही हो उमर मे नयी  
 धावार मे । 'मर चीमाम में ईमकाळू भाक सो उगम भर जवागँ मो  
 थक्योटी' भा धीर बऊ ही पण को बहीनी नीतिवान ही बा ई  
 सातर ! 'पण धापणी गोमा बीँ वेळा जिवी ही धवार बीती को है



नी ।' इतो कह खीप एकर प्राणायाम म रेचक सी खाली हू र चुप हूगी। घोरो जाणूँ इत्त न ही अडीक हो बोल्यो 'धारी शोभा हूसी बी वेळा जादा म्हारी तो घरार है घर घाग हूमी ई मूँ ही वेसी ।'

भव खीप र भा जचगी क ओ रुसी जार सो अकुसहीण घर इक्कलखारियो है समझाया ही ज मान तो जात म बट्टो लागै है ना पण देखो घड किस हब बैठै ? मन जे घा ठा हुती क ओ एक दिन म्हार अस्तित्व न गिण्ण खातर इया मूँ फाडमी तो ई रो हूणो खासो पला ही कीं न की हूँ कर नाँवती तो घाज घा नीबत म्हार पर कयान बाजती खर कोई बातनी जुँघा रँ भार मूँ घाघरियो नाँख र निभाव किता घडी हूसी ई री घाँख्या तो छेकड भोलणी ही पडनी ।

बण चित्तित हू भापर च्यारा खानी देखपो । बीन दीह्या कठै कठ ही, दूटघोडा अर अघ मर्या सा वूँया रा डाल्ला—खून सूकी कीं मजूर क या री आगळपाँ सा दीह्या बीन मुळस्योडा घर काळा बठ वूर, सेवण रा वूजा—बळनी लू भर खल म सडक किनार सूताँ मजूर टाबराँ रा माया सा, बण देह्या साटँ घर सिनावडी रा उणम गूण्ड—रोगी घर अभावप्रस्त टाबराँ री छुम्योडी चोण्याँ सा—दीखी बीं न मरूँ मरूँ सी डचाभ री जडा—पाणीभरँ मे गुसत असहाय रु बटा सी, घर साव भूनी तिस्ती गठिय री जडा जमीन र चिप्योडी—ईस र चिप्योडा गळनी मूँ जर साखाँसी । गरीब घर असहाया रो भा बिलखो बिलखो ससार—ठीक इया हीं जिया

की बड़ शहर र बार — मारवाड री मऊ माळवै जावनी अकाळ प्रस्त  
नाग भूखा री टोळी ।

अ काई मदद करतो आपारी एकर बा भळ गैरी  
चिन्ता में हूब र एडी मू चोटी ताई कांप उठा । की ठर ठण्डे माथे  
सू भळे की, सोच्यो, बी र ममभ म आई के मोटोडा नै जाचणो ही  
पालतू है कए तो बा आपणी सुणी अर कद वै आपणी माग कांधे सू  
कांधो मिला र जूझ्या ही ? आपणो मुतळव जद कद ही सरसी तो  
भांमू ही । ई खातर आने ही जगाणा है जिया तिया । जे कदे ही  
ओडी बेळा आपही तो अ ही भला की ढाल धुमाया । माटी मे  
मिलण अर बीं सू उठणो खाली एक आ ही जात जाण — दूसरा  
नहीं । मगठण रो सबळा तो बग कर लियो पण चैर री उदासी  
भोजू बीरो लारा को छोडधानी । इत्त म बीने सुणीज्यो 'वन  
आज की बिनखी दीसी ? बण सामो रेह्यो एक बूर रो बूजो हा ।

हां रे, की म्हार खातर, की थां खानर, पण सगळा सू  
जादा बी खातर जिहा धरती र गभ म, गरमी अर अंधकार म  
अमूज्योडा धारै अंधण समार र पून पाणी न तरसै अर तरम  
धरती पर आपरी सुवाग पैलावण । कुण जाण वै कदरा धारी  
म्हागे जदा नीच मुवयाण भोगर नै पडीक अर भोसण रा पग भान  
राख्या है अण दुष्ट घोर ।

आ बाग गुण र आम पाम रें मगळा घाप आप रा  
बान सड़ा कर लिया । खीप बोनी भाई सागां ओ आपण अर

आपणी आवती सतति, सगळा र जीवन ज्ञान पर वकळू फेरणी चाव ई खातर बचणो है तो ई रो की न की जाबतो बरो । ऊपर फिरधा पछे, आपा ससार रो हवा फेर खाई ही है अर आपणों वम फेर बघ्यो ही है । सै बोल्या 'बैन, म्हारो तो खुद रो ही गळो द्दोपेजे, पार पडनी घोखी है ।'

'घोखी हुवो चाबै सोखी ओ आपान न डग्घा छोड अर न त्रिणती करथा ही बगस ।'

तो ?

'तो क्यारी ? कमर बसणी पडती ओर कोई उपाव षो है नी ।'

'धारे सागे हा तू क'री तो कुप्र म कूदण न त्यार , सगळा एक आवाज सू—बोल्या ।

'मन आ ही आगा ही घां लोगा सू अच थे डरो ही मत होठ रो फटकाओ ही को लागण हूंनी घानै ।

पगा तन चिप्यो गरीब गठियो बोल्पो वन प्राण कठा ताई आयोडा है जे गुटक पाणी सू कठ आला करल्यु तो हू की वताऊं क दो हाथ इया हुव ।

'किया रे ? वा अचम्भै सू बोली ।

'धोरो बघ च्यारागळ तो हू बघू आठागळ अर दो दो आगळ पर अगद रा सा पग रोड हू—अणगिण पग है म्हार गात में ।'

'गुरुको ही नहीं घपाळ मिससो तने एकर जम्बो रहतूँ ।'

खीप न भागा बेंघगी, चिरणव नाखदी धाग सूँ धाग बघल न ।

×

×

×

बसास लागम्बो । बासते सी बळती गुरु हुगी । ऊनाळो, माधी घर मकाळ तो इस कुमाणसां वास्त घोर घाछा । खर, म्हारी तरफ सूँ तो हूँ एकर भळे समभाळें ज रस्तें भावें ता ठीक है, नहीं इस दो महीना एकर टम तो काडूँ किया हीं ?

पून साग लुळ लुळ खीप बही नरमी सूँ बोली, हीं बीरा, तू बघ्या, माद्यो बघतें न हूँ क्योँ वरजूँ पण, हूँ थारे पाडोस म बगूँ इसो ध्यान ता सूँ म्हारो ही राख, क, कम सूँ कम, धार सूँ ता हूँ यूरीजूँ नहीं, जोणों तो हूँ हीं चाळें का नहीं ? सूँटा भादमी है, रसा करी त्रिची ता दखी ।

गिना रो ममुज्योडा घोरो बळती माधी में एकर सळसळी देर हेंब्यो मगाय सो । रोस तो पलां सूँ हा । रोस रा ताता कण, दूर दूर ताई त्रिचिया, बूद, बूई भद्रदसां घर सुकती जहां पर जा र पड़्या । ताल र मतीत बमव न याद कर ब बापग्या बापडा । बो बोया घर, 'खीप, काई बोरो ही, भाई है न बन । मावा भापो भापरी है । पता नहीं, त त्रिची त्रिची बीणती म्हार पगा नीच दख र भावागमण सूँ दूर, मूळ हुगी । त त्रिची जनानी बोनी मुण,

जे है प्रागै पांवडा मेलतो तो प्राज ताई अठ किया पूगतो ? गादडा रो हूनी हू सुण र सिंहा रो बिहार कदे ही रुके ? धार बघण रो उभाव त सू ताव आवै, तो मोकळो कर भला हीं पण म्हार रस्त म प्रासी बो आपरो अस्तित्व गमा वठसी । म्हार बघत पिड न जाग्या चाहीज—है कारी ही को सुणूनी, ' बघत हिटलरसो बो बोल्यो ।

इत्तो मटबोलो मत बण गुमान राजा रावण रो ही को रह्योनी । मोली बीएती धार पगा नीच दब'र भावागण सू छूटगी का थारी य व्रणा नीच आ र मोसीजगी माय रो माय । बारी प्राह अर अभिलाख ओजू अकास म गूँज पण बच्चू हवा जिक दिन उरटी चालगी, बी टिन थारा पूरिया लदता ही दीखसी, बिस्वाम नही तो घरती रो इतिपास उठा र देखल ।'

'तो धार कण रो मुतळव ओ ह्यो क है ओरा र सुख दुख, हाण लाभ रो ध्यान राख राख प्राग बधू । अंगूठ जिता जिता ना कुछ घास फूम है बां नै ही पूछे क्यो सा थान कोई तकनीफ तो को है नी, प्रागै बधू भला ही ? इसा सू बात करता ही म्हारा पुन अर प्र स्टीज दोनू घट, अर बघण री जे इसी बात ही हूती तो प्राज घरती पर न बडा बडा सम्मान ही हुता अर न पूँजीपति ही ।

खर छोट छोटा सू बात करता धारा पुन'र प्रैस्टीज कम हुता हैला, म्हार तो बही अघेर री वेई है । जिका आख्या बेच खाइ बां मोटोडा सू मन काई ? पण तूँ जिकी पूँजी रो गुमान करै, बा तै खन भाई कठ सूँ, बा तो समष्टि री है धारो ई मे काई ?

“समष्टि तो है ज्यू ही है, पडी है बा है जठं । बी सू  
नीकळ नीकळ हर इकाई आपरो विकास यारो यारो चावै । समष्टि  
रा ही नेम है अर ई सू ही राजी है बा ।’

पण समष्टि सू नियोडी पूजी समष्टि खातर ही, खतरा तो  
नहीं हुणी चाहीजै, जिमा नदी रो सम्पत्ति धरती पर मगळै हेंसी  
बिखेर पण, जद नदी आपरै ही विकास म ही घांधी हू घाग बघे  
तो घालै जीव जनुवा रें हिडद म हाहाकार अर धरती पर कुम्मा  
पाक री सृष्टि हवै ।

‘हुव तू हुवा पण ई सू नदी बढ मानी ।’

नही मान जद ही तो फेर नदी रो काया नै मिनस  
मिल र बघे बीरो उफाण मदन कर दासी खन सू कोई गोलीपो  
कराव जिमा बरत बीन ।

‘खीप तू टींगर रो बाय में घावै जित्तो तो बोमो तो है,  
अर किता बघार बघ बघ बाता इत्ती छमके जिनें रो हू नहीं पण  
त जित्तो भामती नै म्हारो ताकत रो भोजूँ ठा ही याई ? अवाळ  
अर ऊकळनी घांधी में जद धरती रा आता जीव बिष बिलाधे बी  
बेळा म्हारा पू जी अर पस्कर बेगुमार बघे हू घणों जोरीजूँ जिमा  
कोई घान रो घींगड बीपारी अवाळ म एक एक दाण रा मोल कर  
दूणाज । घायोडो मोका घूक बीं सी भूरस कुण धरती पर— सोवा  
अरने सईको बदेई से घाव ।’

‘ही बी दाण दाण रो मोल, अर कर कर एक बी अणसे...

मोल एक दाण सूँ ही माडो हुव अर हू सकँ बीं हाहाकार म सूँ ही जिक न बो बिकास रो बभव समझँ बींर बिनास रो कोई उरम फूटँ जिको बीन अर बींरी पूँजी दोनां न ल पूवै । अकाल ने तो बीनँ सोन री बेळा समझ आपर कोठा रा बिवाड खोन र वूँची कडी र बाँध देणी चाहोज जिक सूँ मव फूटँ बींरी । बडो बो जिक र पिड पर रोवता हस अर भूखा घाँपै ।

‘तो इया म्हारो किसो कीनँ हीं सायरो को है नी ? मैं पर किसो कोई खेल को है नी ?’

‘हाँ है सायरो धारो जिकी बेळा तू तिन भर रो मो-योडो दो घडी नीद म बेचेत पडघा घीरा न धींघणरा सपना सब का दिन घाळ जियां रात नै ही लोभरी घाँधी में दम र रोगी सा साँस लवतो हाँपळा मार बोकर, बी बेळा घरती रो मुख लूँणिया समाज विरोधी डाकुवाँ नै, धारो सायरो मोकळो बै धारी गोदी म अर घडी घाघ घडी धापरो मूँ धुकोव, अर का साँग पैला अर परडा धारी काया पर किलोळ वर कर पसर अर, तूँ ई पर राजी हूँतो मनम माव ही को है नी बळिहारी है धारो बुद्धि पर धुधकारो नाँसू तनै चाख नही लाग ई खातर । तन धापन तो हँसी घाँवण रो हिसाब ही काँई, पण आ किसोक कँ घीरा न हँसता देख्यां ही धारै सूँण वरस । आ हाला तूँ लम्बी ऊमर लेणो मुर्किल है ।

‘तो हसी न हूँ चाऊँ, अर न मन सुहाव ही, साली त ही ठेको ले राख्यो है बींरो ? पाव री हाँडी अर अघसेर ऊर णियो, देखी

मृतमारी पूछती न तन ?'

खर हूँ तो म्हात्मा री पूछही नहीं तो नहीं सही, पण धारै  
दाँ, डाकीचाळो तो को कहूँनी । हे जिकें मूँ ता घण घाप अर  
नहीं हे बीं खानर प्रोय हाय । रही हूँसी री तन हीं जे वा प्राची  
सागती तो धारी गोदी म किसी वा को फूँतीनी कठै ही । कहूँ  
शिकी ठीक ही कहूँ, चिडकी लाग्या काँई हुबै ? धाँवा अजगर, तू  
हीं जे हसी मूँ राजी हुतो तो तूँ ई हँमते विनसतै ताल रै ऊदर  
न को गिटतोनी । त नाही रै गर गम्भीर तल नै वूर पिगाएँ ही  
धों पर कब्जो कर लियो जिया काइ गुण्डो एम पी ससद री सीट  
पर कब्जो कर भट कुर्मी जा चढै । धारो मूँडो देख्ये रो पाप है—  
धाँमणे हे तूँ । पूँजी नै याद कर कर रोए पछ । भाया तो मारगा  
सागती जोर लाग'स सगा लिए ।

मूँडे मूँ सँभाळर बाने नहीं तो तूँ धारी जाएँ इत्ती  
ताळ तो तुगाई री जान समझर, मै की कायदो राख दियो धारो  
धोरो धारो रीस मे धार'र बोत्वो ।

वा एकर धोही मुळही पर बोली 'सो मो चमका जिनी  
घालणी र बा ही मळे बोलण न मर । मैज ही त म्हारा कायदो  
राग दिया अर मैयोग ही मोखळा कर दियो । तन टा हुणा धाहीज  
के धरें तै शिरय माटधारा री म्या पर जीबण धाळी तुगायां नै  
मरघानं छुग धीतया । धर री मुगायां ता त शिरय रै मरघं चजार



जून मार अर इजत रो दावो उपर सू कर । हूँ चोखी तर  
सू समझूँ धारी तावत न—दायतो ही दोरा हूँ भला हीं ।  
पागळो है तूँ पून चलाव जद ही चालै । त म न धारी गरमी, न  
धारी ठड, जीवतो ही मरघ समान । दूसरा पर जिये फेर ही बोनण  
न मर दकणी म म नाक डुबो र तो मर ।'

घोर न एकर वसी चिडाळी आई क मत पूट्यो, पण वा उफणत दूध  
सी आपर ही खीरा पर दुळर गीच बठगी । लोभी अर तूल हीजड  
रो सो मन तो घणो ही बघ्यो पण सिरक किया ? बीरो मूँ एकर  
काद मूँ भीज्य सूक जूतियै सो हुग्यो । बीन आपर पुरसाथ रो कीं  
काँइ खासो भलो डाळियो समझ म आवग लागग्यो पण आजूँ मूँज  
बळगो तो ही बट को गयोनी । बोण्या ' तो तूँ मरणो चावै गाह रा  
जद उधा दिन आव, वा रेगरा रा गावडा खडखडाव । '

जरूर हूँ मरणो चाऊँ पण इत्ता मस्तो नही जित्तो तूँ  
सोच ? धरती पर आई हूँ तो की कर न जाऊँ जन् ही मजो ।

“काँई ?

त जिस्य धूळ बुद्धि मोथै रो सम्पत्ति परमाथ म लगवाऊ  
अर थारा पूटघोडा डोभा की सावळ रहूँ ।

‘तूँ ?

हाँ हूँ ।

' त जिसी प बोन्धा म्हार पगा नीच रोज चौथीज र मरै,  
टका नीच टीटणा सी ।

“बीधल म तू धारी बजाई ममभना हुगी पग घाँतू  
व ही बीधीज मो जिवा विवक मूँ धारा सामनो नी करमी ।”

‘ता तूँ सामनो कर लिए, म्हाग अगना पग घाँतू त पर  
ही पडसी दा च्यार दिन में ।’

‘ठीक है ।’ खीप चुप हुगी । मूरज द्विपग्या घाँती यमगी ।  
दिन भर रो थकवाडो घोरा, गाढा भाव’र मान मग्घाना मा बँटग्या ।  
भाग आवण लागग्या जद घाटा हुग्या । पटना नी नीँ किग्या ।  
घाँतू जग्या विरणा मूँ ठग्या हुयो । पगियाँ मूँ एक ठँठ घाया, घोरे  
री पूँजी पर लिटघा फर निवाण म ठमी ट गगीव पगु स्वाभि  
मानण खीप री घावासा मो उपर उठी, कँट्टी कँट्टी कूँट्टी रा  
खाया खाया गवा मार, स्वाभिये भगन मा घापीने चाल पडघा,  
जिया उद्घाटण करण घाघोना वाद मग्घाना मिनिस्टर, मत्र पर  
राखी मव अर मोठे री टाटा न ऊभा उमा घर र अगने नदुनागण  
समारोह खानी बिना हुनो हुव । खीप का बोलीनी । ठँठ उनिवण  
वादघाँ र एजेंट मो भळे घोर बीन नी हली रेवण बाग घाँध्या मुँ  
घोभळे हुग्या ।

खीप खन नी एक छाटो मा लख मूँ भग्घा, उगम अर  
अधमूको गिणिये लडो हा, घाँधी अर तावड म गदह पर नीकर  
नखित उघाई मरूर सो । वो बान्धा दग बेन ई जम (ऊँठ)  
एन मोक पर किगोव धर साज्या है ?’

सजग स प बोना ‘ससार रा नम है बाग के टूटघाना

जून मार अर इजत रो दावो ऊपर सूँ कर । हूँ घोसी तर  
सूँ समझूँ घारी ताकत न—दायनो ही दोरो हूँ भला ही ।  
पाँगळो है तू पून खलाव जण ही चालै । त म न घारी गरमी, न  
घारी ठड, जीवतो ही मरघ समान । दूमरा पर जिय फेर ही बोलण  
न मर डङ्गणी म म नाक डूबो रतो मर ।’

धोर न एकर इमी चिंटाळी आई वीं मत पूछो, पण वा उफणत दूध  
सी आपर ही खीरा पर डूळ र नीच बठगी । लोभी अर पूल हीजड  
रो सो मा तो घणो ही बघ्यो पण सिरक किया ? बीरो मूँ एकर  
काद सूँ भी—य सूँक जूतिय सो हुग्यो । बीन आपर पुरसाय रो की  
काई खासो मलो डाळियो समभ म भावण लागम्या पण ओजूँ मूँज  
बळगी तो ही बट को गयोनी । बोल्या तो तू मरणा चाव, गोह रा  
जद ऊधा दिन आवै वा रेगरा रा गोवडा सडखडाव ।’

जरूर हूँ मरणो चाऊ पण इता सस्तो नही जित्ता तूँ  
सोच ? घरती पर आई हूँ तो कीं कर र जाऊँ जण ही मजो ।’

“काई ?

त जिस्य धूळ वद्धि मोथ री सम्पत्ति परमाथ म लगवाऊँ  
अर घारा फूटघोडा डोभा कीं सावळ बरू ।’

‘तू ?

हा हूँ ।

त जिसी पबोल्घा म्हार पगा नीच रोज चीथीज र मर,  
टका नीच टीटणा सी ।

“नींद में नूँ धारी बन्दे सम्मनो हूँ पण धारें मूँ  
वही बीबीइ मी त्रिका विवेक मूँ धारो सम्मनो नहीँ करनी ।”

“ता नूँ सम्मनो कर लिए, धारा भण्णा वा भवै त पर  
हा पण्णा दो चार दिन में ।

टीक है ।’ सीप चुप हुनी । सूरज छिपग्या घाघी धमगी ।  
जिन मर म चक्काडो घोरौ, गोडा भाल’र मार्गन मरघोडो सो बँठग्यो ।  
नीग आवणु सागरया जद घाहा टुग्या । पहना हीं नीद फिरगी ।  
चाल ठग्या किरपा मूँ ठण्डा हुयो । परियाँ मूँ एक ऊँठ घायो, धोरें  
रा पूँजी पर लिटयो फर निवाणु मे ऊमी ई गरीब पणु स्वाभि  
मानण सीप री आवाहा सी ऊपर उठी, कँदळी कँवळी कुँपळा रा  
श्याया साया गवा मार, स्वाणियै भगत सो आगीन चाल पडयो  
त्रिया उदघाटण करणु आयोडो कीर् मरतोड मिनिस्टर, मेज पर  
राखी भव भर मीठ नी पटाँ न ऊमा ऊमो चर र अगल उदघाटण  
समारोह खानी बिदा हुतो हुव । सीप बो बोलीनी । ऊँठ उपनिवेश  
वाण्णा र एजेंट सो भळे घोर कीन ही डळी देवण बीरी आँस्या मू  
घोमळ हुग्यो ।

सीप बन ही एक छोटा सो खल मूँ भरयो, उणस घर  
अधसूवा मिलियो खडो हो, भाँधी अर तावड म सडक पर काँकर  
नासत उघाड मजूर सो । बो बोत्यो ‘देख बैन, ई जम (ऊँठ)  
एन मोक पर किसोक बर साज्यो है ?’

सजग सीप वाली, ‘ससार रा नैम है बीरा, कँ दूटघोडो

लड ही हमेशा दूट । दूटो ई सूँ मन काई, अनिवासज अय म चिंता  
सूँ भाणी जानी ही काई, पण घरती रो प्यार जद ताई आपण  
अनुकूल है आपा बघ ही बोकरस्थाँ रे ।'

'बन थारी छत्र छाया म पळत अर फळत न मन आज  
दो साल हुग्या पण त न कदेई मन होठ रो फटकारो ही दियो अर न  
कोई माँग री गघ ही थारै खाँनी सूँ मन मिली—थारी मदद पर जे  
म्हारा प्राण पुण्य चहे तो हूँ म्हारो भाग सराऊँ ।

'अर म्हारी मदद करत न हूँ जे तन थारै घणु बिस्तार  
मे घरती रो अगार देखूँ तो म्हारी प्रफळता रा काई पार ? मोको  
आसी जद हूँ आप हा बतळा लेस्यूँ तन । अवार म्हारी जडा सूँ  
मिलै जिसे खुराक ले र कुदरत री अनुकूलता भावै जित्ते किया ही  
काम चला ।

इत्त म ही एक लोकी खीप खन भा र ऊभगी । बोदा  
बोरिया खा'र आई ही कठ सूँ ही । खीप री जडा मे पला तो एक  
छाटी सी घुरी खोदी बण फर जावती मळ र मिस गुठल्या खिडायगी  
बठ । खीप और घणी मुळकी कदास काम बण तो ।

बसाख हो ही । बळती चाल बोकरी त्रियोगण र साँस सी ।

घोरो बघ बोकरघो मक्कीचूस र मनसूबा सी । खीप रा  
सायोडा टेंवरा बण जद दरया, तो वो बडो राजी टूयो । बसाख  
ऊनरते ऊनरते वो बिनान दिलान ऊँवो खीप र च्यारा खानी

फिरग्यो ।

जेठ री झाँधी झौर जोर चढगी । घोरो झूव राजी, खीप मोन पण सजग । बा आपरी फळघाँ फोड फोड भणगिए वीज झाँधी सागँ उहा बोकरी । धारो बिलान बिलान झौर ऊँचो धार एक दिन मास मे बोल्या 'क्या चद्रमा सोच लियो खीप म्हाराणी ?'

'सोच लियो जाडो लागँ जठ घेर लिए भला ही पण जद ताई तिस भर मूँड बारँ रैसी गज न आपरी साधना छोड न बीरी घास्था ही खनम हूँ ।'

रावणी हँसी हँस र बो बोल्या 'पीरो लगावँ जित्तो लगा लिए नम बीस दिन रो बाजो झौर है—जाणूँ ता हूँ भाव भसाड ताई कठा वारकर, कडो दे नाँवस्यूँ, धर, फेर पाँच दस दिना म 'गळगप', माँ रँ जल्मी ही बो ही नो जाणूँ ।'

तूँ दम बीम दिना री सोचँ पण काल री ही कुण जाण तूँ इसो रामजी रो बटो को लाग्योनी मन । क्यों फातू यूँ उछालँ मन र साडुवा सूँ भला हीँ किनो ही पट भर म्हारे कठ भबखाई हूँ ?'

घोरो मूँ डीलो कर घीमो पडग्यो पण बीरी घुसण झौर सज हूगी । भाग मूँ बीँ दिन हीँ मिझ्या खोखा खा र घामोटी पाँच सात गायो घोरेँ पर धार रात बासो बिसराम कियो । जावती दनूँग बटै छेरा थी छेरा करगी । धारँ, बाँव मूँ नाक म घाँगळी घातनी, पण खीप री कळी कळी खिलगी । धूँधना

लड ही हमेशा हूँ । हूँ ई सू मने काई, अनिवासज अथ म चिंता  
 सू आणी जाणी ही काई, पण धरती रो प्यान जद ताई आपण  
 अनुकूल है, आपा वध ही बोकरस्था रे ।'

बैन धारी छत्र छाया म पळत अर फळत न मन आज  
 दो साल हुग्या पण त न कदेई मन होठ रो फटकारो ही दियो अर न  
 कोई माँग री गध ही धार खानी सू मन मिनी—धारी मदद पर जे  
 म्हारा प्राण पुण्य चहै तो हूँ म्हारो भाग सराऊँ ।'

'अर म्हारी मदद करत न हूँ जे, तन धारें धण बिस्तार  
 म धरती रो अ गार देखूँ तो म्हारी प्रफळना रा काई पार ? मोको  
 आसी जद हूँ आपे ही बतळा लेस्युँ तन । अवार म्हारी जडा सूँ  
 मिसै जिसे खुराक ले र कुतरत री अनुकूलता आवै जिते किया ही  
 काम चला ।

इत म ही एक लोकी खीप खन आ र ऊभगी । बोदा  
 बोरिया खा'र आई ही कठ सूँ ही । खीप री जडा म पला तो एक  
 छाटी सी घुरी खादी बण फेर जावती मळ र मिस गुठल्या खिडायगी  
 बठ । खीप और धणी मुळकी कदास काम बण तो ।

वसाख हो ही । बळती चाल बोकरी बियोगण र सांस सी ।

धोरो वध बोकरधो मक्कीचूम र मनमूबा सा । खीप रा  
 खायोडा टवरा बण जद देरया, तो वो बडो राजी हूयो । वसाख  
 ऊतरते ऊतरते वो बिनान बिलान ऊँचो खीप र च्यारा खानी

फिरग्यो ।

जेठ री घ्रांघी और जोर चढगी । घोरो सूव राजी, खीप मोन पण सजग । बा आपरी फळ्या फोड फोड अणगिण बीज घ्राघी साग उडा बोक्करी । घोरो बिलान बिलान और ऊंचो आ र एक दिन माख म बोल्या “क्यो च द्रमा सोच लियो खीप म्हाराणी ?”

‘सोच लियो जाडो लागै जठ घेर लिए भलाई ही, पण जद ताई तिल भर सू ड बारै रैसी गज न आपरी साधना छोड न बीरी घ्रास्था ही खतम हुवै ।’

रावणी हँसी हँस र बो बोल्या ‘पीरो लगावै जित्ती लगा लिए दस बीस दिन रो वाजो और है—जाणूँ ता हूँ गाघै मसाढ ताई कठा वारकर, कडो दे नाखस्यूँ, अर, फेर पाव दस दिना म ‘गळगप’, माँ र जल्मी ही को ही नी जाणूँ ।’

‘तूँ दस बीस दिना री सोचै पण काल री ही कुण जाण तू इसा रामजी रो बेटो को लाग्थोनी मन । क्यो फालतू घूक उछाळै मन रै लाडुवा सूँ भला ही किनो ही पेट भर म्हारै कठ अन्नखाई है ?”

घोरो मूँ डीलो कर घीमो पडग्यो पण बीरी धुखण और तेज हूगी । भाग\_मूँ बी दिन हीँ सिझ्या खोला ह्य र घ्राघोडी पाँच सात गाया घोरै पर आ र रान बासी बिमराम कियो । जावती दनूगे बडे छेरा पी छेरा करगी । घोर, बाँन सूँ नाक म घ्रांगळी घातली, पण घ्राँप री बळी बळी खिलगी । घूँषना



धरा री हजारू गोळ्यां कर कर, धोर र पेट न जाग्या जग्यां धोयो  
कर आपरै धरा न रेत सूँ ढक लिया । हजारू बीज खोखा रा पून  
सागै ई न धी न भळ लिङग्या । दूसरै नि भाग री विरस्ता ह्यो ।  
घाँघो यमगो धोरो हो जठ ही जमग्यो ।

आपाड आयो नु व दिम्वास सो । विरस्ता सुग ह्यो । रह  
रह हू ही बोक्री । तिमाय गठिय बळन सूत्रा छाँट पडना ही सिर  
साँभलिया । हवा रो हव फुरग्यो । खीप, सिंगिया, खोखा अर अक  
ढाडियाँ रा धीन, गाघटा री गुठ्या विपननामी गुरिलना सा ई  
न धीन विड र क्रान्तिवाग्घाँ सा भूमिगत ह्य्या । विरस्ता हू बोक्री-  
सूरज तेज दे बोकरधो । गावण भादवा मौज अर मस्ती लिया भूम  
हा । बीज अर पूवजल्म में विघोडा शुभ कम सा ऊचा धा र वधण  
लाग्या । खीप देख्यो बीर च्याहूँ मेर ही न्ही धोर री घणखरी  
वाया पर आव सिंगियाँ फोग अर वाँठ बोभा रा अणगिण अकुर  
ऊपर आयोडा पून साग ऊभा ह्य है । वर संवण अर घामण रा  
टँवरा यारा ही लटांग लवता लार नाच रो अग्यास करै है । पून  
नचाव अर वाँठ बोभा देख धोर रो माटो पट रगमच है जीदोरो  
तो हूवै बीरो पण जोर काँई चाल ?

दूँ, काँटी डचाभ, दूधी अर गठियो म आप आपरो जाळ  
विद्यावण म लाग्योडा है कोद्या टाँग टाँग सावळचेत ऊभा है—  
यूनियन र मजूरा सा । धोर न अर आपरो पट की दवती लाग्यो,  
अर पग की पाछा पडता ।

वीप घीरजवान ही प्रमन हू हू, पसरै ही घरती री घिरियाणी सी, पण घोरै आळें जिवा ओछी घर भ्रुवादण का हानी । भाड भवाड, कचरो काटो जीनें जाग्या लाधी बठ ही ऊगगी घर बा सागै ही बध वाकरी । बी आपम जे कोई नाहै सूर् ना हो धुप ऊगग्यो, तो ऊगो भला हीं राजी ही बा । हम चौडा, गळी सांखडो मुपिरियरटी कम्पलैक्स जिसा हीणा बीज बीरी चेतना घरती पर ऊग्या ही को हा नी सगळा नै एक डोर मे बांध, लक्ष्य पर लाग्योडी ही बा ।

बीरी जडा में एक नाहो सो चिटाचेतियो खडा हो, सगळा सूर् पतळो घर निमळा । नाडा थारी थारी चिलकें घर बँ ही इसी मुरधी घर महीन कं डाळा पर हाथ घर र दस्या ही की ठा सागै । कं कोई भडमल अठ खडो है । माटी म मिलण सूर् पाच मिण्ट पैला बा होळ मे बोल्यो, बँन मन हीं की सवा भुळा, हू थारी काई मद करू ?

वीप बीं खानी देख र एकर अचम्भ म पडगी, साच्यो अंगूठो टिकै जिने सो तो ओ भूप है, कत् तो ओ जल्म्यो घर कद ओ जवान हुयो, ठा ही का लाग्योनी । काई मदद करमी ओ थारी पूँक रो मार ही पुरो को भलैनी, दिनरात पून रै सास साग ऊमो धूज बोकर आंगळी र भटकार सूर् तदूरै री तात धूज ज्यू । पण ई रै सोने स उजळ बिस्वास घर ई री अदूर आस्था पर तिरस्कार री हळकी सूर् हळकी घोट करदी तो ओ मायरोमांय भुमळीज र पूरा हुसी

भाग तो है घरों । बा बोली बीग, बाई मन्द करती तूँ म्हारी  
 चालते घोर रा पग यामण रो पुरसाथ है पार बुकियाँ म ?

घूजतो घूजतो आपरा ना हा नाहा हाय ऊँचा कर र बो  
 बोल्यो जरूर बन, पण ई साथ तो म्हारी म्यान् अब पूरी हुई  
 समझ भगल साल जे, ठाकुरजी इसी ही अनुकूलता राखी तो सँ की  
 कर स्यू , कह परो दखता दखता बो घूड म कठ ही अन्तीठ हुगयो-  
 तावड राखी नपूर री ना ही डळी सी । खीप खडी देखती ही रही  
 भवाक । बा बीर नेह भर निष्ठा पर अचम्भित हो पण बीरो मोछी  
 ऊमर री समाधि पर गरी चितित ।

काळवक्र चालतो रह्यो । गर्मी आई आँधी शुरू हुई  
 घोरो चाल्यो पण कीडी चाल । बिरखा हुई । खीप री दिस्टी घोर  
 री ढाळ खानी गई वण देख्यो हजारों री सह्या मे चिडी खेतिया  
 इमी पुत्र सा ऊमा हवा साग हस भर घूज । घोर रा वार आप पर  
 लेवण गोरखा सिपाही सा बडा कोडायता भर वृत्तसकळप हा बै । एकोह  
 बहूस्याम सो करडो काम हो बीरो । खीप री खुनी रो अब बाई पूछणा?

चौथ माल घोर पर भर बीर भास पास भाक सिणिया  
 भाड भेखाड भर बाँठ बोभा आपरी जडा आछी तर सँ जमायली  
 फर वगो ही वठ, एक इसो बीड लाग्यो क घोरो मरणासन सो हू  
 बीरो अणगिए जडा म गठिय र रोगी सो जकडीजग्यो ।

वधाई है बन एक दिन स समवेत स्वर सँ बोल्या ।

“क्यांरी रे भाई लोगा ?” खीप मुळकर बोली ।

“घारी जीत हुई है नी ?”

“म्हारी का आपा री रे ? जीत इकाई में नहीं हमेसा दळ म ही प्रतिष्ठित हुव अर बठे ही ओपे ।”

“इकाई मे ह्या वैन कीने ही धमण्ड हुज्यावे अर फेर बो घोर आळें दाई भाघो बण ज्यावे, ई खातर ?”, धूजतो चिडी खेतियो बोल्यो ।

खीप री कळी कळी खिलपी । बा बोली ‘चिडी खेतिया तूँ बावन भगवान सो है तो भला हीं निराट नाहो, परण थारै विवेक रा पग विराट रें पगा सा है बेहद लाम्बा । जे हर इकाई थार सी सावधान अर साधनारत हुवै तो आपण जगळ रें ई राष्ट्र सामा अरब अर सहार जिसा रेगिस्तान सम्राट देखणा तो दूर भांस ही को उठा सकनी ।’

‘वैन जे त जिसी अस्तिरव री अजन्ता ही मागण्णव हुवै तो ।’ अबक जमीन र चिप्योडो गरीब गठियो बोल्यो ।

परण गूंगा ! मजिल माग चाल जिवां नै ही मिल भाग यताव जिवां नै नहीं, आपा सै सापक हा, सिद्धि साधना करै बीं री । आपां सै साग्या रिया, परण जीत आपा ही जीतग्या अरबें मँ सुन्न बसो ।’

स राजी हूँ अस्त पून सागै नव नव साळ गचण लाग्या ।

×

×

×

एक दिन जेठ री बळती पून में हरी भरी पसरी खीप बोली, “बर्मों धोरामलजी किया ? सम्पत्ति तो बिया हीं भेली है नी अर बघण रो इरादा बिलो ही ।’

‘वन सम्पत्ति तो गई बँट अर इरादो बठ्यो अँडो, पण हूँ आघो हो खी बेळा, त म्हारी भाँल्या छोलदी , दबी जवान सूँ घोरो बोल्यो ।

देख पारी सम्पत्ति रो उपभोग करता कित्ता राजी है म अर तूँ सगळा म बँटर बिराट रो अनुगामी सो कित्तो महान् बगग्यो रे ।’

‘वन सम्पत्ति वा ही काम री है जिकी समष्टि रो सुख चावै ।’

“अर समष्टि वा ही आखी जिकी हर फूल न बिवेक सूँ खिलण म मदद अर आपरी सौरभ थिरकरै ।

‘वन गुणमानूँ पारो मगळमुखी है तूँ जे तसी बेट्याँ रो बिस्तार घरती पर हुव तो निश्च ही घरा सुख री लैरा तेवती अँची उठै म्हारै सा कपूत ता कोरा भार बधाव घरती पर ।’

नही रे इसी काई बात है तूँ ही म्हारो ही भाई है एक ही भावडो रा जाया हा आया । म्हारो फुठरापो पारै सूँ हीं है अर आया दोना सूँ ई घरती माता रो ।

।◆

